ममतामयी रमा जैनको
सादर भेंट

तालिका

अ

अंजुम—आरिफ़ा बेगम अकबराबादी
अख़्तर—नसीब अख़्तर
अख़्तर—अख़्तर बेगम क़ुरैशी
अख़्तर—सैयिदा अख़्तर हैदराबादी
अज़मत—अज़मत अब्दुल क़यूम हैदराबादी
अज़मत—अज़मत इक़बाल
अदा—अदा जाफ़िरी बदायूनी
अनीस—अनीस बानो

आ

आफ़ताब—आफ़ताबजहाँ देहल्वी
आह—मैमून: बेगम

इ

इक़बाल—इक़बाल मारूफ़
इम्तियाज़—इम्तियाज़ बेगम
इशरत—इशरतजहाँ

क

कँवल—कँवल नसीम कंजाही
कनीज़—कनीज़ मैमूना
क़मर—क़मर सुल्तानबेगम देहल्वी
क़मर—क़मर जहाँबेगम
काश—कनीज़ फ़ात्मा
क़ैसर—क़ैसर शमीम

ख़

ख़ालिद:—ख़ालिदा वेगम जवलपुरी ५१
ख़ुर्शीद—ख़ुर्शीदआरा वेगम ५४

ग़

ग़ज़ाल:—ग़ज़ाल: जमाल ५५
ग़ज़ाल:—हुस्न आरा वेगम वरेलवी ५६
गायत्री—गायत्री देवी ५९

ज

ज़फ़र—ज़फ़र वानो ६२
जमाल:—विलक़ीस जमाल: वरेलवी ६३
ज़ह्रा—ज़ह्रा जमाल ६६
ज़ह्रा—ज़ह्रा तवस्सुम खैरावादी ६८
ज़ह्रा—ज़ह्रा हाशमी वदायूनी ६९
ज़ाहिद:—ज़ाहिद: खलीकुल रहमान ७१
ज़ुवेदा—ज़ुवेदा तहसीन ७३
ज़ेव—ताजवर ज़ेव उस्मानिया लुधियानवी ७४
ज़ेव—ज़ेवुन्निसा ज़ेव ८०
ज़ेवा—इफ़्फ़त वानो ज़ेवा काकोरवी ८३
ज़े-वे—ज़े-वे साहिवा ८४

त

तवस्सुम—तवस्सुम पूनावी ८६
तस्नीम—जमीला ख़ातून तस्नीम मलीहावादी ८७

द

दरख़्शाँ—आर० के० दरख़्शाँ विजनौरी ८८

न

नज्म:—शमशाद नज्म: तसद्दुक़ ८९

नज्मः—नज्मः रहमत अल्लाह बी० ए० लाहौरी
नज्मी—ताहिरा नज्मी
नवेद—शमीम नवेद
नसरीं—आबदः ख़ानम नसरीं मथरावी
नसीम—नक्हत नसीम
नाज़—वीनारानी नाज़
नाज़—नाज़ बिलगरामी
नाहीद—नीलोफ़र नाहीद
निक्हत—जहाँ निक्हत गुलशनाबादी
निक्हत—शकीला बेगम निक्हत
निगाह—ज़ुहा निगाह
नुज़हत—नुज़हत नज्मी मुज़फ़्फ़रनगरी
नुद्रत—सुरैया महमूद नुदरत
नुस्रत—नुस्रत क़ुरैशी
नूर—नूरजहाँ बेगम नूर बदायूनी
नैयिर—नवाब ज़किया सुल्ताना नैयिर साग़र निज़ामी
नोशाबः—नोशाबः किदवाई
नोशाबः—नोशाबः खातून क़ुरैशी

प

पर्वी—पर्वी मुरादाबादी
पर्वी—पर्वी राग़व
पर्वी—आइशा पर्वी
पिनहाँ—सिपिह्रआरा राबिया बरेलवी

फ

फ़रहत—सैयिदा फ़रहत

व

वर्क़—सरला वर्क़ १५०

बशीर—बशीरुन्निसा बेगम हैदराबादी १५१

बानो—शकीला बानो भोपाली १५२

बानो—इक़बाल बानो १५३

बिलक़ीस—बिलक़ीस रहमानी बानो १५४

बिलक़ीस—नाहीद बिलक़ीस अकबराबादी १५५

बेखुद—शान्ति 'बेखुद' १५६

बेगम—करामत फ़ातमा बेगम १५७

म

मक़बूल—मक़बूल नसरीन १५९

मख़्फ़ी—सैयद: जहाँ मख़्फ़ी १६१

मीना—मीना क़ाज़ी १६२

मुज़मिर—रफ़िया बानो मुज़मिर १६३

मैमून:—मैमून: आरिफ़ा मुरादाबादी १६६

य

यास्मीन—तस्नीम यास्मीन १६७

र

रख़्शाँ—रख़्शाँ रूही १६८

राना—ज़ुबेदा रअ़ना १७०

राना—साफ़िया सुल्तान रअ़ना १७२

राबिअ़:—राबिअ़: बेगम हैदराबादी १७४

राहत—राहतुन्निसा बेगम हैदराबादी १७५

रूही—रूही देहलवी १७६

श

शफ़क़—शफ़ीक़ बानो शफ़क़ १८०

शफ़ीक़—शफ़ीक़ फ़ातमा शेरी १८१

शबनम—सैय्यद : खुर्शीद शबनम भोपाली १८६

शमा—अज़मत इक़वाल शमा
शम्सी—नवाव वेगम शम्सी
शमीम—सफ़ीय: शमीम मलीहावादी
शमीम—किशोर शमीम कैलाशपुरी
शमीम—सलमा शमीम
शमीम—क़ैसर शमीम
शमीय:—शमीय: शाहिद

स

सलमा—सलमा वी० ए०
सलमा—सलमा मन्सूर
सलमा—सलमा अख़्तर
सहर—तवस्सुम सहर
सहाव—सहाव क़िज़लवाश देहलवी
साहिर:—साहिर: इटावी
सुरूर—वेगम सरूर
सोज़—नसीम: सोज़

ह

हज़ीं—आमिना नफ़ासत हज़ीं
हवीव—सफ़ीय: हवीव
हया—कनीज़ फ़ात्मा हया लखनवी
हूर—गौहर इक़वाल हूर मेरठी

सिंहावलोकन [वहू-वेटियोंकी शाइरी]

'अंजुम'—सुश्री आरिफ़ा बेगम अकबराबादी

सैरे-काश्मीर

हमारी निगाहें किधर जा रही हैं ?
यह क्या देखती हैं ? कि इतरा रही हैं
रहे अपनी नज़रोंका ओजे-रसाई[1]
बहिश्तेबरींकी[2] ख़बर ला रही हैं
यह कश्मीरका गुलसिताँ[3] अल्लह-अल्लह
बहारें फ़रिश्तोंको ललचा रही हैं
यह अतवारका दिन भी यौमे-तरब[4] है
वह गुलशनकी शहज़ादियाँ गा रही हैं
जिधर देखिए सूरतें प्यारी - प्यारी
हसीनाने - जन्नतको शर्मा रही हैं
यह मालूम होता है दोशीजः[5] परियाँ
ख़रामाँ - ख़रामाँ[6] चली आ रही हैं
न देखो हटा लो नज़र उनके रुख़से[7]
हयादार आँखें झुकी जा रही हैं
यह पुरकैफ़[8] मंज़र है क्या रूह-परवर[9]
निगाहें निगाहोंको शर्मा रही हैं

---

१. ऊँची पहुँच, २. जन्नतकी, ३. बाग़, ४. खुशीका दिन, ५. कुवाँरी, ६. मधुर चालसे, ७. मुखसे, ८. आनन्दमय वातावरण, ९. प्राण-संचारक ।

यह गर्दिशमें[१] हैं उनकी मस्तानः आँखें
कि गुलज़ारमें[२] जाम[३] छलका रही हैं
दुल्हनकी तरह बाग़ आरास्ता[४] है
हवाएँ दरे-खुल्दसे[५] आ रही हैं

१. घूमनेमें, २. बाग़में, ३. मदिरापात्र, ४. सजा हुआ, ५. जन्नतसे।

'अख़्तर'—सुश्री नसीब अख़्तर

आ जाओ

ग़मे-फ़िराक़में[1] दिल अश्कबार[2] रहता है
न दिनको चैन न शबको[3] क़रार[4] रहता है
हर-एक लमहा[5] मुझे इन्तज़ार रहता है
अब इन्तज़ारकी घड़ियाँ मेरी बिता जाओ
मेरे रफ़ीक़[6]! मेरे दिल-नवाज़[7] आ जाओ

तसव्वुरातपै[8] दिन-रात छाये रहते हो
ख़याल-ओ-ख़्वाबकी दुनिया बसाये रहते हो
अगर्चे रूहके[9] अन्दर समाये रहते हो
मगर जो आग है दिलमें उसे बुझा जाओ
मेरे रफ़ीक़! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ

निगाहें ढूँढ़ती हैं तुमको लालाज़ारोंमें[10]
तलाश करता है दिल तुमको चाँद तारोंमें
ख़याल रहता है हर वक़्त कोहसारोंमें[11]
भटक रही हूँ निशाँ[12] अपना कुछ बता जाओ
मेरे रफ़ीक़! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ

---

१. विरह-वेदनामें, २. अश्रुपूर्ण, ३. रातको, ४. चैन, ५. क्षण, ६. मित्र, ७. ढाढ़स बँधानेवाले, ८. ध्यानमें, ९. आत्माके, दिलके, १०. उद्यानोंमें, ११. पर्वतोंमें, १२. पता।

तुम्हारी यादको दिलसे लगाऊँगी कबतक
ग़मे-फ़िराक़के सदमे उठाऊँगी कब तक
उमीदो-बीमकी[1] दुनिया बसाऊँगी कबतक
मैं जान हार रही हूँ मुझे जिता जाओ
मेरे रफ़ीक़ ! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ

यह लमहा-लमहा दुश्वारे-ज़िन्दगी प्यारे !
उठा सकूँगी न अब बारे-ज़िन्दगी[2] प्यारे !
ग़शी[3] है और शबे-तारे-ज़िन्दगी[4] प्यारे !
ख़ुदाके वास्ते आकर मुझे जगा जाओ
मेरे रफ़ीक़ ! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ

---

१. आशा-निराशाकी, २. जीवन-बोझ, ३. बेहोशी, ४. जिन्द[illegible]
अन्धकारमय।

'अख़्तर'—सुश्री अख़्तर बेगम क़ुरैशी

भूले फ़साने [नज़्म]

मेरी नाकामियाँ जब मेरे दिलको तोड़ देती हैं
मेरी दिल सोज़[1] उम्मीदें मुझे जब छोड़ देती हैं
मेरी बरबादियाँ जब आस मेरी तोड़ देती हैं
दिले-ग़मगींको[2] कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

बिसाते-आस्माँपर[3] माहे-रोशन[4] जब दमकता है
सितारोंका मुनव्वर अक्स[5] पानीपर चमकता है
तमन्नाओंका शुअ्ला[6] मेरे सीनेमें भड़कता है
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

कभी महशर बपा[7] करती हैं मौजें आबशारोंमें[8]
कभी मेरा गुज़र होता है ऊँचे कोहसारोंमें[9]
कभी जब कूकती कोयल है दिलकश[10] शाख़सारोंमें[11]
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

---

१. सहानुभूति रखनेवाला हृदय, २. दुःखी दिलको, ३. आकाशरूपी फर्शपर, ४. चन्द्रमा, ५. प्रकाशवान प्रतिबिम्ब, ६. आशाओंकी ज्वाला, ७. प्रलय-सी लाती हैं, ८. लहरोंमें, झरनोंमें, ९. पर्वतोंमें, १०. चित्ताकर्षक, ११. वृक्ष-समूहमें ।

जब आधी रातको सारा जहाँ ख़ामोश होता है
फ़ज़ाका[१] ज़र्रा-ज़र्रा[२] नींदसे मदहोश होता है
तेरे दिलकश तसव्वुर[३] जब अदूए-होश[४] होता है
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

सबाके[५] छेड़नेसे फूल जिस दम मुसकराते हैं
तयूरे-ख़ुशनवा[६] जब गुलसिताँमें[७] गीत गाते हैं
ख़यालाते-परेशाँ[८] मुझको अश्के-ख़ूँ[९] रुलाते हैं
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

ख़याले-ऐशे-रफ़्तः[१०] अब तो माज़ी[११] का फ़साना[१२] है
मगर पेशे-नज़र[१३] अब भी वही रंगीं ज़माना है
वही तेरा तसव्वुर[१४] और उल्फ़तका तराना[१५] है
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

गुज़िश्तः राहतोंकी[१६] दास्तानें[१७] मुझसे मत पूछो
मेरी मुबहम ख़लिशकी[१८] काविशोंको[१९] मुझसे मत पूछो
तसव्वुर किसका है 'अख़्तर'! बस इसको मुझसे मत पूछो
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

---

१. मैदानका, २. अणु-अणु, ३. चित्ताकर्षक चिन्तनमें, ४. समझदारीका शत्रु, दीवाना बनानेवाला, ५. पवनके, ६. मधुर स्वरके पक्षी, ७. उद्यानमें, ८. उद्विग्न विचार, ९. ख़ूनके आँसू, १०. भोग-विलासके विचार, ११. भूत-कालीन, १२. कहानी, १३. आँखोंके सामने, १४, ध्यान, १५. संगीत, १६. बीते हुए सुखोंकी, १७. कहानियाँ, स्मृतियाँ, १८. छिपी हुई चुभनकी, १९. कुरेदोंको, चिन्ताओंको ।

किसीसे

यह नामुमकिन जफ़ाओंसे[1] तेरी मायूस[2] हो जाऊँ
यह नामुमकिन कि नाकामीसे मैं मानूस[3] हो जाऊँ
तेरी बे ऐतनाई[4] मुझको बरहम[5] कर नहीं सकती
मेरी आज़ाद फ़ितरत[6] ग़मसे सरख़म[7] हो नहीं सकती

तेरी वाबस्तगीकी ग़ैरसे[8] परवाह नहीं मुझको
तेरी इस बेवफ़ाईका ज़रा शिकवा[9] नहीं मुझको
न मजनूँकी तरह सहरानवर्दीपर[10] हूँ आमाद:
न मैं दश्ते-बयाबाँकी[11] न तनहाईकी दिलदाद:[12]

मेरे नज़दीक तेशा मारकर मरना नहीं बहतर
मैं राहे-इश्क़में फ़रहादकी तरह नहीं अब्तर[13]
जुनूने-इश्क़में[14] फ़रियाद करनेसे भी क्या हासिल ?
ख़ुद अपनी ज़ीस्तको[15] बरबाद करनेसे भी क्या हासिल ?

---

१. अत्याचारोंसे, २. निराश, ३. परिचित, ४. उपेक्षा, ५. उद्विग्न, क्रुद्ध, ६. स्वभाव, ७. नतमस्तक, ८. अन्यसे सम्बन्धित होनेकी, ९. शिकायत, १०. जंगलोंकी ख़ाक छाननेको प्रस्तुत, ११–१२. वनों-रेगिस्तानोंमें भटकने या एकान्त-जीवन-व्यतीत करनेकी सनक नहीं, १३. दुर्दशाग्रस्त, बदहाल, १४. प्रेमोन्मादमें, १५. जीवनको ।

'अख़्तर'—सुश्री सैय्यदा अख़्तर हैदराबादी

ग़ज़ल

किसीकी यादमें आँसू बहा रही हूँ मैं
हदीसे - दर्दे - मुहब्बत[1] सुना रही हूँ मैं
सम्भल ज़मानए-हाज़िर[2] कि तुझसे कुछ पहिले
क़रीब मंज़िले-मक़सूद[3] जा रही हूँ मैं
सुनी है जबसे ख़बर उनकी आमद-आमदकी
हरीमे - दीदए - दिलको[4] सजा रही हूँ मैं
अभी ज़माना नहीं उनके आज़मानेका
अभी तो अपनेको ख़ुद आज़मा रही हूँ मैं
नफ़स-नफ़स[5] है मेरा साज़े-ग़ैब[6] ऐ 'अख़्तर'!
जो सुन रही हूँ जहाँको सुना रही हूँ मैं

ग़ज़ल

यह मैकदा[7] है मगर अब वह लुत्फ़े-आम[8] कहाँ ?
वह रक़्से-जाम[9] वह रिन्दाने-तिश्नाकाम[10] कहाँ ?
गुदाज़े - सीनए - मुतरिब[11] न सोज़े - नग़मए-नै[12]
वह बेक़रारिए - महफ़िलका एहतमाम[13] कहाँ ?

---

१. प्रेम-व्यथाकी कथा, २. वर्तमान काल, ३. उद्देश्यपूर्तिके समीप, ४. हृदय-चक्षु-प्रासादको, ५. रोम-रोम, श्वास-श्वास, ६. परोक्षवाद्य, दैव-वाणी, ७. मदिरालय, ८. सर्व-साधारणको बैठकर पीनेका अधिकार, ९. मदिरापात्रका हाथोंमें थिरकना, १०. मद्यप, ११. गायकके गलेमें न वह दर्द, १२. और न वाद्यमें वह तड़प, १३. प्रबन्ध ।

इधर तही है सुबू[१], उस तरफ़ तही साग़र[२] !
वह बादा-रेज़िए-महफ़िलकी[३] सुबहो-शाम कहाँ ?
मिटे हुए-से हैं कुछ नक़्शे-पा[४] ज़रूर मगर
रहे-तलबमें[५] वह याराने-तेज़गाम[६] कहाँ ?
नवाए-वक़्त[७] बहुत गुलफ़िशाँ[८] सही लेकिन
वह जाँ नवाज़ मुहब्बत अदा, पयाम[९] कहाँ ?
शमीमे-शामे-मुहब्बतको[१०] क्या करूँ 'अख़्तर' !
नसीमे-सुबहे-तमन्नाका वह ख़राम[११] कहाँ ?

ग़ज़ल

जिसमें सरूरे-दर्दे-ग़मे-आशिक़ी[१२] नहीं
वोह ज़िन्दगी, तो मौत है, वोह ज़िन्दगी नहीं
जिसमें बराए-रास्त[१३] हो उनसे मुआमला
वल्लाह ! ऐन होश है, वोह बेख़ुदी[१४] नहीं
इक ख़ूने-अन्दलीबके[१५] दमसे थी सब बहार
फूलोंमें अब वोह रंग नहीं, दिलकशी[१६] नहीं

१. मदिराका घड़ा खाली है, २. मदिराका प्याला रिक्त है, ३. मदिरा-पानसे परिपूर्ण, ४. चरणचिह्न, ५. प्रेम-मार्गमें, ६. शीघ्रगामी, ७. समयका गीत, ८. सुहावना, ९. जीवन-संचारक प्रेम-सन्देश, १०. सन्ध्या कालीन सुगन्धको, ११. आशा रूपी प्रातःकालीन चाल, १२. प्रेम व्यथाओं-का नशा, १३. सीधा सम्बन्ध, १४. बेहोशी, १५. बुलबुलके बलिदानके, १६. आकर्षण ।

अल्लाहरे हिज्रे - यारकी[1] हैरततराज़ियाँ[2]
निकला हुआ है चाँद, मगर रोशनी नहीं
उनकी तरफ़ उठाऊँ मैं अब क्या निगाहे-शौक़
अपनी तजल्लियों[3] ही से फ़ुर्सत अभी नहीं
यूँ दिन गुज़ारती हूँ किसीके फ़िराक़में[4]
ज़िन्दा बराये नाम हूँ और ज़िन्दगी नहीं

हमारी शामो-सहर

ज़बाने-शौक़ पै उनका ही नाम रहता है
उन्हींकी यादसे हर लहज़ा काम रहता है
नज़रको साग़रे - ग़ममें डुबोये रहती हूँ
तसव्वुरातकी[5] दुनियामें खोये रहती हूँ
न होशे-हाल, न एहसासे-हाल रहता है
बस एक सिर्फ़ उन्हींका ख़याल रहता है
हज़ार दिलसे हम उनको भुलाये जाते हैं
न जाने क्यों वह हमें याद आये जाते हैं
अँधेरी रातमें भी मंज़रे-दरख़्शाँ[6] हैं
जिधर निगाह उठाती हूँ वोह नुमायाँ[7] हैं
सबाके दोशपै[8] उनके सलाम आते हैं
सितारे लेके नया इक पयाम[9] आते हैं

१. प्रेयसीके विरहकी, २. आश्चर्यजनक बातें, ३. तेज, आभा, ४. विरहमें, ५. उनके ख़यालकी ६. प्रकाशवान दृश्य, ७. उजागर, ८. हवाके कन्धोंपै, ९. सन्देश ।

गुज़ारिश

चला है राहे-वफ़ामें[1] तो मुसकराता चल !
हवादसातके बरबतपै[2] गीत गाता चल !
कमाले-आगही-ओ-कैफ़े-जुस्तजू[3] लेकर !
हिजाबे-दानिशो-होशो-ख़िरद[4] उठाता चल !
तग़य्युराते-ज़मानेको[5] देके हुक्मे-सबात[6] !
मवालिग़ाते-जहाँका[7] मज़ाक़ उड़ाता चल !
गिरोहे-अहले-तलबके[8] बुझे-बुझे-से हैं दिल !
चिराग़े-मंज़िले-मक़सूदको[9] जलाता चल !
अज़ीयतोंसे[10] उठा लुत्फ़े-ज़िन्दगी ऐ दोस्त !
हर-एक दर्दको दरमाने-ग़म[11] बनाता चल !
शुरूए-जादए-मक़सदके पेचो-ख़मसे[12] न डर !
हर-एक नक़्शे क़दमसे-क़दम मिलाता चल !
दिखाके सोज़े-मुहब्बतकी ताबनाकीको[13] !
जहाने-शौक़में इक आग-सी लगाता चल !
वह क़ूव्वतें[14] जो वदीयत[15] हुई हैं तेरे लिए !
बड़ा मज़ा हो अगर उनको आज़माता चल !

---

१. नेकीके मार्गमें, २. आपत्तियोंके साज़पर, ३. ज्ञान और खोज करनेका उत्साह लेकर, ४. समझ, होश और बुद्धिपर पड़े हुए पर्दे, ५. युगके परिवर्त्तनको, ६. स्थायित्वकी आज्ञा, ७. दुनियाके अन्धविश्वासोंका, ८. कुछ कर गुज़रनेवालोंके, ९. लक्ष्य-मार्गका दीप, १०. कष्टोंसे, ११. दुःखोंका इलाज, १२. प्रारम्भमें मिलनेवाले संकीर्ण और चक्करदार मार्गसे, १३. प्रेमकी आगकी चमकको, १४. साधन, १५. प्रदान ।

मज़ाजे-बेहिसीए-ज़िन्दगीको[1] जल्द बदल !
पयाम अख़्तरे-आतिशनवा[2] सुनाता चल !

अहदे-नौ

कल भी थीं ज़हनीयतें मजरूह ओहामो[3]-गुमाँ
कुश्तए-ईहाम[4] है दुनियाए-इन्साँ आज भी
कल भी था चश्मे-बसीरत पर हिजाबे-इक़्तदार[5]
हुर्रियतकी रूह[6] है मरहूने-ज़िन्दाँ[7] आज भी
कल भी थे जोशे-अनाके[8] वास्ते दारो-रसन
अहले-हक़के[9] वास्ते है, तेग़-बुर्राँ[10] आज भी
कल भी थी सरमायादारी[11] इक बलाए-ज़िन्दगी
ख़ूगरे-आलाम[12] हैं मज़दूरो-दहक़ाँ आज भी
....
सीनए-गेतीसे[13] कल भी उठ रहा था इक धुआँ
ज़र्राहाए-दहर है शोला बदामाँ[14] आज भी
भूल बैठा आजका इन्सान अगला तर्ज़ो-तौर
अल्लाह-अल्लाह ख़ूब आया है, यह अहदे नौका दौर[15]

---

१. अकर्मण्य स्वभाव को, २. आग्नेय सन्देश, ३. अन्धविश्वासों और शकोंसे घायल बुद्धि, ४. अन्धविश्वासों-द्वारा बर्बाद, ५. उदार दृष्टिपर इख़्तियारके पर्दे पड़े हुए, ६. स्वतन्त्रताकी आत्मा, ७. क़ैदखानेमें गिरवी, ८. दीन-दुखियोंको कष्टोंको गुहार करनेपर सज़ा मिलती थी यानी वे राजद्रोही समझे जाते थे, ९. यथार्थ बात कहनेवालोंके लिए, अपना अधिकार माँगनेवालोंके लिए, १०. नंगी तलवार, ११. पूँजीवाद, १२. दुःखोंके अभ्यस्त, १३. संसारके सीनेसे, १४. दुनियाका ज़र्रा-ज़र्रा आज भी सुलग रहा है, १५. नया युग ।

'अज़मत'—सुश्री अज़मत अब्दुलक़य्यूम हैदराबादी

ग़ज़ल

फ़साना ग़मका[1] रुसवाए-जहाँ[2] होता तो क्या होता ?
मुहब्बतमें हर-इक आँसू ज़बाँ[3] होता तो क्या होता ?
अरे वह मेरे होंटोंका तबस्सुम[4] देखने वाले !
तुझे अन्दाज़ए-ज़ब्ते-फ़ुग़ाँ[5] होता तो क्या होता ?
ज़हे-क़िस्मत कि अब भी फ़र्क़े-हुस्नो-इश्क़ बाक़ी है
यहाँ जो हाल है दिलका वहाँ होता तो क्या होता ?
जुनूने-बेख़ुदीमें[6] जिस जगह हम सर झुका देते
वहीं क़िस्मतसे तेरा आस्ताँ[7] होता तो क्या होता ?
कमाले-बन्दगीए-इश्क़की[8] तौहीन-सी[9] होती
जबींपर[10] मेरी सज्दोंका[11] निशाँ होता तो क्या होता ?
दुआएँ दे रही हैं बाग़की वीरानियाँ जिसको
मुक़द्दरसे वह गुलचीं[12] बाग़बाँ होता तो क्या होता ?
ख़मोशी बन गई है दास्ताँ दर दास्ताँ जिसकी
वह 'अज़मत'-सा अगर जादू बयाँ होता तो क्या होता ?

---

१. दुःख-दर्दका बयान, २. संसारमें बदनाम, ३. मुखरित, ४. मुसकान, ५. आहके दाबनेका अनुमान, ६. आत्म-विस्मृतिकी स्थितिमें, ७. द्वार, स्थान, ८. प्रेमोपासनाकी पवित्रताकी, ९. उपेक्षा-सी, अवमानना-सी, १०. मस्तकपर, ११. मस्तक नवानेके चिह्न, १२. फूल तोड़नेवाला।

'अज़मत'—सुश्री अज़मत इक़बाल

ग़ज़ल

चमन[1] अपना न गुल[2] अपना न कोई बाग़बाँ अपना
तबीअत बुझ गई, उजड़ा ख़ुशीका गुलसिताँ[3] अपना
मेरी सुबहे-मसर्रत[4] बन गई शामे-अलम[5] कैसी
है महवे-ख़ुश-फ़शानी[6] यह शबाबे-नौहाख़्वाँ[7] अपना
मुक़द्दरकी[8] लकीरें मिट नहीं सकतीं अगर या रब !
निकल जाये तो फिर सीने ही से क़ल्बे-तपाँ[9] अपना
हिकायाते-जुनूँ[10] फिर लब पे आती हैं मगर 'अज़मत' !
फ़साना[11] है लबोंपर और नहीं अफ़सानाख़्वाँ[12] अपना

१. बाग़, २. फूल, ३. उद्यान, ४. खुशी रूपी प्रातःकाल, ५. दुःख-रूपी सन्ध्या, ६. विनोद-प्रियतामें लीन, ७. शोक प्रकट करनेवाला यौवन, ८. भाग्य-रेखाएँ, ९. तड़पता दिल, १०. प्रेमोन्मादकी बातें, ११. कहानी, १२. कहानी सुननेवाला ।

'अदा'—सुश्री अदा जाफ़िरी बदायूनी

यह मेरे दिलको ख़याल आता है

देख तू सुरमई आकाश पै तारोंका निखार
रातकी देवीके माथे पै चुनी है अफ़शाँ[1]
या कुछ अश्कोंके चराग़
हैं किसी राहगुज़रमें[2] लर्ज़ां[3]
आह यह सुरमई आकाश, यह तारोंके शरार[4]
यह मेरे दिलको ख़याल आता है
दम अँधेरेमें घुटा जाता है,
क्यों न ईवाने-तसव्वुरमें[5] जला लूँ शमएँ
बरबतो[6]-चंगो-रबाब[7]
मुन्तज़िर हैं मेरे मिज़रावकी एक जुम्बिशके
ज़िन्दगी क्यों फ़क़त एक आहे-मुसलसल[8] ही रहे
क्यों न बेदार[9] करूँ वो नग़मे[10]
वक़्त भी सुनके जिन्हें थम जाये
रहगुज़ारोंमें[11] ये बहता हुआ ख़ूँ
मौतके साये तले सिसकियाँ भरती है हयात[12]

---

१. स्त्रियोंके बालों अथवा कपोलोंपर छिड़कनेका सुनहरा या रुपहरा चूर्ण, २. मार्गमें, ३. कम्पायमान, ४. अंगारे, ५. ध्यानरूपी प्रासादमें, ६. एक सितारकी तरहका बाजा, ७. बड़ी खंजरी और वाइलिन, ८. स्थायी, ९. जागृत, १०. गीत, ११. मार्गोंमें, १२. ज़िन्दगी ।

इस उमड़ते हुए तूफ़ाँसे किनारा कर लूँ
ये सिसकती हुई लाशें, ये हयाते-मुर्दा[१]
ये जबीनें[२] जिन्हें सज्दोंसे[३] नहीं है फ़ुरसत
ये उमंगे जिन्हें फ़ाक़ोंने कुचल डाला है
ये बिलकती हुई रूहें,[४] ये तड़पते हुए दिल
इन ढलकते हुए अश्कोंको चुराकर मैं भी
अपने ईवाने-तसव्वुरमें चराग़ाँ कर लूँ
देखकर रातकी देवीका सिंगार
वहम आता है मगर
नग़मः-ओ-नैका[५] सहारा लेकर
ज़िन्दगी चल भी सकेगी कि नहीं
इन सितारोंकी दमकती हुई क़न्दीलोंसे
रातके दिलकी सियाही भी मिटेगी कि नहीं ?

तामीरे-नौ

शरमिन्दगीए - कोशिशे - नाकाम[६] कहाँ तक ?
महरूमिए - तक़दीरका[७] इल्ज़ाम कहाँ तक ?
दुनियाको ज़रूरत है तेरे इज़्मे - जवाँकी[८]
सर गुश्ता[९] रहेगा सिफ़ते-जाम[१०] कहाँ तक ?

---

१. मृतकों जैसा जीवन, २. मस्तक, ३. नमाज़ोंमें सर झुकानेसे, ४. आत्माएँ, ५. संगीत और वाद्यका, ६. प्रयत्नोंकी असफलताकी शर्म, ७. भाग्य-हीनताका दोष, ८. युवकोचित संकल्पकी, ९. परीशान, चक्करमें, १०. मदिरा-पात्रकी तरह ।

कब तक तेरे होंटों पै हदीसे - रुख़े - तावाँ[1]
सरमें तेरे सौदाए - लबे - बाम[2] कहाँ तक ?

गेसूए - सियह तावो - रुख़े - साइक़ा परवर[3]
यह मर्ग-ओ-हयाते[4]-सुबहो-शाम कहाँ तक ?

लैलाए-हक़ीकतसे[5] भी हो जा कभी दो-चार[6]
ख़्वाबोंकी[7] हसीं छाँवमें आराम कहाँ तक ?

रुख़ गर्दिशे-दौराँका[8] पलट सकता है तू ख़ुद
नादाँ[9] गिलए-गर्दिशे-ऐय्याम[10] कहाँ तक ?

कब तक तेरे सीनेमें ख़लिश तीरे-मज़हकी[11]
यादे-लबे-मैगूँ[12] सहरे[13]-ओ-शाम कहाँ तक ?

ऐ ज़र्रए-नाचीज़[14] ! ख़िजलें[15] महको[16] कर दे
उफ़तादः[17]-ओ-तफ़्सीदः[18]-ओ-गुमनाम कहाँ तक ?

जुज़[19]-वहम नहीं, क़ैदे - रहो - रस्मे - ज़माना
ऐ ताइरे-आज़ादः[20] ! तहे-दाम[21] कहाँ तक ?

---

१. चमकीले कपोलोंकी तारीफ़, २. प्रेयसीकी अट्टालिकाका ध्यान, ३. काली ज़ुल्फ़ों और चमकते कपोलोंकी विद्युत्-छटाके प्रेमी, ४. मृत्यु और ज़िन्दगीकी, ५. वास्तविकता रूपी लैलीसे, ६. परिचित, ७. स्वप्नोंकी, ८. संसारकी मुसीबतोंका मुँह, ९. भोलेभाले, १०. संसारके झगड़ोंकी शिकायत, ११. पलकोंके बालोंरूपी तीरोंकी चुभन, १२. ओठोंसे लगाई हुई शरावकी याद, १३. सुबह, १४. तुच्छ अणु, १५. मांद, शर्मिन्दा, १६. सूर्यको, १७. दलित, दुखित, १८. बहुत गरम, १९. ज़मानेके रीति-रिवाज़ वहमके सिवा कुछ नहीं, २०. स्वतन्त्रताप्रिय पक्षी, २१. जालके अन्दर ।

मुहब्बत

मुहब्बत एक-राज़[१] है
वह राज़—रूहमें[२] रहे जो हुस्न[३] बनके जल्वः‌गर[४]
निगाह जिसके दीदकी[५] न ताब लाये उम्रभर
शऊरसे बुलन्दतर[६]
मुहब्बत एक राज़ है

मुहब्बत एक नाज़[७] है
वह नाज़—जो हयातको[८] निशाते-जाविदाँ करे[९]
ज़मींके रहनेवालोंको जो अर्शे-आशियाँ करे[१०]
न फ़र्के ईं-ओ-आँ करे
मुहब्बत एक नाज़ है

मुहब्बत इक ख़्वाब[११] है
वह ख़्वाब—जिसकी सरख़ुशीपै[१२] जन्नतें निसार[१३] हों
फ़साना साज़े-ज़िन्दगीकी इशरतें[१४] निसार हों
हक़ीक़तें[१५] निसार हों
मुहब्बत एक ख़्वाब है

---

१. भेद, २. आत्मामें, प्राणोंमें, ३. सौन्दर्य, ४. प्रकाशवान्, ५. देखनेकी, ६. उच्चतर, ७. अभिमान योग्य, ८. ज़िन्दगीको, ९. अमरत्व प्रदान करे, १०. आकाशमें प्रतिष्ठित करे, ११. स्वप्न, १२. मादकतापर, १३. न्योछावर, १४. खुशियाँ, १५. वास्तविकता।

मुहब्बत इक गुनाह है

लुटे न कारवाने-बू[1], रहे जो ग़ुंचेमें निहाँ[2]
सदफ़[3]से बाहर आके फिर गुहर[4]की आबरू कहाँ ?
हुई जो महरमे-ज़बाँ[5]
मुहब्बत इक गुनाह है

मुहब्बत इक निगार[6] है

तमाम सिद्क़ो-सादगी[7], तमाम हुस्नो-काफ़िरी
तमाम शोरिशो-ख़लिश[8] मगर ब-तर्ज़े-दिलबरी[9]
शिकस्त[10] जिसकी बरतरी[11]
मुहब्बत इक निगार है

नुक़रई धुँदलके[12]

ढलके-ढलके आँसू ढलके
छलके-छलके साग़र छलके
दिलके तक़ाज़े उनके इशारे
बोझल-बोझल हल्के-हल्के
देखो-देखो दामन उलझा
ठहरो-ठहरो साग़र छलके

---

१. सुगन्धरूपी यात्री दल, २. कलियोंमें छिपा हुआ, ३. सीपसे, ४. मोतीकी, ५. हृदयकी बात वाणीसे प्रस्फुटित हुई, ६. चित्र, प्रेयसी, ७. सचाई-सादगी, ८. चुभन, ९. मित्रतापूर्ण व्यवहारसे, १०. हार, ११. श्रेष्ठ, १२. चाँदी जैसे उज्ज्वल अँधियारे ।

उनका तग़ाफ़ुल[1], उनकी तवज्जः[2]
इक दिल, उसपर लाख तहलके
उनकी तमन्ना, उनकी मुहब्बत
देखो सँभलके, देखो सँभलके
ग़मने उठाये सैकड़ों तूफ़ाँ
दिलने बसाये लाख महलके
पलमें हँसाओ, पलमें रुलाओ
पलमें उजाले पलमें धुँदलके
हमने न समझा तुमने न जाना
दिलने मचाये लाख तहलके
लाख मनाया लाख भुलाया
नैन कटोरे भर-भर छलके
कितने उलझे कितने सीधे
रस्ते उनके रंग महलके
कड़ियाँ झेलीं पापड़ बेले
झलके अब तो मुखड़ा झलके

दो नैन कमल

दो नैन कमल
घूँघटमें घनेरी रात लिये
आँचलमें भरी बरसात लिये

---

१. उपेक्षाभाव, २. ध्यान आकर्षित ।

कुछ पाये हुए, कुछ खोये भी
कुछ जागे भी, कुछ सोये भी,
चंचल ऊषाके बान लिये
गम्भीर घटाका मान लिये
सावनके सजल संगीत भरे
कुछ हार भरे कुछ जीत भरे
कुछ बीते दिनोंकी करवट-सी
कुछ आते दिनोंकी आहट-सी
किन गलियों दीप जलाये सखी !
यह भँवरे कित मँडलाये सखी !
सपनोंसे बोझल-बोझल
दो-नैन कमल

कुछ घबराये कुछ शर्माये
कुछ शर्मा-शर्मा इतराये
सखि ! भेदी भेद न पा जाये
कुछ उलझी-सुलझी आशाएँ
कुछ बूझी-बूझी भाषाएँ
कुछ बिखरे-बिखरे राग लिये
कुछ मीठी-मीठी आग लिये
अनुराग लिये वैराग लिये
मतवाले मनको रोग दिया
सखि ! किस बिरहनने जोग लिया ?
नैनोंसे ओझल-ओझल
दो नैन कमल

ग़ज़ल

रह गई शर्मे-ना-शकेबाई[१]
भूलने वाले तेरी याद आई
अल्लाह-अल्लाह नाज़-फ़रमाई
आँख झपकी थी ज़ुल्फ़ लहराई
इस तरफ़ चारासाज़िए-पैहम[२]
उस तरफ़ नाज़े-आबलापाई[३]
वोह भी आज़र्दः ए-निगाह रहे[४]
दिल ही तनहा[५] न था तमाशाई[६]
ज़िन्दगी थी कि काकुले-बरहम[७]
आप सुलझाई आप उलझाई
मंज़िलें बढ़के ख़ुद क़दम लेतीं
मैं ही आग़ाज़े-रम[८] न कर पाई
मैंने एक गीत गुनगुनाया था
बढ़ गया और रंजे-तनहाई[९]
भूलने वाले भूलकर ख़ुश थे
याद आई तो बार-बार आई

---

१. बेसब्री, बेचैनीकी लाज, २. लगातार चिकित्साका प्रयास, ३. पाँवके छालोंपर अभिमान, ४. आँखों-आँखोंमें अप्रसन्न, ५. अकेला, ६. तमाशा देखनेवाला, ७. बिखरी हुई ज़ुल्फ़ें, ८. दौड़नेकी शुरूआत, ९. जुदाईका रंज।

इल्तजा[1] इतनी बेअसर तो न थी
हाये पिन्दारे-ना पज़ीराई[2]
बारहा[3] हमने पी लिये आँसू
बारहा आपको हँसी आई
दिलका अन्दाजे-शर्मसार 'अदा'
निगाहे-नाज़ भी तो पछताई

फ़रेबकारी तख़य्युलपर[4] जो इतराये
अब ऐसे सरकशो-नादाँको[5] कौन समझाये ?
हज़ार ग़ुंचोंने[6] चाहा अलग-थलग रहना
जो कोई शोख़ किरन आप ही उलझ जाये
गिरह कुशाइए-शबनमकी[7] दाद क्यों दें, गुल
हँसीके साथ ही आँखोंमें अश्क भर आये
निगाहे-क़हकी[8] गर्मीकी ताब क्या लाते ?
निगाहे-महकी[9] शोख़ीसे भी जो कुम्हलाये
तेरी निगाहकी हैरानियोंके अफ़साने
मेरी निगाहकी नादानियोंने समझाये
तुम्हें तो हुस्नकी ज़ोलीदगीसे[10] शिकवा था
'अदा' यह किसने निगाहोंके राज़[11] सुलझाये !

---

१. प्रार्थना, २. अस्वीकृतिका अभिमान, ३. बार-बार, ४. छल-प्रपंचके विचारोंपर, ५. उद्दण्ड और मूर्खको, ६. कलियोंने, ७. शबनमकी समस्या हल करनेकी तारीफ़ क्या करें, ८. दैवी कोपकी, ९. सूर्यकी रोशनीसे, १०. पेचीदगियोंसे, उलझावसे, ११. भेद ।

ग़ज़ल

तूफ़ाँ उठा-उठा दिये हैं
जब इश्क़ने हौसले किये हैं
किस-किसकी नज़र बचा-बचाकर
आँसू ग़मे-ज़ीस्तने[१] पिये हैं
तारीक[२] थीं ज़िन्दगीकी राहें
यादोंके दिये जला लिये हैं
ऐ हाले-तबाह[३]! ओ-क़ल्बे महज़ूँ[४]!
कुछ हो न सका तो हँस दिये हैं
मत पूछो निगहे-फ़ित्नए-सामाँ[५]
किस आस पै आज तक जिये हैं
तकमीले-रसूमे-ग़म[६] हुई है
जब चाक जुनूँने सी लिये हैं
ए हुस्ने-सलूक-ओ-लुत्फ़े-एहसाँ !
किस नाज़से उसने ग़म दिये हैं
दिल जान रहा है, हाल अपना
कहनेको बहुत लिये दिये हैं
हाँ बज़्मे-सुख़नके हमसफ़ीरो[७]
कुछ सोचके होंट सी लिये हैं

१. ज़िन्दगीके दु:खोंने, २. अन्धकारपूर्ण ३. ख़राब-ख़स्ताहाल, ४. उदास दिल, ५. षड्यन्त्रोंकी दृष्टि, साजिशोंकी आँखें, ६. दु:ख उठानेके रिवाजकी पूर्त्ति, ७. मुशाइरेके साथियो।

ग़ज़ल

नाज़ उठे कब दीदएतरके[1]
हँस-हँसकर खाये हैं चरके
किसके सर इल्ज़ाम धरोगे
बेपरवा अन्दाज़ - नज़रके
दिन भी रास आयें कि न आयें
रातें तो काटीं मर - मरके
आँख उठी थी बेगाना-सी[2]
खाये हैं दिलने ये भी चरके
रातने तुमको लूटा होगा
हमने धोके खाये सहरके[3]
किसको ख़बर थी हँसते-हँसते
राज़[4] खुलेंगे दीद-ए-तरके
थक गई आँखें मंज़िल तकते
पाँव हुए हैं मन-मन भरके
टूटी माला कौन समेटे
बिखरे सपने जीवन भरके
मोती बिखरे सपने टूटे
क्या-क्या हैं एहसान सहरके
आज दिवाने खुल खेलेंगे
उमरें बीतीं आहें भरके

---

१. अश्रुपूर्ण नेत्रोंके, २. अनजान-सी, ३. प्रातःकालके, ४. भेद ।

'अनीस'—सुश्री अनीसबानो

ग़ज़ल

आपकी नज़रोंके फिरते ही यह सामाँ[1] हो गया
मुनक़लब[2] दुनिया हुई आलम परेशाँ[3] हो गया
अल्लह-अल्लह वह नसीमे-सुबहकी[4] अठखेलियाँ
ग़ुञ्चए - दिल[5] खिलते ही महवे - गुलिस्ताँ हो गया
अपनी वहशतकी तरक़्क़ी हदसे गुज़री ऐ जुनूँ !
हाथको जुम्बिश हुई और चाक दामाँ[6] हो गया
आपके कहनेसे कहती हूँ फ़साना हिज्रका[7]
फिर न कहिएगा कि मेरा दिल परेशाँ हो गया
बदनसीबीकी हदें क्या पूछती हो ऐ 'अनीस' !
जिस चमनमें दो घड़ी बैठी बयाबाँ हो गया

---

१. हाल, २. विरोधी, ३. संसार परेशान, ४. प्रातःकालीन पवनकी, ५. हृदय-कमल, ६. गिरेवान फट गया, ७. विरह-कथा ।

'आफ़ताब'—सुश्री आफ़ताबजहाँ देहल्वी

ग़ज़ल

ख़ुशीका ज़िक्र क्या, ग़मका गिला[1] क्या
न हो मरना तो जीनेका मज़ा क्या
नहीं मिलता मुहब्बतका निशाँ[2] भी
यह बदली है ज़मानेकी हवा क्या
गुनाहे - इश्क़की[3] मैं मुर्तकिब[4] हूँ
ज़रा देखें वे देते हैं सज़ा क्या
तसव्वुरमें[5] वही बातें हैं उनसे
जुदा होकर वे होते हैं जुदा क्या
करम[6] करते नहीं, चलिए न कीजे
सितमकी लज़्ज़तोंका पूछना क्या
डरे मेरी बला सैलाबे - ग़मसे[7]
ख़ुदा जब आश्ना[8] है, नाख़ुदा[9] क्या
नहीं कुछ ऐतबारे - ज़िन्दगानी[10]
मगर दिलमें तमन्नाएँ[11] हैं क्या-क्या
मसर्रत[12] है न उल्फ़त है न राहत[13]
इलाही! तेरी दुनियाको हुआ क्या
जहाँ हो 'आफ़ताबे' - आलमआरा
वहाँकी रौशनीका पूछना क्या

---

१. शिकायत, २. चिह्न, ३. प्रेम-अपराध करनेकी, ४. क़ुसूरवार, ५. ध्यानमें, ६. कृपा, ७. दुःखोंकी बाढ़ोंसे, ८. दयालु, ९. मल्लाह, १०. जीवनका विश्वास, ११. अभिलाषाएँ, १२. ख़ुशी, १३. चैन।

'आह'—सुश्री मैमूनः बेगम

ग़ज़ल

हर घड़ी तुमको याद करती हूँ
हर घड़ी आहे-सर्द भरती हूँ

गाह[1] जीती हूँ, गाह मरती हूँ
शुक्रे - परविर्दगार[2] करती हूँ

दिन तो जों-तों गुज़र ही जाता है
शबको[3] तारे शुमार करती हूँ

मैं परेशानियों में भी हरदम
दम तेरी दोस्ती का भरती हूँ

दिलमें जो है ज़बाँ पै क्या लाऊँ ?
बात करते हुए भी डरती हूँ

फूल खिलते हैं बाग़े-हसरतके[4]
जब कभी आहे-सर्द भरती हूँ

गाह तारे तो गाह तारे-नफ़स[5]
रात भर मैं शुमार करती हूँ

---

१. कभी, २. ईश्वरका धन्यवाद, ३. रातको, ४. अभिलाषा रूपी उद्यानके, ५. श्वास ।

ज़िन्दगी मौतसे भी बदतर है
सोके जीती हूँ, उठके मरती हूँ

इम्तहाँ कैसा और कहाँका सबक़
मैं फ़क़त तुमको याद करती हूँ

'आह' के साथ है तुम्हारी याद
यादके साथ आह करती हूँ

'इक़बाल'—सुश्री इक़बाल मारूफ़

कौन द्वारे आया ?

यह कौन द्वारे आया, यह कौन द्वारे आया ?
नैन भर आये बिछुड़े सजनको देखे मन भर आया
सुन्दर मुखड़ा जैसे दीपक मन-मन्दिर चमकाया
मन-मन्दिरके दिये जले और मन मोरा सुख पाया
डूबती नैया लगी किनारे आज खिवैया आया
फूल कँवल नैना मुसकाये जौबन जग पै छाया
कली-कली मुसकावत है और पलटी जगकी काया
बादल लहराये अम्बरपर बिजलीका मन बल खाया
दुखने दम तोड़ा, हिचकी ली, बिरहा मन कलपाया
सुख आनन्द पियाके दर्शन रंग ख़ुशीका छाया
आज गगन पै चाँद पूनमका प्रेम-सन्देसा लाया
दो हिरदे मिलकर धड़कत हैं, और जीवन मुसकाया
प्रेमने ली अँगड़ाई मनमें प्रीतने गीत सुनाया
यह कौन द्वारे आया, यह कौन द्वारे आया ?

विनती

आ भी जा मोरी नगरीके राजा, बनके अम्बर, नगरिया पै छा जा
मोरे होंटोंको हँसना सिखा जा, बनके आशा तू मनमें समा जा
मोरी सूनी नगरिया बसा जा

मोरे जीवनमें छाया अँधेरा, यह बता दे कि क्या तू है मेरा
आके इक बार तू मुसकरादे, मोरे जीवनके दीपक जला जा
मोरे संसारको जगमगा जा

आके बस जा नगरियामें मोरी, मोंसे प्रीतम न कर जोरा जोरी
काहे की थी, मोरे मनकी चोरी, प्रेमको आके फिरसे जगा जा
मनके मन्दिरको तू जगमगा जा

तोरे दर्शनको अँखियाँ तरसतीं, मोरे प्रीतम बिना सूनी बस्ती
आ, कि छा जाये दुनिया पै मस्ती, मोरी आँखोंको मदिरा पिला जा
मोरे प्रानोंसे प्यारे तू आ जा

राह तकती हैं अँखियाँ तुम्हारी, मोरी अँखियाँ वह बिरहाकी मारी
मोरी अँखियोंसे आँसू हैं जारी, मोरी अँखियोंको हँसना सिखा जा
मोरे नैनोंमें तू मुसकरा जा

तोरी डगरीमें अँखियाँ बिछा दूँ, बनके दीपक मैं जीवन जला दूँ
मनको मैं भेंट तोरे चढ़ा दूँ, एक झलकी सजनवाँ दिखा जा
मोरे नैनोंको अमृत पिला जा
आ भी जा मोहे मुखड़ा दिखा जा

परदेशी बालम

बरखा कैसे मनको रिझाये
जीवन उन बिन क्यों कल पाये
नयना नीर बहाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये

चाँद गगनके मुख न दिखा तू
काली बदरीमें छुप जा तू

मन मोरा भर आये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
जाने कैसे बीतें रतियाँ
याद आवेंगी उनकी बतियाँ
क्यों बादल घिर आये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
पवन चले कलियाँ मुसकायें
भौरें झूमें पंछी गायें
कोयल कूक सुनाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
प्रीतकी निर्मल रीति निभाना
बिरहिनको साजन न भुलाना
जीवन रूठ न जाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
तड़पत हूँ बिन नीर मछलिया
जीवन है या कोई पहलिया
याद तोरी तड़पाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
मोर बलम जब लौट आवेंगे
नैननमें जब मुसकावेंगे
फिर जीवन कल पाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये

'इम्तियाज़'—सुश्री इम्तियाज़ बेगम

आज रातको

सजनको अर्पन करनेको प्रीतके गजरे लायेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे
मैं तो आज न शर्माऊँगी
देखकर उनको मुसकाऊँगी

फूल हँसीके चुनते-चुनते ख़ुद ही वह थक जायेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे
रूपकी मै छलकाऊँगी
आज उन्हें बहकाऊँगी

मस्त-ओ-बेख़ुद उनको मेरे मादक नैन बनायेंगे
आज रातको सजना मेरे-सपनोंमें आ जायेंगे
फिर नाचूँगी, इठलाऊँगी
आज मैं रानी बन जाऊँगी

मेरे मनके राजा हैं वे, राजा बनकर आयेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे
दो हिरदे आपसमें मिलेंगे
आशाओंके फूल खिलेंगे

जीवनकी सुन्दर बगियाको ख़ुशबूसे मँहकायेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे

देखो सखियो यूँ न सताओ
अब तो सो जाने दो मुझको

मैं न मिली उनसे तो फिर वह मुझसे रूठ न जायेंगे ?
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे

७

'इशरत'—सुश्री इशरतजहाँ

ग़ज़ल

फिर किसीने नज़र चुराई है
जज़्बए-दिल[1] तेरी दुहाई है

जिस तरह बाग़में बहार आये
दिलमें यूँ तेरी याद आई है

लुत्फ़े-सैय्याद[2] जिसमें शामिल हो
वह असीरी[3] नहीं रिहाई है

इश्क़ जब तक न साज़गार हुआ
ज़िन्दगी किसको रास आई है

न तसव्वुर कोई, न कोई ख़याल
दिलमें तेरी ही धुन समाई है

ऐ सबा[4] दे ख़बर असीरोंको[5]
फिर चमनमें बहार आई है

बुलबुलें चुप हैं, गुल ख़मोश-ख़मोश
इक उदासी चमन पै छाई है

जब मिली है तेरी नज़रसे नज़र
ज़िन्दगी जैसे मुसकराई है

जामे-लबरेज़[6] देखकर 'इशरत'
चश्मे-मख़मूर[7] याद आई है

१. हृदयके भाव, २. अहेरीका आनन्द, ३. बन्दी जीवन, ४. वायु, ५. बन्दियोंको, ६. भरे प्याले, ७. नशीली आँखें।

'कँवल'—सुश्री कँवल नसीम कंजाही

ग़ज़ल

गाहे-गाहे[1] यूँ भी हुआ है
फूल खिले दिल चीख़ उठा है
कितनी यादें जाग उठी हैं
जब भी कोई गीत सुना है

कैसी ग़ज़ल और शेर कहाँके
शायद कोई ज़ख़्म रिसा है
कितनी हसीं है आज यह दुनिया
शायद तुमने याद किया है

फूल-से कैसे खिल गये दिलमें
आपने कुछ इरशाद[2] किया है
कलसे 'कँवल' का रोते-रोते
देखो तो क्या हाल हुआ है

---

१. कभी-कभी, २. फ़र्माया।

'कनीज़'—सुश्री कनीज़ मैमूना

नज़्म

जा रही है इक हसीना मेंड़पर
गाँवसे कुछ फ़ासलेपर नंगे सर
भूककी शिद्दतसे[1] है चेहरा निढाल
फ़र्ते-ग़मसे[2] आरज़ूएँ पायमाल[3]

चश्मसे[4] लबरेज़[5] पैमाने अयाँ
आँसुओंसे ग़मके पैमाने अयाँ
हाय यह उठती जवानीका जमाल[6]
यह हसीना और रोटीका सवाल

इसको खाना पेटभर मिलता नहीं
कोई ग़मकी दास्ताँ सुनता नहीं
गर्दे-रहसे[7] हैं अटे मासूम[8] बाल
ख़ुश्क होकर रह गये रंगीन बाल

ज़र्द[9] मिट्टीकी है आरिज़[10] पर नक़ाब
जिस तरह बादलकी तहमें माहताब[11]
हसरतो-अरमान[12] मुँह फेरे हुए
हादसाते-ज़िन्दगी[13] घेरे हुए

---

१. अधिकतासे, २. दुःखोंके बोझसे, ३. इच्छाएँ मिटी हुईं, ४. आँखसे, ५. भरे हुए, ६. रूप, ७. मार्गकी धूलमें, ८. कोमल, ९. पीली, १०. मुख-पर, ११. चन्द्रमा, १२. अभिलाषाएँ, १३. जीवनकी दुर्घटनाएँ ।

ओढ़नेको इक दुपट्टः भी नहीं
आह गर्दूं[1] तू किसीका भी नहीं
ज़िन्दगी गरदाब[2] में आई हुई
आबरूकी नाव चकराई हुई

आह हिन्दोस्तान ! तेरी लड़कियाँ
इस तरहसे ठोकरें खायें कहाँ
आह ! तेरी अब यह हालत हो गई
तेरी क़िस्मत मुँह छिपाकर सो गई

दिल भर आता है तेरी बरसातसे
दर्द उठता है तेरे नग़मातसे[3]
आह ! हिन्दोस्तान ऐसा इन्क़िलाब
सरनगूँ[4] है तेरे दामनमें शबाब[5]

है ज़मानेमें सकूँ[6] शायद महाल[7]
अब मैं समझी ज़िन्दगानीका मआल[8]

१. आकाश, २. भँवरमें, ३. संगीतसे, ४. नत-मस्तक, ५. यौवन, ६. चैन, ७. मुश्किल, ८. परिणाम।

'क़मर'—सुश्री क़मर सुल्तानबेगम देहल्वी

गीत

निसदिन दीप जलाये पगली पाये घोर अँधेरा
कौन कहे अब उसे हटीली ! अन्त यही है तेरा
रैनकी गोदी ख़ाली करके चाँद-सितारे भागे
अँधियारे हैं पीछे-पीछे, ज्योती आगे-आगे
होते-होते नैननवासे ओझल हुआ सवेरा
छाया घोर अँधेरा
अन्त यही है तेरा

दूर-दूर तक एक उदासी, सड़ी-बुसी इक छाया
धरतीसे आकाश तक उड़कर आशाने क्या पाया
चारों खूँट चली अँधियारी चिन्ताओंने घेरा
छाया घोर अँधेरा
अन्त यही है तेरा

कौन चुने अब टूटे तारे ! जोत कहाँसे आये
कौन गगनपर सेज बिछाये ! फूल तो हैं मुरझाये
कौन है जो इस नगरीमें अब आकर करे बसेरा ?
निसदिन दीप जलाये पगली पाये घोर अँधेरा
कौन कहे अब उसे हटीली ! अन्त यही है तेरा

'क़मर'—सुश्री क़मर जहाँ बेगम

तहज़ीबे-जदीदका नौहा[1]

नये फ़ैशनके दिलदादः[2] ग़ज़ब यह कैसा ढाते हैं
सरे बाज़ार वे नामूसको[3] अपने फिराते हैं
वे निसवानी शराफ़त[4] और इज़्ज़तको मिटाते हैं
कि अपने दोस्तोंके साथमें उनको नचाते हैं

समझते हैं यह जाहिल[5] अपने माँ-बाप और दादाको
ख़ुदाकी शान है ग़ुन्चे[6] गुलों पै मुसकराते हैं
हया ईमानका जुज़[7] है, यही ज़ेवर है औरतका
जो आक़िल हैं कहीं वे अपनी दौलतको गँवाते हैं

'क़मर' हमने अदा अपना किया इक फ़र्ज़ तब्लीग़ी
ख़ुदा रक्खे उन्हें जो हमको दीवाना बताते हैं

---

१. वर्त्तमान सभ्यतापर शोक पूर्ण कविता, २. नवीन सभ्यताके पुजारी, ३. पत्नीको, ४. स्त्रियोचित भद्रता, ५. मूर्ख, ६. कलियाँ, ७. अंग, भाग ।

'काश'—सुश्री कनीज़ फ़ातमा

ग़ज़ल

तुम्हारी यादसे दिलको सजाके आई हूँ
मैं और ख़ानए-उल्फ़त[1] बनाके आई हूँ
तख़ैय्युलातकी[2] वादीमें[3] छुपके आलमसे[4]
किसीकी गोदको अक्सर सजाके आई हूँ
वह नशअ् ख़ेज़िए-उल्फ़त[5], वह ज़िन्दगीका शबाब[6]
हसीन होंटोंसे अक्सर पिलाके आई हूँ
रुख़ोंपै[7] आज भी इक अर्क़े सद नदामत[8] है
गुलोंका रंग चमनसे उड़ाके आई हूँ
तू 'काश' मुझसे न पूछे शबाबकी तफ़सीर[9]
मेरे हबीब[10]! मैं सब कुछ लुटाके आई हूँ

---

१. प्रेम-प्रासाद, २. कल्पनाओंकी, ३. घाटीमें, ४. संसारसे ५. मादकता लानेवाला प्रेम, ६. यौवन, ७. कपोलोंपर, ८. शर्मका पसीना, ९. कहानी, १०. प्रियतम ।

'क़ैसर' – सुश्री क़ैसर शमीम

काँटोंका वन

पग-पग होती है उलझन
जीवन है काँटोंका वन
मर - मरके भी जीते हैं
जानसे प्यारा है जीवन !
अब तो रह - रहकर यूँ ही
बेकल हो उठता है मन
उचटा जी फुलवारीसे
याद आया उनका आँगन
साँझ - सवेरे डसता है
अपने घरका सूनापन
मन - ही मनमें घुटती है
मेरी आशा है बिरहन !
अब तो हर - इक आहटपर
बढ़ती है दिलकी धड़कन
हमपर क्या बीती मत पूछ
रोता गुज़रा है सावन
उनका चेहरा कुम्हलाया
टूट गये कितने दरपन !
कैसी धूप पड़ी 'क़ैसर'
सूख गये फूलोंके तन

'ख़ालिद:' – सुश्री ख़ालिदा बेगम जबलपुरी

निगाहोंसे अपनी वह तड़पा रहा है
तबस्सुमके साग़र[1] वह छलका रहा है
यह दिल जोशे-तूफ़ाँसे घबरा रहा है
वह हर्फ़े-ग़लत[2] है मिटा जा रहा है

मुहब्बतकी दुनिया निराली है सबसे
अनोखी यह बज़्मे-ख़याली है सबसे

हर-इक रंगसे आज़माया गया हूँ
चढ़ाकर नज़रसे गिराया गया हूँ
भरी बज़्मसे[3] मैं उठाया गया हूँ
कहाँ फिर कहाँसे मैं लाया गया हूँ

मुहब्बतकी दुनिया निराली है सबसे
अनोखी यह बज़्मे-ख़याली है सबसे

तड़प ख़ालिद: दिलमें होती है अक्सर
मुसीबतमें हर आँख रोती है अक्सर
सुनो दिलकी धड़कन, यह कहती है अक्सर
यह शमअ़[4] है वोह जलके बुझती है अक्सर

मुहब्बतकी दुनिया निराली है सबसे
अनोखी यह बज़्मे-ख़याली है सबसे

---

१. मुसकानके प्याले, २. अशुद्ध अक्षर, ३. महफ़िलसे, ४. मोमबत्ती।

मशरिक़की औरत

क़ुर्बाने-मुहब्बत[१] हूँ
तसवीरे - मसर्रत[२] हूँ
फूलोंकी मैं निकहत[३] हूँ
दुनियाकी मैं जन्नत हूँ
मशरिक़[४] की मैं औरत हूँ

दरियाए - लताफ़त[५] हूँ
इक गौहरे - इस्मत[६] हूँ
इक राज़े - हक़ीक़त[७] हूँ
परवानेकी फ़ितरत[८] हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ

मैं पैकरे - फ़ितरत[९] हूँ
मानूसे - मुहब्बत[१०] हूँ
सरमायए - राहत[११] हूँ
मैं हुस्ने - क़यामत[१२] हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ

---

१. प्रेमपर न्योछावर, २. आनन्द-चित्र, ३. सुगन्ध, ४. पूर्व देशकी, ५. मृदुलताकी नदी, ६. सतीत्वका मोती, ७. वास्तविकताका भेद, ८. प्रेमीपर बलि होनेवाले परवाने जैसा स्वभाव, ९. चातुर्य्यका आकार, १०. प्रेमसे परिचित, ११. सुख-चैनका भण्डार, १२. प्रलयंकारी रूप ।

शीरींकी सबाहत[1] हूँ
लैलीकी मलाहत[2] हूँ,
फ़रहादकी ग़ैरत[3] हूँ
मजनूँकी मैं हसरत[4] हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ

शमशीरे-हलाकत[5] हूँ
तफ़सीरे-क़यामत[6] हूँ
चंगेज़की ख़सलत हूँ,
महमूदकी आदत हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ

---

१. शीरीं जैसे रूपवाली, २. लैली जैसे लावण्यवाली ३. फ़रहाद जैसी लाजवाली, ४. अभिलाषा, ५. क़ातिल तलवार, ६. प्रलयकी कहानी ।

ख़ुर्शीद—सुश्री ख़ुर्शीदआरा बेगम
अमरावती [बरार]

ग़ज़ल

राज़े-उल्फ़त[1] छुपाये बैठे हैं
आग दिलमें दबाये बैठे हैं
आस झूटी हम उनके आनेकी
हाय! कबसे लगाये बैठे हैं
दिल बहलता है, इन ख़यालोंमें
फ़र्ज़[2] करते हैं आये बैठे हैं
दिल है, मसरूफ़े-गिरिया[3] लेकिन हम
हँसती सूरत बनाये बैठे हैं

घरके गोशे[4] को आख़िरिश 'ख़ुर्शीद'
ग़मका दफ़्तर बनाये बैठे हैं

---

१. प्रेमभेद, २. कल्पना, ३. रोनेमें व्यस्त, ४. कोनेको।

'ग़ज़ालः'—सुश्री ग़ज़ालः जमाल

कभी आँसू बहाती हूँ कभी फ़रियाद करती हूँ
तुझे ऐ भूलने वाले मैं अब तक याद करती हूँ
मुझे अपनी रिहाईकी तवक़्क़ुअ[1] है, न हसरत[2] है
यह मुश्ते-पर[3] भी नज़रे-मर्ज़िए-सैय्याद[4] करती हूँ
हसीं माज़ीकी[5] कुछ यादें हैं, कुछ आँसू हैं, कुछ नाले
उन्हींसे ख़ानए-वीराने-दिल[6] आबाद करती हूँ
तग़ाफ़ुलमें[7] भी शायद कोई पहलू है तवज्जोहका[8]
कि तुम जितना भुलाते हो मैं दूना याद करती हूँ
'ग़ज़ालः' काश दामनमें किसीके जज़्ब[9] हो जाते
यह आँसू आह जिनको ख़ाकमें बरबाद करती हूँ

---

१. आशा, २. इच्छा, ३. मुट्ठी भर पंख, ४. चिड़ीमारकी इच्छाकी नजर, ५. भूतकालकी, ६. उजड़ा दिल ७. उपेक्षामें, ८. ध्यान देनेका, ९. समा जाते, घुलमिल जाते ।

'ग़ज़लः' — सुश्री हुस्नआरा बेगम बरेलवी

बाँसरी बजाये जा

ओ हुस्ने-काफ़िरः[1]
मस्तो - नाज़ मुतरबः[2]
शोख़े - लबे-मुग़नियः[3]
ओ नशीली साहरः[4]

राज़े-ग़म[5] सुनाये जा
बाँसरी बजाये जा
ख़ाके-दश्त[6] उड़ाये जा
बाँसरी बजाये जा

मेरे दिलकी अबतरी[7]
और तेरी बेख़ुदी[8]
मेरा हाले-ज़िन्दगी
तेरी ज़ुल्फ़े-अम्बरी[9]

राज़े-ग़म सुनाये जा
बाँसरी बजाये जा
ख़ाके-दश्त उड़ाये जा
बाँसरी बजाये जा

---

१. काफ़िर हुस्न वाली, ईमान डिगाने वाली रूपवती, २. मस्तानी हाव-भाव वाली गायिका, ३. गायिकाके चंचल ओठ, ४. जादूगरनी ५. ग़मके भेद, ६. मार्गकी धूल, ७. शोचनीय स्थिति, ८. वेपरवाही, ९. कस्तूरी सुगन्धवाली ज़ुल्फ़ें।

ताबिशे - जमाल[1] तू
नाज़िशे - ख़याल[2] तू
रुख़सते - कमाल तू
है दिले -ग़ज़ाल[3] तू

राज़े-ग़म सुनाये जा
बाँसरी बजाये जा
ख़ाके-दश्त उड़ाये जा
बाँसरी बजाये जा

नदी किनारे

दहक़ाँकी[4] प्यारी लड़की नद्दी पै जल्वःज़ा[5] है
सारीका सब्ज़ आँचल सरसे ढलक रहा है
चितवनकी सादगीमें इक बर्क़ शुअ़्लःज़ा[6] है
जिसपर नज़र पड़ी वह शुअ़्लः बना हुआ है

होंटों पै है तबस्सुम[7] नज़रें झुकी हुई हैं
मासूमे-हुस्ने-बेख़ुद[8] अँगड़ाई ले रहा है
हाथोंमें चूड़ियोंकी रंगीं लहरियाँ हैं
इक नीमबाज़ ग़ुञ्चः[9] कानोंमें हँस रहा है

१. प्रकाशवान सौन्दर्य, २. कल्पनाओंका अभिमान, ३. मृगनयनीका दिल, ४. किसानकी, ५. रौनक बढ़ा रही है, ६. बिजली-सी चमक रही है, ७. मुसकान, ८. भोला अनजान रूप, ९. अधखिली कली।

मासूम सादगीमें[1] लाखों तजल्लियाँ[2] हैं
माथेका सुर्ख़ टीका शुअ़ला बना हुआ है
मिज़गाँ में[3] मस्त पुतली रक़्साँ[4] है या सितमगर
काली घटामें कोई अँगड़ाई ले रहा है

गेसूसे[5] नर्म झोंके कुछ छेड़ कर रहे हैं
इन प्यारी अँखड़ियोंमें साग़र[6] छलक रहे हैं
बिजली तड़प रही है हर-हर नज़रमें क़ातिल
हर इक अदामें ज़ालिम शुअ़ला भड़क रहा है

मासूमियतकी पुतली, देवी नज़ाकतोंकी
तेरी अदाए-सादा जन्नत नहीं तो क्या है

१. भोली भाली बनावटहीनतामें, २. चमत्कार, ३. पलकोंके बालोंमें, ४. थिरकते हुए, ५. जुल्फ़ोंसे, ६. मदिरा-प्याले।

'गायत्री' – सुश्री गायत्री देवी

पुकार

यह हुस्नो-इश्क़की[1] रंगीनियाँ नहीं दरकार
शबे-फ़िराक़की[2] बेचैनियाँ नहीं दरकार
मुझे न चाहिए एहसासे-दर्द, बे-दरमाँ[3]
नहीं है दिलमें किसीका ख़याल या अरमाँ

शराबो-इश्क़की मस्तीकी एहतियाज[4] नहीं
किसीका क़ुर्ब[5] मेरे शौक़का इलाज नहीं
सकूनबख़्श[6] नहीं है किसीकी पैहम[7] याद
किसीके ग़मसे नहीं हूँ ख़राब और बरबाद

शआरे-हुस्नो-मुहब्बत हुआ करे कुछ भी
मेरी बलासे किसीकी अदा करे कुछ भी

ग़मो-अलम मेरे हमदम बने ख़ुदा न करे
हुआ ही क्या कोई मुझसे अगर वफ़ा न करे
नहीं है कैफ़ियते-इन्तज़ारकी हाजत[8]
अभी न चाहिए मुझको सिमतनुमा लज़्ज़त

१. रूप और प्यारकी, २. विरह-रात्रिकी ३. दुःख दर्द इलाज बिना, ४. आवश्यकता, ५. सामीप्य, मिलन, ६. चैन देनेवाली, ७. लगातार, ८. इच्छा।

नग़मए-हरम

लताफ़तें[1] मेरे हक़में अभी हैं दारो-रसनें[2]
मुझे पुकार रहा है मेरा अज़ीज़ वतन
अभी तो सोई हुई क़ौमको जगाना है
वतनको जन्नते-अरज़ी[3] अभी बनाना है

दूसरा रुख़

सो भी जा दोस्त ! कि अफ़कारसे[4] आज़ाद है तू
ज़िन्दगी तेरी अभी मरकज़े - आलामें[5] नहीं
तू समझती है, कि पाइन्दः[6] हैं लमहाते-सकूँ[7]
सो भी जा दोस्त कि तू वाक़िफ़े - अंजाम नहीं
मैं तो जागूँगी अभी मेरे लिए नींद कहाँ
मेरी क़िस्मतमें नहीं ख़्वाबके शीरीं लमहे[8]
हाँ मगर बेबसी हर रात चली आती है
कर्बे - बेख़्वाबी[9] दबे चैने - ख़यालात लिये
बारे - अन्दोहसे[10] हैं मेरे पपोटे बोझिल
तू समझती है यह हैं ख़्वाबके एहसास[11] से चूर
ज़हन[12] है मेरा ग़मो-फ़िक्रकी यूरिश[13] से निढाल
मुज़महल[14] और थके मान्दे हैं विजदानो-शऊर[15]

---

१. ख़ुशियाँ, २. फाँसी-सूली, ३. स्वर्ग, ४. चिन्ताओंसे, ५. दुःखोंका केन्द्र, ६. स्थायी, ७. सुख-चैनके दिन, ८. मधुर क्षण, ९. वास्तविक व्यथा, १०. दुःखोंके भारसे, ११. सुख-स्वप्नसे चूर, १२. मन, मस्तक, १३. दुःख और चिन्ताओंके आक्रमणोंसे शिथिल, १४. थके हुए, उदास, १५. ज्ञान-शक्ति, अक़्ल ।

लमहा-लमहा[1] मेरी ज़ीस्तका आज़ुर्दा-ओ-ख़्वार[2]
हसरते-ख़्वाब[3] कहाँ और कहाँ क़ल्बे-हज़ीं[4]
ज़िन्दगीको न समझ मजमुअए-कैफ़ो-सरूर[5]
यह हक़ीक़त है कोई ख़्वाब तरबनाक[6] नहीं

ख़ुश रहे तू तेरी आसूदगी[7] रास आये तुझे
हाँ मगर कलके तसव्वुरसे तू बेगाना[8] न हो
ज़िन्दगी तेरे लिए ख़्वाब ख़ुश आइन्द सही
ख़्वाबका और भी इक रुख़ है, यह एहसास[9] रहे

---

१. एक-एक पल, २. जिन्दगीका व्यर्थ, ३. आशा-स्वप्न, ४. दुःखी मन, ५. आनन्द और मस्तीका मिलाप, ६. आनन्ददायक, ७. खुशहाली, मुख, ८. अनभिज्ञ, ९. ध्यान, आभास ।

'ज़फ़र' – सुश्री ज़फ़र बानो

उनके दामनसे फूल बिखरे हैं
कहकशाँके[1] नजूम[2] निखरे हैं
साग़रे-गुल[3] पै मैके[4] क़तरे हैं
या मेरे दिलके दाग़ उभरे हैं
रू-ब-रू सामना हुआ जबसे
चाँद-सूरज नज़रसे उतरे हैं
कोई नाज़ुक ख़राम[5] आता है
आसमाँसे फ़रिश्ते उतरे हैं
कह रही है महक नज़ारोंकी
वह अभी इस तरफ़से गुज़रे हैं
हर क़दमपर यही हुआ एहसास[6]
ज़िन्दगीमें हसीन ख़तरे हैं
कोई आहट नहीं है यादोंकी
प्यारके गीत भूले-बिसरे हैं
कैसे कह दूँ कि आप आ जायें
मेरी दुनिया पै ग़मके पहरे हैं
चाँदनीकी ख़मोश लहरोंमें
शोख़ यादोंके अक़्स उभरे हैं

---

१. आकाशगंगा, छाया-पथ, २. नक्षत्र, ३. फूलरूपी मदिरा-पात्रोंमें, ४. शरावके, ५. मस्त चाल, ६. आभास।

'जमालः' – सुश्री बिलक़ीस जमालः बरेलवी

दरियाके किनारे

पानी बहता चलता है
कुछ दुःख सहता चलता है

सन्नाटा-सा कुछ छाया है
पानी कुछ मुर्झाया है

लहरें हैं कुछ मैली-मैली
मौजें[1] हैं कुछ फैली-फैली

तारे झुक-झुक पड़ते हैं
पत्ते चुप-चुप झड़ते हैं

अब्रके[2] टुकड़े उड़ते हैं
कटते हैं फिर जुड़ते हैं

तारे झिम-झिम होते हैं
तायर[3] चुपके सोते हैं

शाख़ें सर-ब-गरेबाँ[4] हैं
बिल्कुल चुप और हैराँ हैं

चाँद भी है कुछ खोया-सा
कुछ जागा कुछ सोया-सा

---

१. लहरें, २. बादलके, ३. पक्षी, ४. मिली हुईं, झुकी हुईं ।

अब्रमें[1] छिप-छिप जाता है
हर तारेको चमकाता है
कुछ बहका-बहका चलता है
पानीमें भटकता चलता है
शबनम[2] टप-टप रोती है
जो आँसू है वह मोती है
जंगल चुपका सोता है
मंज़र[3] पर सन्नाटा है
हर पत्तेमें ख़ामोशी है
हर कोंपलमें बेहोशी है
हर ज़र्रा[4] चुप, हर क़तरा चुप
अफ़लाकका[5] एक-एक तारा चुप
सब गुलहाए रीहाँ[6] चुप हैं
चम्पाकी सब कलियाँ चुप हैं
दरियाकी सब मौजें[7] चुप हैं
बलखाती सब लहरें चुप हैं
सोती है गुलोंमें चुप ख़ुशबू
झिलमिल होते हैं जुगनू

---

१. बादलोंमें, २. ओस, ३. वातावरणमें, ४. अणु, ५. आकाशका, ६. एक फूलका नाम, ७. लहरें ।

चलती है हवा कुछ धीमे-धीमे
फूलोंकी फ़ज़ामें चुपके-चुपके
हलके-हलके गीत सुनाती
रुक-रुककर एक तान लगाती
भीगे-भीगे फूल रसीले
चुपके-चुपके कुछ हँसते-से
यह ख़ामोशी और सन्नाटा
और यह साकिन[१] मौजे-दरिया
इन आँखोंसे क्या-क्या देखूँ
इस दुनियाका हर ज़र्रा देखूँ
यारब ! ये सब मंज़र[२] क्या हैं !
सहरा[३] क्या है, घर-दर क्या है
ख़ामोशी क्या, सन्नाटा क्या है
आधी रातका दरिया क्या है
ये सब क्यों हैं, ये सब क्या है,
ख़ुद मैं क्या हूँ 'जमालः' क्या है

१. शान्त, २. दृश्य, ३. जंगल ।

'ज़ुहा – सुश्री ज़ुहा जमाल

एहसासात

अपने हर तारे-नज़रमें गो इन्हें पाती हूँ मैं
फिर भी दिलकी उलझनोंमें हाय खो जाती हूँ मैं
लज़्ज़ते-ग़म मेरी राहत[1], सोज़े-दिल[2] मेरा सकूँ[3]
तल्ख़िए - नाकामयाबीमें[4] मज़ा पाती हूँ मैं

वक़्ते-रुख़सत उनकी नज़रोंने जो सौंपी थी कभी
आज तक वह याद सीनेमें[5] निहाँ पाती हूँ मैं
इक तरफ़ उनकी उम्मीदें, इक तरफ़ मायूसियाँ[6]
ज़िन्दगीकी रहगुज़रसे[7] यूँ गुज़र जाती हूँ मैं

उनसे यूँ मिलती हूँ अपने दिलकी ख़िलवत गाहमें[8]
जैसे कोई गुमशुदा-सी चीज़ पा जाती हूँ मैं
चाँदको, तारोंको, गुलको, गुंचहाए-बाग़को
देखती हूँ और फिर मायूस[9] हो जाती हूँ मैं
दर्दकी लज़्ज़तमें इतना लुत्फ़[10] अब आने लगा
ज़िन्दगीकी इशरतोंको[11] भूलती जाती हूँ मैं

---

१. सुख, २. दिलका दुःख, ३. चैन, ४. असफलतामें, ५. छिपी हुई ६. निराशाएँ, ७. मार्गसे, ८. एकान्तमें, ९. निराश, १०. आनन्द, ११. आनन्दोंको ।

उनकी नज़रोंने न जाने चुपके-चुपके क्या किया
दिल बहलता ही नहीं गो लाख बहलाती हूँ मैं
लूट ली दुनिया तेरी शायद निगाहे-नाज़ने[1]
आज कुछ खोई हुई 'ज़ह्रा'[2] तुझे पाती हूँ मैं

---

१. भावुक आँखोंने, २. गौरांगना, हज़रते-फ़ातिमाकी उपाधि ।

'ज़हा'—सुश्री 'ज़हा' तबस्सुम ख़ैराबादी

रहता है बस ख़याल ही तेरा तेरे बग़ैर
जीनेका इक यही है सहारा तेरे बग़ैर

अब वह जमाले-शाम[1] निशाते-सहर[2] कहाँ
दुनियासे कर लिया है, किनारा तेरे बग़ैर

तू रूठकर चला मगर इतना मुझे बता
किससे करूँगी मैं तेरा शिकवा[3] तेरे बग़ैर

बेनूर[4] है बहारे-दो आलम[5] निगाहमें
धोका है अब हर-एक नज़ारा तेरे बग़ैर

आ और आके छीन ले रूहे-हयात[6] भी
मैं क्या करूँगी जी के भी तँन्हा[7] तेरे बग़ैर

दिल बस्तगीका[8] कोई ज़रिया[9] नहीं रहा
सूनी पड़ी है 'ज़हा'की दुनिया तेरे बग़ैर

---

१. सन्ध्याका सौन्दर्य, २. सुबहका आनन्द, ३. शिकायत, ४. बेरौनक़, ५. संसारकी बहारें, ६. जीवन, ७. अकेली, ८. मनोरंजनका, ९. साधन ।

'ज़हा'—सुश्री ज़हा हाशमी बदायूनी

आपके पति जाम नवाई साहब एक बार ऐसे बीमार हुए कि उनके बचनेकी आशाएँ जाती रहीं। आप उनकी सेवा-शुश्रूषामें जी-जानसे जुट गई और तभी आपने 'बीमार शौहरके सिराहने' शीर्षक नज़्म कही। जिसमें आपने अपने शौहरके आरोग्य लाभकी और बदलेमें अपने प्राण देनेकी दुआ माँगी। संयोगकी बात, पति अच्छे हो गये और उनके बदले आपने चारपाई पकड़ ली और २ अक्तूबर १९४२ ई० को अल्लाहको प्यारी हो गई। बीमारीकी हालतमें निम्न ५१ शेरकी नज़्म आपने कहकर अपने तकियेमें रख ली थी, जो कि मृत्युके ४० दिन बाद मिली। इस नज़्मके १५ शेर यहाँ दिये जा रहे हैं—

जाँ गुसिल[1] है यह तख़ैय्युल[2] किस क़दर मेरे लिए
बाद मेरे तुम रहोगे नौहागर[3] मेरे लिए

घरमें आकर हस्ब आदत जब न पाओगे मुझे
ख़ाक उड़ाओगे न क्या-क्या दर-बदर मेरे लिए

शिद्दते-ग़ममें[4] बहेंगे सुर्ख़ आँसू आँखसे
ख़ून रोयेगी तुम्हारी चश्मेतर[5] मेरे लिए

देखकर रोते तुम्हें मेरी लरज़ जाती है रूह[6]
है तुम्हारे दिल पै सद्मा[7] किस क़दर मेरे लिए

क्या करोगे बादमें जब आज मेरे जीते जी
हो परेशाँ और ग़मगीं[8] इस क़दर मेरे लिए

---

१. हृदय-विदारक, २. विचार, ३. शोक सन्तप्त, ४. दुःखकी अधिकतामें, ५. अश्रु पूर्ण नेत्र, ६. आत्मा, ७. शोक, ८. रंजीदा।

कौन समझायेगा तुमको मौत है हर-एकको
बन न सकते थे क़वानीने-दिगर[1] मेरे लिए
वक़्तपर आई किसीकी भी टली है दहरमें ?
था न यह दस्तूरे-फ़ितरत[2] ख़ासकर मेरे लिए
मैं हुई क़ुर्बान तुमपर फ़र्ज़[3] था मेरा यही
तुमको वाजिब है जियो तुम उम्र भर मेरे लिए
तुमको मेरी आर्ज़ू, मेरी मुहब्बतकी क़सम
तुम ख़ुदा न ख़्वास्तः जाना न मर मेरे लिए
मेरे बच्चोंसे मुहब्बत करते रहना उम्र भर
जानते रहना उन्हें नूरे - नज़र[4] मेरे लिए
आह! यह मेरी ज़ईफ़[5] अम्माँ तुम्हारी वालिदा
रोएंगी अब ज़िन्दगी भर किस क़दर मेरे लिए
मैंने अबतक दिल किसीका भी दुखाया ही न था
अब दुःखेंगे क़ुदरतन क़ल्बो-जिगर मेरे लिए
आह यह बेकार-सी हस्ती तो इस क़ाबिल न थी
सबके दिलमें इक मुहब्बत थी मगर मेरे लिए
जो ख़ता मुझसे हुई हो बख़्श दो लिल्लाह तुम
जिस तरह करते रहे हो उम्र भर मेरे लिए
मैं तुम्हारी थी, तुम्हारी ही हूँ और इसके बाद भी
तुम ही होगे ख़ुल्दो-फ़िरदौसे-नज़र मेरे लिए

१. भिन्न नियम, २. प्रकृतिका नियम, ३. कर्त्तव्य, ४. आँखोंकी ज्योति, ५. वृद्ध।

'ज़ाहिदः'—सुश्री ज़ाहिदः ख़लीक़ुलरहमान

ग़ज़ल

कुछ न होगी ज़ीनते-शामो-सहर[1] मेरे बग़ैर
यह जहाँ बन जायगा वीरान घर मेरे बग़ैर

बादए-जौरो-सितमकी[2] क्या हुई सरमस्तियाँ[3] ?
क्यों परेशाँ है वह दुज़दीदः नज़र[4] मेरे बग़ैर ?

आमसज्दों[5] से कभी मस्जूद[6] हो सकता नहीं
बन चुका काबा तुम्हारा संगे-दर[7] मेरे बग़ैर

सब तेरी सरमस्तियाँ बेकैफ़[8] हैं अब्रे-बहार[9] !
हेच है बरसात का मौसम, मगर मेरे बग़ैर

[10]गुल हँसे, कलियाँ खिलीं, सब्ज़ेने लीं अँगड़ाइयाँ
हो रहे हैं आप लेकिन चश्मेतर[11] मेरे बग़ैर

आ इधर आ मैं भी शामे-ग़ममें तेरा साथ दूँ
लुत्फ़[12] क्या रोनेका ऐ शमए-सहर[13] ! मेरे बग़ैर

ढूँढ़ते फिरते हैं मुझको फ़स्ले-गुल[14] नज़दीकसे
उड़ते-फिरते हैं हवामें बालो-पर मेरे बग़ैर

तर्जुमाने-दिल[15] है इक-इक शेर अपना 'ज़ाहिदः' !
कौन पा सकता है यह गुलहाएतर मेरे बग़ैर

---

१. सन्ध्या और प्रातःकालकी शोभा, २. अत्याचाररूपी मदिराकी, ३. मस्तियाँ, ४. अर्द्धमीलित नेत्रवाला, ५. नमाज़ी सज्दोंसे, ६. वन्दनीय, ७. द्वारका पत्थर, ८. आनन्दरहित, ९. सावनी घटाएँ, १०. फूल, ११. अश्रुपूर्ण नेत्र, १२. आनन्द, १३. प्रातःकालीन दीपक, १४. बहारके फूल, १५. दिलका आशय समझानेवाले।

ग़ज़ल

हूँ कुश्तए-नैरंगिए-दुनिया[1] कई दिनसे
बेरंग है तसवीरे-तमन्ना[2] कई दिनसे
फिर दिलके बनानेका है सौदा[3] कई दिनसे
करती हूँ बहममुन्तशिर अजज़ा[4] कई दिनसे
फ़ुर्क़तमें अजब हाल है अपना कई दिनसे
है ज़ौक़े-सकूँ दर पए-ईज़ा[5] कई दिनसे
बढ़ती हुई वहशत[6] में तड़पते नहीं बनता
कम हो गई क्या वुसअ़ते-सहरा[7] कई दिनसे
जल्वोंने[8] तेरी क़ीमते-दिल और बढ़ा दी
सज्दः[9] के लिए आता है काबा कई दिनसे
लो तुम तो अलग हो गये दिखलाके तजल्ली[10]
गर्दिशमें है ख़ूने-रगे-सौदा कई दिनसे
उफ़! आलमे-उल्फ़तके दिलावेज़ मनाज़िर[11]
वहशत है अनागीरे-तमन्ना[12] कई दिनसे
क़ाबूमें दिल, आँखोंमें भरोसा नहीं, वर्ना
है जल्वानुमाँ हुस्ने-ख़ुदआरा कई दिनसे
ऐ 'ज़ाहिदः'! क्या कह दिया उस मस्त नज़रने
दिल भी नज़र आता नहीं अपना कई दिनसे

---

१. दुनियाके छल-फ़रेबोंकी सताई हुई, २. आशा-चित्र, ३. पागल-पन, ४. भिन्न-भिन्न अंगोंको एकत्र करना, ५. सुख-चैनका शौक़ कष्ट पहुँचानेकी घातमें, ६. दीवानगीमें, ७. रेगिस्तानकी विस्तीर्णता, ८. रूपके चमत्कारोंने, ९. नत-मस्तक होनेको, १०. चमत्कार, रूपका प्रकाश, ११. चित्ताकर्षक दृश्य, १२. अभिलाषाओंको बढ़ानेवाली।

'ज़ुबेदा'—सुश्री ज़ुबेदा तहसीन

अभी मुसकरायेगी यह फ़ज़ा[१] अभी रोशनी नज़र आयेगी
यह जो ज़ुल्मते-शबे-यास[२] है यह नवेदे-सुबह[३] भी लायेगी
जो तड़प गई तो यह बर्क़[४] है जो मचल गई तो यह मौज[५] है,
यह तेरी नज़र कि है, शोबिदा[६] कोई ताज़ा गुल ही खिलायेगी
यह हवाए-यास[७] बजा, मगर तपिशे-उम्मीदपै[८] रख नज़र
वह जो इक चिराग़ बुझायेगी तो यह सौ चिराग़ जलायेगी
गर दिलो-दमाग़ पै छा गई हैं ग़मे-हयातकी तल्ख़ियाँ[१०]
तेरी याद फिर तेरी याद है, तेरी याद दिलसे न जायेगी
यह नसीम[११] नर्म अभी चली है अभीसे इसका गिला[१२] न कर
जो बहार बनके यह छा गई तो कली-कलीको हँसायेगी

---

१. बहार, २. निराशाकी अँधेरी रात, ३. प्रातःकालीन खुशखबरी, ४. बिजली, ५. लहर, ६. जादू, ७. निराशाकी हवा, ८. मुनासिब, उचित, ९. आशा रूपी गर्मीपर, १० जीवन-कष्टोंकी कड़ुवाहट, ११. मृदु पवन, १२. शिकायत।

'ज़ेब'—सुश्री ताजवर 'ज़ेब' उस्मानिया लुधियानवी

सईए-तफ़क्कुर

ज़ीस्तमें[1] सईए-तफ़क्कुरसे[2] बशर[3] क्या लेगा ?
ज़ोम[4] है उसको मगर, फ़िक्रसे कर क्या लेगा ?

कूचए-इश्क़के फ़ैज़ानका[5] मुनकिर[6] है यह क़ौल
रहके इस दर पै कोई ख़ाक बशर क्या लेगा ?

हुस्नसे कह दो कि अब दीद[7] के मानी हैं कुछ और
रहके वह बज़्ममें[8] मस्तूरे-नज़र[9] क्या लेगा ?

क़ाबिले-क़द्र है याद आवरिए-दोस्त मगर
ख़ुदको भूला हो जो वह उसकी ख़बर क्या लेगा ?

रस्मे-तहक़ीक़[10] है इक अपने सिवा कोई तलाश
वर्ना इस तर्ज़े-तजस्सुससे[11] बशर क्या लेगा ?

जिसने ऐ 'ज़ेब' सुना दर्से-ख़ुदी[12] तुमसे सदा
वह तेरे वाज़े-मुहब्बतसे[13] असर क्या लेगा ?

---

१. जिन्दगीमें, २. चिन्ताओंके प्रयाससे, ३. मनुष्य, ४. अभिमान, ५. प्रेम-गलीकी कृपाओंका, ६. कृतघ्न, ७. देखनेके, ८. महफ़िलमें, ९. नजरोंसे छिपकर, १०. खोज करनेका रिवाज, ११. अन्वेषणके ढंगसे, १२. स्वाभिमानका पाठ, १३. प्रेम-भाषणसे ।

मुक़ामात

नामे-ख़ुदासे[1] जो बुलन्द[2] फ़र्दका[3] नाम कर सकी
क़ौम वही हक़ीक़तन[4] है कोई काम कर सकी

अक़्लको ख़ुद पै ऐतबार है भी नहीं भी है जभी
अपनी किसी दलीलपर यह न क़याम कर सकी

संगे-हसीने - ज़ीस्त है, बन्दगिए - ख़ुदाका दाग़[5]
अक़्ल अगर न नफ़्सको[6] अपना ग़ुलाम कर सकी

अज़ पए मदहे-हुस्न[7] वोह इश्क़का रौबे-गुफ़्तगू
अक़्ल ही थी जो हिम्मते-क़तए-कलाम[8] कर सकी

'ज़ेब' था ज़िक्रे-रफ़्तगाँ[10],लज़्ज़ते-ग़मपै[11] मुनहसिर[12]
क़ल्बे-बशरमें[13] आर्ज़ी[14] यह भी क़याम[15] कर सकी

ऐ महबूब !

क्या यह कुछ कम है मुहब्बतकी सनद[16] ऐ महबूब[17] !
हम दो आलमसे[18] किये जाते हैं, रद[19] ऐ महबूब !!

१. ख़ुदाके नामसे, २. अधिक उच्च, ३. व्यक्तिका, ४. सचमुच, वास्तविक, ५. ख़ुदाकी बन्दगीमें पड़ा हुआ माथेका दाग़ केवल एक सुन्दर पत्थर है, ६. अगर इन्द्रियोंको वशीभूत न किया तो, ७. रूपकी प्रशंसा, ८. वार्तालापका रोब, ९. वार्ताको टोकनेका साहस, १०. भूतकालीन ज़िक्र, ११. कष्टोंको आनन्द समझनेकी स्थितिमें, १२. निर्भर, १३. मानव-हृदयमे, १४. अस्थायी, १५. निवास, १६. प्रमाण-पत्र, १७. प्रियतम, १८. लोक-परलोकसे, १९. व्यर्थ, बहिष्कृत ।

तूले-फ़ुर्क़तकी[1] भी आख़िर कोई हद तो होगी
तुझ पै रौशन हैं अज़ल[2] और अबद[3] ऐ महबूब!
फ़िक्रे-दुनिया[4] ग़मे-उक़बा[5] तेरे मस्तोंके ख़िलाफ़
एक साज़िश[6] है अज़ल ताबः अबद ऐ महबूब!
बस वही दिन कि मुहब्बतका था अहदे-तिफ़ली[7]
फिर कभी चल न सका रौबे-ख़िरद[8] ऐ महबूब!
लबे-नाज़ुकको[9] तेरे ज़हमते-गुफ़्तार[10] हुई
कहीं आसाँ है, मेरी बातका रद ऐ महबूब!
अहल-ओ-नाअहल[11] मुहब्बतकी परख करनेमें
मैंने देखा कि ख़िरद[12] फिर है ख़िरद ऐ महबूब!
क्या पड़ी तुझको करे क़तअ़ तअ़ल्लुक़[13] सबसे
'ज़ेब' को तो है ज़मानेसे हसद[14] ऐ महबूब!

मक़सदे-हयात[15]

भूलके भी न दर्दको दिलसे कभी जुदा समझ
शाहिदे-दिलनवाज़की[16] यह भी कोई अ़ता[17] समझ

---

१. विरहकी अधिकताकी, २. अनादि, ३. अनन्त, ४. संसारकी चिन्ता, ५. परलोक भय, ६. षड्यन्त्र, ७. बाल-युग, ८. अक़लका रौब, ९. कोमल ओठोंको, १०. वार्तालाप करनेमें कष्ट, ११. योग्य-अयोग्य, १२. अक़्ल, १३. सम्बन्ध-विच्छेद, १४. ईर्ष्या, १५. जीवन-उद्देश्य, १६. प्रेमीकी, १७. देन, कृपा।

अम्नकी आर्ज़ू[1] न कर, अम्नका मुद्दआ है मौत[2]
हर नफ़से-हयातको[3] दर्दमें मुब्तिला[4] समझ
शाहरहे-हयातमें[5] रहबरो-राहज़न[6] न बन
अपने सफ़रका मुद्दआ उनसे कहीं सिवा समझ
मंज़िले-हस्तो-बूदमें[7] तेरा मुक़ाम है बुलन्द
महरो-महो-नजूमको[8] अपने निशाने-पा[9] समझ
जौहरे-दर्द[10] है अगर गौहरे-अश्कमें[11] तेरे
दामने-कायनातको[12] मोतियोंसे भरा समझ
तेरे सिफ़ाते-क़ल्बका[13] दहरमें इम्तहान[14] है
ख़ुदको बशर समझ मगर क़ुदसियोंसे[15] सिवा समझ
'ज़ेब' हरीमे-क़ल्बकी[16] ख़ाकमें जब जुमूद[17] है
फ़ित्नः[18] कोई उठा समझ, हश्र[19] कोई बपा समझ

एहसासे-ग़मे-इन्साँ[20] ए 'ज़ेब' है दीं[21] जिसका
नाज़ाँ[22] न हों क्यों उनपर ख़ुद क़ौमकी तक़दीरें

---

१. संघर्ष-रहित जिन्दगीकी इच्छा, २. शान्त जीवन अकर्मण्यता लाता है, ३. जीवन श्वासको, ४. दुःखसे ओत-प्रोत, ५. जीवन-मार्गमें, ६. पथ-प्रदर्शक और लुटेरा, ७. जीवन-मार्गमें, ८. सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रको, ९. चरण-चिह्न, १०. दर्दका अंश, ११. आँसूरूपी मोतीमें, १२. संसारके आँचलको, १३. स्वच्छ हृदयका, १४. संसारमें परीक्षा, १५. देवताओंसे, १६. हृदय-प्रासादकी, १७. गत्यवरोध, १८. षड्यन्त्र, १९. क़यामत, साजिश, २०. मनुष्योंके कष्टोंका संवेदन, ध्यान, २१. धर्म, २२. गर्वीली।

उसको ज़माना रखता है क़ायम
जिस क़ौमको है एहसासे - अंजाम[1]
जिसमें अमलकी[2] ताक़त नहीं 'ज़ेब' !
वक़अतसे[3] ख़ाली हैं उसके अहकाम[4]

तू साहिबे तद्बीर, न मैं साहिबे तद्बीर
तद्बीर पै मौक़ूफ़[5] है हर क़ौमकी तक़दीर

ऐ 'ज़ेब' ! मशरिक़ी[6] हों क़ौमें कि मग़रबी[7] हों
है जिनका अज़्म[8] आली उनके नसीब आली[9]

जागेगी न हरगिज़ कभी उस क़ौमकी तक़दीर
जिस क़ौमकी औरत ही नहीं साहिबे-तद्बीर[10]

रहे-हयातमें[11] मुड़-मुड़के नक़्शे-पाको[12] न देख
मह-ओ-सितारेकी[13] शाने - ख़िराम[14] पैदा कर

---

१. परिणामका ज्ञान, २. कथनको कार्य्यरूपमें परिणत करनेकी, ३. आदर, इज़्ज़तसे, ४. आदेश, बातें, ५. निर्भर, ६. पूर्वीय, ७. पश्चिमीय, ८. ऊँचे इरादे, कार्य करनेकी धुन, ९. भाग्य अच्छे हैं, १०. कर्मवीर, ११. जीवनमार्गमें, १२. चरण-चिह्नोंको, १३. चन्द्र-नक्षत्रकी, १४. मस्त चाल ।

क़तरे-क़तरेको फिरें तेरे सुबूकश[1] लाचार
है यह किसलिए ग़ैरतका मुक़ाम ऐ साक़ी !
मक्रुमतसे[2] तेरी हो जायें न मैकश[3] बद्‌दिल[4]
संगदिल[5] है तेरी महफ़िलका निज़ाम[6] ऐ साक़ी !

उठा है महफ़िले-हस्तीसे[7] ऐतमादे-वफ़ा[8]
कहो किसीसे कि रस्मे-जफ़ा[9] पै नाज़[10] करे
ख़ुदा भी हो तो कभी कोशिशे-नियाज़[11] न करे
अगर वह तुझसे कोई एहतियाते-राज़[12] करे

गर्दिशे-चश्मे-दोस्त ही गर्दिशे-रोज़गार है
सोच-समझके शिकवए-गर्दिशे-रोज़गार कर
हुजलए-उजज़से[13] निकल, पर्दए-बन्दगी[14] उठा
वक़्तका इक़्तफ़ा[15] है 'ज़ेब' ख़ुदको अब आशकार[16] कर

१. शराबी, २. दयालुतासे, ३. सुराभक्त, ४. निराश, नाराज़, बदगुमान, ५. पत्थर हृदय, ६. व्यवस्था, ७. संसारसे, ८. नेकीका विश्वास, ९. अत्याचारोंपर, १०. गर्व, ११. नम्रताका प्रयास, १२, सावधानीका बर्ताव, १३. प्रार्थनाके चक्करसे, १४. उपासनाका पर्दा, १५. तक़ाज़ा, १६. अपनेको पहचान, प्रकट कर।

'ज़ेब'—सुश्री ज़ेबुन्निसा 'ज़ेब'

दिलासा

हर उस बेटीके नाम जो अपनी मजबूर और ग़रीब माँके ज़ेर साया परवान चढ़ रही है।

न रो कि तेरे लिए मेरा दम ग़नीमत है,

यह मेरा प्यार तेरे हौसले बढ़ायेगा
क़दम-क़दमपै नई जन्नतें दिखायेगा
मेरा ख़लूस[1] तुझे लोरियाँ सुनायेगा
थपक-थपकके बड़े प्यारसे सुलायेगा

तेरी ख़ुशीपै मैं अपनी ख़ुशी लुटाऊँगी
मचल गई तो सितारे भी तोड़ लाऊँगी

ग़रीब माँकी ग़रीबीका कुछ ख़याल न कर
तेरे निसार[2] तू बिलकुल मेरा मलाल न कर
बिलक-बिलकके मेरी ज़िन्दगी वबाल न कर
जवाब न दे सकूँ जिसका वह सवाल न कर

जो मुझपै बीत गई उसको इत्तफ़ाक़ समझ
मेरे मज़ाक़की हद तक मेरा मज़ाक़ समझ

---

१. स्नेह, ममता, २. न्योछावर।

मेरी निगाहसे मस्तूर[1] हो गई दुनिया
क़रीब होके बहुत दूर हो गई दुनिया
मुझे मिटाने पै मजबूर हो गई दुनिया
कुछ आज और भी मग़रूर[2] हो गई दुनिया

बलासे अब जो किसीको न मेरा पास रहे
दुआ यह कर मेरी फ़ितरत[3] ख़ुदी शनास[4] रहे

दिलो-निगाहको आसूदगी[5] मिले-न-मिले
मेरे लबोंको[6] वह पहली हँसी मिले-न-मिले
फ़सुर्दगीको[7] मेरी ताज़गी मिले-न-मिले
ख़ुशीकी फ़िक्र नहीं है ख़ुशी मिले-न-मिले

हर-एक ग़मको ग़मे-जाविदाँ[8] बनाने दे
नया सफ़र है, नया कारवाँ[9] बनाने दे

लतीफ़[10] जिन्स हूँ बेशक, नहीफ़ो-ज़ार[11] सही
मेरा वजूद[12] भी हरचन्द मुझपै बार[13] सही
हज़ारों रंज मुसीबतकी मैं शिकार सही
जो बे-दयार[14] हूँ अब तक तो बेदयार सही।

मुझे क़बूल हैं सब सख़्तियाँ ज़मानेकी
न भूल जाये अदाएँ तू मुसकरानेकी

१. छिप गई, २. गर्वीली, ३. स्वभाव, ४. स्वयंको जाननेवाली, ५. तृप्ति, खुशहाली, ६. ओठोंको, ७. मुर्झायेपनको, ८. स्थायी दुःख, ९. यात्रीदल, १०. कोमल वस्तु, ११. अबला, १२. अस्तित्व, १३. बोझ, १४. बे घर, बे वतन।

जिसारतोंको[1] तेरे नामसे पुकारा है
रुख़े-हयात[2] नये अज़्मसे[3] सँवारा है
उम्मीद वक़्तका सबसे बड़ा सहारा है
जो हौसला है, तो हर मौजमें[4] कनारा है
सफ़ीना[5] शोरिशे-तूफ़ाँसे[6] आश्ना[7] न सही
ख़ुदा तो है मेरे हमराह[8] नाख़ुदा[9] न सही

क़दम-क़दम पै तेरा प्यार आसरा देगा
मुझे यह मेरा ग़मे-वक़्त ख़ुद सदा[10] देगा
तेरा ख़याल मेरी कुलफ़तें[11] मिटा देगा
तेरा फ़सूने-नज़र[12] मरके भी जिला देगा
तड़पके लाख मैं यह रोज़ो-शब[13] गुज़ारूँगी
ब-हर तरीक़ तेरी ज़िन्दगी सवाँरूँगी
न रो कि तेरे लिए मेरा दम ग़नीमत है

---

१. दिलेरियों, २. जीवन-मुख, ३. नवीन इरादेसे, ४. लहरमें, ५. नौका, ६. तूफ़ानके शोरसे, ७. परिचित, ८. साथ, ९. मल्लाह, १०. आवाज़, ११. परेशानियाँ, १२. नेत्रोंका जादू, १३. दिन-रात।

'ज़ेबा'—सुश्री इफ़्फ़त बानो 'ज़ेबा' काकोरवी

ज़ख़्म दिलके छुपाके देख लिया
ग़मसे आँखें चुराके देख लिया

लज़्ज़ते-दर्द मैं निसार[1] तेरे!
तुझसे दामन बचाके देख लिया

दिलका हर ज़ख़्म मुसकरा उट्ठा!
नग़मए-ऐश[2] गाके देख लिया

ज़िन्दगीका सकून[3] खो बैठे
ग़मकी दौलत लुटाके देख लिया

बिजलियाँ सैकड़ों चमक उट्ठीं
फिर नशेमन बनाके देख लिया

कैसी उल्फ़त, कहाँकी रस्मे-वफ़ा
सबको अपना बनाके देख लिया

हमनवा[4] कौन? हमनफ़स[5] कैसा!
नौहए-ग़म[6] सुनाके देख लिया

ज़िन्दगी इक सराब[7] है 'ज़ेबा'!
ख़न्दए-गुलको[8] जाके देख लिया

---

१. न्योछावर, २. विलासपूर्ण गीत, ३. चैन, ४. अपनी जैसी भाषा-वाला, ५. मित्र, साथी, ६. दुःखड़ा, ७. मृग-मरीचिका, ८. मुसकराते फूलको।

ज़ो-बे साहिबा*

मन मेरा है प्रेमकी बस्ती
प्रेमका सामन मेरी हस्ती
जानके बदले पीत है सस्ती
यह संसार है प्रेमका गीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

प्रीत करे और मनको गँवाये
प्रीतमें जीवन अपना बिताये
मन हारे पर मीत न जाये
मनके हारे प्रीतकी जीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

जब आँखोंमें मीत समाये
और कोई फिर नज़र न आये
मनमें मीत बसे मन जाये
प्रेम नगरकी उल्टी रीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

* आप इसी नामसे लिखती हैं।

उसने पाया जिसने खोया
प्रीत बिना कोई मीत न होया
जोगी हो या कोई अतीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

'तबस्सुम'—सुश्री तबस्सुम पूनावी

इतना पुरफ़न[1] यह आस्माँ तो नहीं
पसे-पर्दा[2] वह महर्बां तो नहीं

किस पतेपर उसे तलाश करूँ ?
बे-निशाँका कोई निशाँ तो नहीं

क्यों सलासिल[3] हैं फूलकी लड़ियाँ
क़ैदख़ाना यह गुलसिताँ[4] तो नहीं

जिसका हर नक़्शे-पा[5] है, मशअ़ले-राह[6]
वह मेरा मीरे-कारवाँ[7] तो नहीं

ज़ोरे-बातिलपर[8] ख़न्द:-ज़न[9] क्यों है !
हक़ 'तबस्सुम'का पासबाँ[10] तो नहीं

---

१. धूर्त्त; २. पर्देकी आड़में, ३. जंजीरें, वेड़ियाँ, ४. बाग़, ५. चरण-चिह्न, ६. मार्ग-दीप, ७. यात्रीदलका प्रधान, ८. झूठे बलपर, ९. हँसना, १०. रक्षक ।

'तस्नीम'—सुश्री जमीला ख़ातून 'तस्नीम' सलीहाबादी

ग़ज़ल

ज़िन्दगीको एक बहरे-बेकराँ[1] पाती हूँ मैं
उनके हाथों मिटके उम्रे-जाविदाँ[2] पाती हूँ मैं

ख़ुद-ब-ख़ुद दिल हो गया दीनो जहाँसे बेनियाज़[3]
अब ज़मीने-इश्क़ गोया आस्माँ[4] पाती हूँ मैं

झुटपुटेसे दिल बुझा रहता है तेरी यादमें
चाँदनी रातोंमें अश्कोंको रवाँ[5] पाती हूँ मैं

सैंकड़ों सज्दे[6] तड़पते हैं जबीने-शौक़में[7]
ऐ हक़ीक़त[8] तेरा नक़्शे-पा[9] कहाँ पाती हूँ मैं

अब भी आँसू बह निकलते हैं किसीकी यादमें
अन्दलीबे-ज़ारको[10] जब नौहाख़्वाँ[11] पाती हूँ मैं

अपना ऐ 'तस्नीम'[12]! इस दुनियासे घबराता है दिल
बाक़ी हर शैको फ़क़त वहमो-गुमाँ पाती हूँ मैं

१. असीम समुद्र, २. अमरत्व, ३. उदासीन, ४. प्यार करनेका स्थान आकाशको, ५. बहते हुए, ६. नमाज़में मत्था टेकनेके भाव, ७. उत्साह-पूर्ण मस्तकमें, ८. सचाई, ९. चरणचिह्न, १०. दुःखी बुलबुलको, ११. शोक-सन्तप्त, १२. जन्नतकी नहर।

'दरख़्शाँ'—सुश्री आर. के. दरख़्शाँ विजनौरी

ग़ज़ल

गदा[1] तेरे दरकी[2] बना चाहती हूँ
मुहब्बतमें तेरी फ़ना[3] चाहती हूँ

कहे अब वोह रूदादे-ग़म[4] मुझसे आके
तसव्वुरमें[5] लेकिन सुना चाहती हूँ

हुआ किस तरह क़ल्बे-तारीक रौशन[6]
अयाँ राज़े-पिन्हाँ[7] किया चाहती हूँ

कहा आके गुलशनमें बुलबुलने हँसकर
मैं फूलोंसे दामन भरा चाहती हूँ

हुई महफ़िले-शौक़ तारीक[8] मेरी
तुझे दिलमें जल्वानुमा चाहती हूँ

कहानी मेरे ग़मकी बिखरी हुई है
ग़मे-अहद[9] यकजा किया चाहती हूँ

न देखे तसव्वुरमें भी कोई मुझको
लताफ़तमें[10] ऐसी छिपा चाहती हूँ

गुनाहोंका नज़रों पै इतना असर है
मैं बहरे-ख़िजलमें[11] बहा चाहती हूँ

'दरख़्शाँ'[12] मेरे शेर हैं दिलके टुकड़े
मैं काविशका[13] अपनी सिला चाहती हूँ

---

१. भिक्षुक, २. दरवाजेकी, ३. मिटना, ४. दुःखोंकी कहानी, ५. ध्यानमें, ६. अन्धकारपूर्ण हृदय प्रकाशवान् हुआ, ७. छिपा भेद, ८. अँधियारी, ९. दुःखोंका ज़माना, १०. मृदुलतामें, ११. लाज रूपी दरियामें, १२. चमकता हुआ, १३. श्रमका ।

'नज्मः'—सुश्री शमशाद् नज्मः तसद्दुक़ एम. ए. बी. टी.

तरानए-मुहब्बत

मुहब्बतके तराने गा रही हूँ
फ़ज़ामें[1] आग-सी भड़का रही हूँ
यह मैं, यह हादसाते-ज़िन्दगानी[2]
किसी तूफ़ाँ में बहती जा रही हूँ

किसीकी यादमें नग़मे[3] लुटाकर
दिले-कोनो-मकाँ धड़का रही हूँ
ख़िरद[4] जितना मुझे समझा रही है
मैं उतनी और खोई जा रही हूँ

मसाइब[5] घूरते हैं हर तरफ़से
मगर मैं क़हक़हे बरसा रही हूँ
न मंज़िल है न कोई राहे-मंज़िल
मगर मैं एक धुनमें जा रही हूँ

जो देखा था कभी इक ख़्वाब 'नज्मा'[6]!
उसे अशआरमें दुहरा रही हूँ

१. वातावरणमें, रौनक़में. २. जीवन-दुर्घटनाएँ, ३. गीत, ४. अक़्ल, ५. मुसीबतें, ६. नक्षत्र ।

ग़ज़ल

ख़ुद मिट गई न पा सकी तेरे निशाँको मैं
समझी थी सहल शौक़की राहे-गराँको[1] मैं
यह आर्ज़ूए - जोशे - तजस्सुसका[2] है मआल[3]
भूला है कारवाँ[4] मुझे और कारवाँको मैं
सोज़े - जुनूँकी[5] आगसे इक रोज़ फूँक दूँ
वहमो - गुमाँको[6] जज़्बए - सूदो - ज़ियाँको[7] मैं
तारोंकी मस्त छाओंमें अब भी कभी - कभी
करती हूँ याद भूली हुई दास्ताँको मैं
हर - हर क़दम पै मेरी जबीं सज्दः रेज़[8] है
काबा समझ रही हूँ तेरे आस्ताँको[9] मैं
'नजमः' न पूछ मुझसे मेरी दास्ताने - ज़ीस्त[10]
अल मुख़्तसिर कि याद रहूँगी जहाँको मैं

अफ़सानए - निगाहे - मुहब्बत[11] न पूछिए
कहते हैं किसको हश्रे - मसर्रत[12] न पूछिए
वह मस्त-मस्त रात वह बादः बदस्त[13] रात
उस मस्त - मस्त रातकी क़ीमत न पूछिए

---

१. कठिन डगरको, २. तलाश करनेकी बलवती इच्छाका, ३. परिणाम, ४. यात्रीदल, ५. प्रेम-अग्निसे, ६. शक-शुबहोंको, ७. लाभ-हानिके विचारोंको, ८. मस्तक नत है, ९. द्वारकी चौखटको, १०. जीवन-कथा, ११. प्रेम-दृष्टिकी कहानी, १२. खुशियोंकी प्रलय, अथाह आनन्द, १३. नशीली।

होती है दिलमें इक ख़लिशे-बेक़रार - सी[1]
वल्लाह उस नज़रकी शरारत न पूछिए
आलम[2] तमाम आँसुओंका एक सैल[3] था
मुझसे फ़सानए - शबे - फ़ुर्क़त[4] न पूछिए
रातोंको कर रही हूँ सितारोंसे गुफ़्तगू
मुझसे मेरे जुनूँकी हिकायत न पूछिए
क्या हो गया है आपकी 'नज्मः' को क्या कहूँ
हालत न पूछिए, मेरी हालत न पूछिए

उस निगाहे - मस्तसे जब वज्दमें[5] आती हूँ मैं
कैफ़ो - रंगो - नूरकी दुनिया पै छा जाती हूँ मैं
चाहती तो हूँ कि मौजोंसे रहूँ दामनकशाँ[6]
किश्तिए - ग़म[7] हूँ भँवरमें फिर भी आ जाती हूँ मैं
सुबहतक ठहरा नज़र आता है दौरे - आस्माँ
जब तसव्वुरमें[8] तेरे रातोंको खो जाती हूँ मैं
जाम[9] गिर पड़ता है साक़ी ! थरथरा जाते हैं हाथ
तेरी आँखें देखकर नशेमें आ जाती हूँ मैं

---

१. बेचैनीकी चुभन, २. संसार, ३. बाढ़, ४. विरह-रात्रिकी बात, ५. आपेमें नहीं रहना, तल्लीनता, ६. लहरोंसे दामन बचाये, ७. दुखों-की नाव, ८. ध्यानमें, ९. मदिरा-पात्र ।

यह दूरकी वादीसे[1] मुझे किसने सदा[2] दी ?
इक आग मेरे दिलमें मुहब्बतकी लगा दी
फूलोंकी बहार और सितारोंकी जवानी
हर चीज़ तेरे मस्त तबस्सुमपै[3] लुटा दी
यह कौन मेरी रूहकी[4] गहराईमें झूमा
उजड़ी हुई बस्ती यह मेरी किसने बसा दी ?
वह बात, जिसे दिलने छिपाया था ब - मुश्किल
दुनियाको तेरी मस्त निगाहोंने बता दी
फिर उठने लगे रूहसे रंगीन शरारे
फिर हिज्रकी रूदाद[5] पपीहेने सुना दी
फिर कर दिया मदहोश मुझे होशमें लाकर
फिर मस्त निगाहोंने निगाहोंको पिला दी
इस शर्मे - जफ़ापर[6] तेरी, क़ुर्बान[7] वफ़ाएँ
जब शिकवए - बेदाद[8] किया आँख झुका दी

बेख़ुदीके साज़पर[9] गानेका मौसम आ गया
आ गया पीकर बहक जानेका मौसम आ गया
फिर पयामे - आमदे - जानाँ[10] सकूने-शाम है[11]
सेजपर कलियोंके खिल जानेका मौसम आ गया

---

१. घाटीसे, २. आवाज़, ३. मुसकानपै, ४. दिलकी, ५. विरह-कथा, ६. अत्याचारोंकी लाजपर, ७. न्यौछावर, ८. अत्याचारकी शिकायत, ९. आत्मलीनताके वाद्यपर, १०. प्रियतमके आगमनका सन्देश, ११. सन्ध्याकालीन सुख ।

यह तड़प, यह दर्द, यह रग-रगमें हल्की-सी कसक
यह शबाब[1] आया कि मर जानेका मौसम आ गया
तोड़कर हमदम! हर इक रस्मो-रहे-क़ौनीनको[2]
लग़ज़िशोंपर लग़ज़िशें[3] खानेका मौसम आ गया

मुहब्बतमें क्या दूँ मुहब्बतमें क्या लूँ
तुझे देके दिल तुझको अपना बना लूँ
इधर आओ पहलूमें तुमको बिठा लूँ
ज़रा हौसले अपने दिलके निकालूँ
वफ़ूरे-मुहब्बत[4] भी है इक मुसीबत
मैं तुझको सम्भालूँ कि ख़ुदको सम्भालूँ

क्योंकर गुज़र रहे हैं मेरी ज़िन्दगीके दिन
यह मैं तुम्हें बता नहीं सकती हूँ क्या करूँ
मुझको तेरे फ़िराक़का[5] एहसास[6] है मगर
मैं तेरे पास आ नहीं सकती हूँ क्या करूँ
यह ठंडी-ठंडी आग मुहब्बत कहें जिसे
यह आग मैं बुझा नहीं सकती हूँ क्या करूँ

---

१. जोवन, २. संसारके रीति-रिवाजोंको, ३. भूलोंपर भूल करनेका, ४. प्रेमकी अधिकता, ५. जुदाईका, ६. ज्ञान ।

आग़ाज़े-इश्क़[1]

तलव्वुन[2]

आग़ाज़े-मुहब्बतमें वह इक सुबह ख़िरामाँ[3]
आँखोंमें समेटे हुए सौ रंगके तूफ़ाँ
अब तक है तसव्वुरमें[4] वह बेदार नज़ारः[5]
वह मस्त समाँ[6] अब भी आँखोंमें है रक़्साँ[7]
साँचेमें जवानीके वह ढाली हुई मूरत
हूरोंके तबस्सुमकी[8] झलक रुख़पै फ़रोज़ाँ[9]
दुज़दीदः निगाहोंमें[10] वोह दुज़दीदा तबस्सुम
वोह बर्क़ मुजस्सिम[11] कभी पिन्हा[12] कभी उरियाँ[13]
वोह अहदे जवानीकी तमन्नाओंका मरकज़[14]
वोह क़ामते-ख़ुश[15] जिससे ख़िजल[16] सरूओ-गुलिस्ताँ[17]
वह जोश-शबाब[18] और वह शर्मीली अदाएँ
पैग़ामे-जुँनू[19] दिलके लिए इश्वए-पिन्हाँ[20]

---

१. इश्क़की शुरूआत, २. अस्थिरता, कभी कुछ होना, कभी कुछ, ३. धीमी चालसे प्रातःकाल आया, ४. ध्यानमें, नज़रोंमें, ५. जगानेवाला दृश्य, ६. समय, ७. थिरकता हुआ, ८. देवांगनाओंकी मुसकानको, ९. कपोलोंपर दीप्तिवान्, १०. अधखुली आँखोंमें, ११. साक्षात् बिजली, १२. छिपी हुई, १३. प्रकट, १४. केन्द्र, १५. अच्छा क़द, १६. शर्मिन्दा, १७. सरू वृक्ष और उद्यान, १८. जोवनका जोश, १९. बावला बना देने-वाला सन्देश, २०. छिपे हुए हाव-भाव ।

अँगड़ाई - सी लेकर हुई बेदार[१] मुहब्बत
जज़्बातकी[२] मस्ती हुई ख़ुर्शीदे - गुलिस्ताँ[३]
उम्मीदकी आग़ोशमें[४] पलते रहे जज़्बे[५]
आग़ाज़में[६] होता है मगर इश्क़ भी नादाँ[७]

अंजामे-इश्क़[८]

इक वक़्त फिर आता है कि मर जाती है उम्मीद
फ़ुर्सत नहीं मिलती कि सिएँ चाके-गरीबाँ[९]
होती नहीं मानूस[१०] किसी शैसे तबीयत
ख़ातिर भी परेशान, तख़ैय्युल[११] भी परीशाँ
बढ़ जाती है अफ़कारे-मईशतकी कशायश[१२]
दोज़ख़-सी[१३] नज़र आती है यह जन्नते-दौराँ[१४]
घुट जाता है ज़ौक़े-अमनो-जोशे-तमन्ना[१५]
बढ़ जाती है मायूसिए-दिल ताजदे-इमकाँ[१६]

१. जागृत, २. भावोंकी, ३. उद्यानका सूर्य्य, ४. गोदमें, ५. विचार, ६. प्रारम्भमें, ७. मूर्ख, ८. प्रेम-परिणाम, ९. कुरतेका फटा हुआ गला, १०. बहलती, परिचित, ११. विचार, १२. चिन्तारूपी आजीविकाकी उदारता, १३. नरक-सी, १४. संसार रूपी स्वर्ग, १५. सुख-चैन और उत्साहका जोश, १६. हृदयकी निराशाएँ विस्तृत ।

आग़ाज़े–इश्क़[1]

तलव्वन[2]

आग़ाज़े-मुहब्बतमें वह इक सुबह ख़रामाँ[3]
आँखोंमें समेटे हुए सौ रंगके तूफ़ाँ

अब तक है तसव्वुरमें[4] वह बेदार नज़ार:[5]
वह मस्त समाँ[6] अब भी आँखोंमें है रक़्साँ[7]

साँचेमें जवानीके वह ढाली हुई मूरत
हूरोंके तबस्सुमकी[8] झलक रुख़पै फ़रोज़ाँ[9]

दुज़दीद: निगाहोंमें[10] वोह दुज़दीदा तबस्सुम
वोह बर्क़ मुजस्सिम[11] कभी पिन्हा[12] कभी उरियाँ[13]

वोह अहदे जवानीकी तमन्नाओंका मरकज़[14]
वोह क़ामते-ख़ुश[15] जिससे ख़िजल[16] सरूओ-गुलिस्ताँ[17]

वह जोशे-शबाब[18] और वह शर्मीली अदाएँ
पैग़ामे-जुँनू[19] दिलके लिए इश्वए-पिन्हाँ[20]

---

१. इश्क़की शुरूआत, २. अस्थिरता, कभी कुछ होना, कभी कुछ, ३. धीमी चालसे प्रात:काल आया, ४. ध्यानमें, नज़रोंमें, ५. जगानेवाला दृश्य, ६. समय, ७. थिरकता हुआ, ८. देवांगनाओंकी मुसकानकी, ९. कपोलोंपर दीप्तिवान्, १०. अधखुली आँखोंमें, ११. साक्षात् बिजली, १२. छिपी हुई, १३. प्रकट, १४. केन्द्र, १५. अच्छा क़द, १६. शर्मिन्दा, १७. सरू वृक्ष और उद्यान, १८. जोबनका जोश, १९. बावला बना देनेवाला सन्देश, २०. छिपे हुए हाव-भाव ।

अँगड़ाई - सी लेकर हुई बेदार[1] मुहब्बत
जज़्बातकी[2] मस्ती हुई ख़ुर्शीदे - गुलिस्ताँ[3]
उम्मीदकी आग़ोशमें[4] पलते रहे जज़्बे[5]
आग़ाज़में[6] होता है मगर इश्क़ भी नादाँ[7]

अंजामे-इश्क़[8]

इक वक़्त फिर आता है कि मर जाती है उम्मीद
फ़ुर्सत नहीं मिलती कि सिएँ चाके-गरीबाँ[9]
होती नहीं मानूस[10] किसी शैसे तबीयत
ख़ातिर भी परेशान, तख़ैय्युल[11] भी परीशाँ
बढ़ जाती है अफ़कारे-मईशतकी कशायश[12]
दोज़ख़-सी[13] नज़र आती है यह जन्नते-दौराँ[14]
घुट जाता है ज़ौके-अमनो-जोशे-तमन्ना[15]
बढ़ जाती है मायूसिए-दिल ताजदे-इमकाँ[16]

---

१. जागृत, २. भावोंकी, ३. उद्यानका सूर्य्य, ४. गोदमें, ५. विचार, ६. प्रारम्भमें, ७. मूर्ख, ८. प्रेम-परिणाम, ९. कुरतेका फटा हुआ गला, १०. वहलती, परिचित, ११. विचार, १२. चिन्तारूपी आजीविकाकी उदारता, १३. नरक-सी, १४. संसार रूपी स्वर्ग, १५. सुख-चैन और उत्साहका जोश, १६. हृदयकी निराशाएँ विस्तृत ।

तज्दीदे-इश्क़[1]

फिर फ़ित्ने जवानीके मचलते हैं रगोंमें
फिर दिलका हर-इक गोशः[2] है सद् हश्र बदामाँ[3]

फिर हुस्नकी दुनियामें है इक गूना तग़य्युर[4]
है ज़ूद पशेमाँका[5] हर अन्दाज़ पशेमाँ[6]

फिर छेड़ती हैं मेरी तमन्नाओंको नज़रें
फिर रूहको[7] तज्दीदे-मुहब्बतका है अरमाँ

फिर याद दिलाती है मुझे अहदे-गुज़िश्तः[8]
क्यों होते हैं फिर मेरी तबाहीके यह सामाँ

औरतकी अदाएँ न हों बेबाक इलाही!
औरतकी अदाओंसे लरज़ जाता है ईमाँ

'नज्मः' न कहीं मुझको गुनहगार[9] बनादें
यह बहकी हुई रात यह हँसते हुए तारे

इतना बुलन्द ज़ौक़[10] नहीं अहले इश्क़[11] का
यह क्या समझके हुस्नने आँसू बहा दिये ?

---

१. इश्क़की नवीनता, २. कोना, ३. क़यामती, ४. क्रान्ति,परिवर्त्तन, ५. शीघ्र भूल माननेवालेका, ६. प्रत्येक भाव लजालू, ७. आत्माको, ८. बीते हुए दिन, ९. अपराधी, १०. उच्चरुचि, ११. प्रेमियोंका ।

वहकी हूँ मैं लतीफ़[1] जवानीके कैफ़से[2]
हर चीज़को शराब किये जा रही हूँ मैं
कितना बुलन्द है मेरी तामीरका[3] मज़ाक़?
तारोंको आफ़ताब[4] किये जा रही हूँ मैं
क्यों मैं गुनाहे-इश्क़से[5] डरती हूँ इस क़दर
हस्तीको क्यों अज़ाब[6] किये जा रही हूँ मैं

जब मेरे पास वे नहीं होते
उनसे होती हैं राज़की[7] बातें
जिनपै मौसीक़ियोंको[8] वज्द[9] आये
हाय! उस मस्ते - नाज़[10] की बातें

आना किसीका आज भी मुमकिन नहीं, मगर
क्यों देरसे सिंगार किये जा रही हूँ मैं?

मेरी दोशीज़गी[11] जब फूल बनकर मुसकराती है
गुनाहे-इश्क़का दामन पै धब्बा देख लेती हूँ

वे जब सामने थे अदब दरमियाँ था
उन्हें देख लेनेका मौक़ा कहाँ था

---

१. लावण्यमयी, २. मादकतासे, ३. निर्माणका, ४. सूर्य्य, ५. प्रेम-अपराधसे, ६. दुःखी, ७. भेदकी, ८. संगीतोंको, ९. तल्लीनता, वेहोशी, १०. प्रियतमकी, ११. कुआँरापन।

यह किसने डूबती नब्ज़ों पै रखा दस्ते-नाज़[1] अपना
कि दुनिया मेरी नज़रोंमें जवाँ मालूम होती है

फ़ना[2] हो गया आदमी इश्क़ करके
ख़िरदकी[3] कोई बात उसने न मानी

चाँदनी, मै, बहार, ख़िलवते-नाज़[4]
उनकी बाहोंमें झूम जाने दे

कभी इधर भी चले आओ कैफ़[5] बरसाते
सबूकदेकी फ़ज़ाएँ[6] सलाम कहती हैं
ख़याले-दोस्त ! यह चुपके-से उनसे कह देना
तुम्हें किसीकी वफ़ाएँ सलाम कहती हैं

आओ सीनेसे लगाकर दूँ तुम्हें दादे-वफ़ा
यह सुता चेहरा, यह ग़म, यह चश्मे-तर मेरे लिए ?

---

१. नज़ाकत भरा हाथ, २. मिट गया, ३. अक्लकी, ४. प्रियतमका एकान्त, ५. नशा, मस्ती, ६. मदिरालयकी बहारें ।

'नज्म':—सुश्री नज्म: रहमतअल्लह बी.ए. लाहौरी

अहदे-रफ़्त:[1]

बहारे जाँफ़ज़ा[2] जाकर चमनसे फिर भी आती है
घटा काली बरसकर इक दफ़ा फिर भी तो छाती है
सितारे दिनको बुझ जाते हैं फिर शबको[3] चमकते हैं
फ़लकपर[4] रातभर शोख़ीसे हँस-हँसकर दमकते हैं
शफ़क़की[5] झीलमें ख़ुर्शीद[6] शबको डूब जाता है
दरे-क़सरे-उफ़कसे[7] झाँककर फिर मुसकराते हैं
अगर मुर्झा गये हैं फूल और गुञ्चे तो क्या पर्वा
परिन्दे हैं अगर मग़मूम[8] गुलशनके तो क्या पर्वा
ख़िज़ाँके[9] बाद यह फूल और गुञ्चे फिर भी महकेंगे
बहार आते ही तायर[10] डालियों पै फिर भी चहकेंगे
अगर तारीक[11] रात आती है ऐ हमदम ! तो आने दे
अगर जंगलकी नद्दी ख़ुश्क होती है तो हो जाये
कभी तो चाँदनी रात आके यह ज़ुल्मत मिटायेगी
यह नद्दी फिर सुरीले और शीरीं[12] गीत गायेगी
निशाँ[13] गुज़री हुई घड़ियोंका लेकिन फिर नहीं मिलता
कँवल मुर्झाके दिलका इक दफ़ा फिरसे नहीं खिलता

---

१. बीते दिन, २. प्राण-संचारक, ३. रातको, ४. आकाशपर, ५. सूर्य्यास्त लालीकी ६. सूर्य्य, ७. आकाश रूपी प्रासादके द्वारसे, ८. रंजीदा, ९. पतझड़के, १०. पक्षी, ११. अँधेरी, १२. मधुर, १३. निशान।

आमदे-बहार

गुलशनमें किस अदासे है आई हुई बहार
फूलों पै हुस्न बनके है छाई हुई बहार
मसरूफ़े-रक़्स[1] नदीके पानी पै है हुबाब[2]
करती है शोख़ी नाज़से अमवाज सतहे-आब[3]
गुलशनके फूल-पत्तों पै है आ गया निखार
वह तितलियोंका नाचना गुलशनमें बार-बार
बाग़ और बनमें घिरके वह आना सहाबका[4]
ठंढी हवामें झूमना बेख़ुद[5] गुलाबका
हल्के सुरोंमें गीत सुनाते हैं आबशार[6]
मसरूर[7] हैं बहार दर आग़ोश सब्ज़ः ज़ार[8]
हैं नग़्मःजन[9] तयूर,[10] हसीं हर दरख़्तपर
ख़ुद हुस्न हुक्मरान है हर कोहो-दस्तपर[11]
फूलोंकी शाल ओढ़के नाज़ाँ[12] है क़ायनात[13]
साज़े-तरब पै[14] आज ग़ज़ल ख़्वाँ है कायनात

---

१. नृत्यमें लीन, २. बुलबुला, ३. लहरें सतहके पानीसे, ४. बादलका, ५. मस्त, ६. झरने, ७. नशीली, मस्त, ८. गोदमें हरियाली लिये हुए, ९. गीत गाते हुए, १०. पक्षी, ११. पर्वत और जंगलमें, १२. गर्वीली, १३. दुनिया, १४. वाद्यपर।

'नजमी'—सुश्री ताहिरा नजमी

ग़ज़ल

क्या कहूँ फिर किसको ताबे-जल्वए जानाना[1] थी
ख़ुद निगाहे-शौक़ ही जब दीदसे[2] बेगाना[3] थी
दिलमें इक दुनियाके पिन्हाँ उल्फ़ते-जानाना[4] थी
उसकी महफ़िलमें निगाहे-शौक़ भी बेगाना थी
देखना एजाज़[5] उसके इल्तफ़ाते - नाज़का[6]
आर्ज़ू[7] ख़ुद आज वक़्फ़े - सज्दए शुक्राना[8] थी
क़िस्सए - दिल बेख़ुदीमें कुछ कहा कुछ रह गया
हसरते - अर्ज़े - मुहब्बत कितनी बेताबाना[9] थी
रंगे - मस्तीमें थी महफ़िल सर-ब-सर डूबी हुई
गर्दिशे - चश्मे - फ़सूँ[10] गर गर्दिशे - पैमाना[11] थी
हाल 'नजमी' से तजाहुलके[12] बरतनेका सबब
मैंने माना आपको अग़ियार[13] की परवा न थी

---

१. प्रियतमका जल्वा देखनेका चाव, २. सूरतसे, ३. अपरिचित, ४. प्रेमीकी मुहब्बत छिपी हुई, ५. जादू, ६. हावभावकी कृपाओंका, ७. इच्छा, ८. उपासनाकी अनुगृहीत, ९. बेताब, १०. जादूगर प्रियतमकी आँखें, ११. मदिरापानकी तरह घूम रही थीं, १२. उपेक्षाभावके, १३. ग़ैरकी।

'नवेद'—सुश्री शमीम नवेद

रातकी तन्हाइयाँ[1] हैं और हम
घुटके मर जायें न इस आलममें[2] हम
जानते हैं, राहे-ग़मके[3] पेचो-ख़म[4]
बढ़ गये जोशे - मुहब्बतमें क़दम
तुमने नज़रें फेर लीं तो क्या हुआ
रास हमको आ चुके हैं, दर्दे-ग़म
मरहबा[5] रंगे - ख़लूसे - मैकदा[6]
तौबा - तौबा फ़ित्नए - दैरो - हरम[7]
इक फ़साना ही ग़मे-हस्ती सही
इक हक़ीक़त है मगर, हस्तीए-ग़म
अपनी बर्बादीका शिकवा क्या करें
ज़ब्ते - ग़मका और खुलना है भरम
ज़िन्दगीमें ग़म न होता गर 'नवेद'[8]!
कर न सकते थे ख़ुशीकी क़द्र हम

---

१. अकेलापन, २. स्थितिमें, ३. दुःखोंके मार्गके, ४. घुमाव और चक्कर, ५. शाबास, ६. मदिरालयका सौजन्य, ७. मन्दिर-मस्जिदकी घातोंसे कान पकड़े, ८. निमंत्रण, शुभसूचना ।

'नसरीं'[1]—सुश्री आबद: ख़ानम नसरीं मथरावी

ग़ज़ल

ख़बर मेरी न ली बरबाद करके फ़ित्न: गर तूने
मैं तकती रह गई और फेर ली अपनी नज़र तूने
सज़ा मिलती है लेकिन बेवफ़ा इतनी नहीं मिलती
ज़रा-से जुर्मे-उल्फ़तपर सताया उम्र भर तूने
फ़रेबे-कामयाबी ऐ दिले-मुज़्तर[2] मुबारक हो
इक उम्मीदे-असरपर आह खींची रातभर तूने

अपने ग़मका मुझे कहाँ ग़म है
तेरे ग़मसे यह आँख पुरनम[3] है
है पसीना जो उनके आरिज़[4] पर
दामने - गुल[5] पै जैसे शबनम[6] है
जिसको उल्फ़त किसीसे हो उसकी
यह समझ लो कि ज़िन्दगी कम है
इस तजाहुलसे[7] रंज हो कि न हो
मुझसे कहते हैं "तुझको क्या ग़म है"?

---

१. सेवतीका फूल, २. तड़पते हुए दिल, ३. अश्रुपूर्ण, ४. कपोलोंपर, ५. फूलोंपर, ६. ओस, ७. अनजानपनसे ।

इश्क़की किस तरह न क़द्र करें
जिस पै दारो - मदारे - आलम[1] है
मेरी किश्ती किनारे पै डूबी
यह करम नाख़ुदाका[2] क्या कम है
गर वह नाज़ाँ[3] हैं हुस्नपर 'नसरीं' !
मनसबे-इश्क़[4] अपना क्या कम है ?

१. संसारकी निर्भरता, २. मल्लाहका, ३. गर्वीले, ४. प्रेम-पद ।

'नसीम'[1]—सुश्री नक्हत नसीम

तल्ख़ी[2]

कौन-सी रात थी जो अश्क[3] बहाते न कटी
कौन-सा दिन ग़मे-फ़रदामें[4] गुज़ारा न गया
कब तबस्सुम[5] मेरा अश्कोंसे सँवारा न गया
अब्रे-रहमतसे[6] भी क़िस्मतकी सियाही न छुटी

आसमाँ चाँद सितारोंसे सँवरता ही रहा,
धुल सका फिर भी न तारीक ख़लाओंका गुबार[7]
बन न पाई कोई तसवीर हसीन-ओ-ज़रकार
नूर हर ज़र्रए-आलमपै[8] बिखरता ही रहा

छीन भी लेता है तू मुझसे अगर ग़म अपना
तेरे ग़मके सिवा ग़म हाय दिगर[9] और भी हैं
मंज़रे-दर्द[10] अभी मुहताजे-नज़र[11] और भी हैं
इतनी महदूद[12] नहीं मेरे दुःखोंकी दुनिया

---

१. सुगन्धित वायु, २. कटुता, अरुचिकर, ३. आँसू, ४. आनेवाले दिनकी चिन्तामें, ५. मुसकान, ६. ईश्वरीय वर्षासे, ७. अँधेरी गुफ़ाओंकी धूल, ८. संसारके कण-कणपर, ९. अन्य, १०. दुःखोंके दृश्य, ११. नज़रके मुहताज, १२. सीमित ।

ग़मसे तपते हुए लमहाते-जवानीकी[१] क़सम
चाँदनी, मौसमे-गुल, नर्म हवा, कुछ भी नहीं
नग़मा-ओ-साज़ मए होशरुबा कुछ भी नहीं
मौत और ख़ूनके दरियाकी रवानीकी क़सम

ज़हनमें[२] बनते हैं जन्नतके निराले नक़्शे
दोज़ख़ें नाचने लगती हैं, इन ईवानोंमें[३]
अहरमन[४] चीख़ता है जंगके मैदानोंमें
ख़ूनमें डूबने लगते हैं सुनहरी सपने

क़ैसरी[५] भेंट लिया करती है इंसानोंकी
जाल फैलाये हुए आहनी दस्तूरोंका[६]
ख़ुसरवी[७] ख़ून पिया करती है, मजबूरोंका
किस क़दर तल्ख़ हक़ीक़त है इन अफ़सानोंकी

रज्अत[८]

मैं हसीन कलियोंसे आग़ोश[९] सजा लूँ तो क्या
अपने ग़मख़ानोंमें[१०] इक शमअ[११] जला लूँ तो क्या
मुसकरा लूँ भी तो क्या साज़ बजा लूँ तो क्या
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार[१२] तो मिटनेसे रही

---

१. जीवन-क्षणोंकी, २. मस्तिष्कमें, ३. महलोंमें, ४. बदीका ख़ुदा, ५. बादशाहतें, ६. लोहे जैसी कठोर रिवाजोंका, ७. धनसत्तावादी नीति, साम्राज्य-लोलुपता, ८. पुरातन विचार, प्रगतिशीलताका अभाव, ९. गोद, १०. दुःखके अँधेरेमें, ११. दीपक, १२. वार्तालापकी कटुता।

ख़्वाबसे अपने ज़ुलेख़ा भी हो बेदार तो फिर
हो भी जाये कोई यूसुफ़का ख़रीदार तो फिर
एक आलम है हक़ीक़तसे ख़बरदार तो फिर
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

यह रविश[1] और यह हालात बदल भी जायें
यह तसव्वुर यह ख़यालात बदल भी जायें
यह शऊर और यह जज़्बात[2] बदल भी जायें
वक़्तकी तल्ख़िए - गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

चूम लूँ चाँदके शफ़्फ़ाफ़[3] किनारे भी अगर
तोड़ लूँ उड़के यह रंगीन सितारे भी अगर
मोड़ दूँ ज़ीस्तके[4] बहते हुए धारे भी अगर
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

पी भी लूँ मस्त निगाहोंके इशारोंसे अगर
तल्ख़िए-ज़ीस्त मिटा भी दूँ उठाकर साग़र
मंज़रे-ग़मको[5] बना लूँ भी जो फ़िरदौसे-नज़र[6]
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

घुटके रह जायगी इक दिन यह सिसकती आवाज़
मुन्तशिर[7] टूटके हो जायगा शीराज़ए-राज़[8]
जल्वए - नाज़से भर जायगी आग़ोशे-नियाज़
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

---

१. ढंग, २. भाव, ३. निर्मल, ४. ज़िन्दगीके, ५. दुःखोंके वातावरणको, दृश्यको, ६. दृष्टिका स्वर्ग, ७. छिन्न-भिन्न, ८. भेदोंका समूह ।

ग़मसे तपते हुए लमहाते-जवानीकी[१] क़सम
चाँदनी, मौसमे-गुल, नर्म हवा, कुछ भी नहीं
नग़मा-ओ-साज़ मए होशरुबा कुछ भी नहीं
मौत और ख़ूनके दरियाकी रवानीकी क़सम

ज़हनमें[२] बनते हैं जन्नतके निराले नक़्शे
दोज़ख़ें नाचने लगती हैं, इन ऐवानोंमें[३]
अहरमन[४] चीख़ता है जंगके मैदानोंमें
ख़ूनमें डूबने लगते हैं सुनहरी सपने

क़ैसरी[५] भेंट लिया करती है इंसानोंकी
जाल फैलाये हुए आहनी दस्तूरोंका[६]
ख़ुसरवी[७] ख़ून पिया करती है, मजबूरोंका
किस क़दर तल्ख़ हक़ीक़त है इन अफ़सानोंकी

रजअ़त[८]

मैं हसीन कलियोंसे आग़ोश[९] सजा लूँ तो क्या
अपने ग़मख़ानोंमें[१०] इक शमअ़[११] जला लूँ तो क्या
मुसकरा लूँ भी तो क्या साज़ बजा लूँ तो क्या
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार[१२] तो मिटनेसे रही

---

१. जीवन-क्षणोंकी, २. मस्तिष्कमें, ३. महलोंमें, ४. बदीका ख़ुदा, ५. बादशाहतें, ६. लोहे जैसी कठोर रिवाजोंका, ७. धनसत्तावादी नीति, साम्राज्य-लोलुपता, ८. पुरातन विचार, प्रगतिशीलताका अभाव, ९. गोद, १०. दुःखके अँधेरेमें, ११. दीपक, १२. वार्तालापकी कटुता।

ख़्वाबसे अपने ज़ुलेख़ा भी हो बेदार तो फिर
हो भी जाये कोई यूसुफ़का ख़रीदार तो फिर
एक आलम है हक़ीक़तसे ख़बरदार तो फिर
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

यह रविश[1] और यह हालात बदल भी जायें
यह तसव्वुर यह ख़यालात बदल भी जायें
यह शऊर और यह जज़्बात[2] बदल भी जायें
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

चूम लूँ चाँदके शफ़्फ़ाफ़[3] किनारे भी अगर
तोड़ लूँ उड़के यह रंगीन सितारे भी अगर
मोड़ दूँ ज़ीस्तके[4] बहते हुए धारे भी अगर
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

पी भी लूँ मस्त निगाहोंके इशारोंसे अगर
तल्ख़िए-ज़ीस्त मिटा भी दूँ उठाकर साग़र
मंज़रे-ग़मको[5] बना लूँ भी जो फ़िरदौसे-नज़र[6]
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

घुटके रह जायगी इक दिन यह सिसकती आवाज़
मुन्तशिर[7] टूटके हो जायगा शीराज़ए-राज़[8]
जल्वए-नाज़से भर जायगी आग़ोशे-नियाज़
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

---

१. ढंग, २. भाव, ३. निर्मल, ४. जिन्दगीके, ५. दुःखोंके वातावरणको, दृश्यको, ६. दृष्टिका स्वर्ग, ७. छिन्न-भिन्न, ८. भेदोंका समूह।

अब याद नहीं

तारोंसे सोना बरसा था, चश्मोंसे[1] चाँदी बहती थी
फूलोंपर मोती बिखरे थे ज़र्रोंकी[2] क़िस्मत चमकी थी
कलियोंके लबपर[3] नग़मे[4] थे शाख़ोंपै वज्द-सा[5] तारी था
ख़ुशबूके ख़ज़ाने लुटते थे और दुनिया बहकी-बहकी थी
ऐ दोस्त ! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

सूरजकी नरम शुआओंसे[6] कलियोंके रूप निखरते हों
सरसोंकी नाज़ुक शाख़ोंपर सोनेके फूल लचकते हों
जब ऊदे-ऊदे बादलसे अमृतकी धारें बहती थीं
और हल्की-हल्की ख़ुनकीमें दिल धीरे-धीरे तपते थे
ऐ दोस्त ! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

फूलोंके साग़र अपने थे, शबनमकी सहबा[7] अपनी थी
ज़र्रोंके हीरे अपने थे तारोंकी माला अपनी थी
दरियाकी लहरें अपनी थीं लहरोंका तरन्नुम[8] अपना था
ज़र्रोंसे लेकर तारों तक यह सारी दुनिया अपनी थी
ऐ दोस्त ! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

हम दोनों एक हक़ीक़त[9] थे, हम दोनों एक फ़साना[10] थे
हम आप ही अपनी दुनिया थे हम दुनियासे बेगाने[11] थे

---

१. झरनोंसे, २. अणुओंकी, कणोंकी, ३. ओठपर, ४. संगीत, ५. मोहनी-सी, ६. किरणोंसे, ७. ओसकी मदिरा, ८. संगीत, ९. सत्य, वास्तविकता, १०. कहानी, ११. अनजान।

हम अपने राग पै हँसते थे हम अपनी आगमें जलते थे
हम अपने ही ऐशका नग़मा थे हम अपने ही ग़मका गाना थे
ऐ दोस्त! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

यह साज़के पर्दे, यह मुतरिब[1] सब अपना तरन्नुम[2] खो बैठे
यह फूल, यह कलियाँ, यह तारे, सब अपना तबस्सुम[3] खो बैठे
यह नर्म हवाएँ, यह बादल, सब भूल गये शायद हमको
ख़ामोश मनाज़िर[4] फ़ितरतके[5] सब अपना तकल्लुम[6] खो बैठे
ऐ दोस्त! मुझे भी वह लमहे[7] अब याद नहीं, अब याद नहीं

दोराहा

"मैं कहाँ जाऊँ?"........यह आवाज़ किधरसे आई?
जैसे साग़र[8] कोई खुनके कोई शीशा टूटे
जैसे शर्मीले मुग़न्नीका[9] इरादा टूटे
जैसे सहराओंकी[10] तनहाईमें नैकी[11] आवाज़
जैसे लहरोंपै हवाओंकी थिरकता हुआ साज़[12]
"मैं कहाँ जाऊँ?"........यह आवाज़ किधरसे आई?
मैं हूँ मग़मूम[13] कि यह साज़ भी मग़मूम-से हैं
यह मेरे अश्क हक़ीक़त[14] हैं, कि मौहूम-से[15] हैं

---

१. गायक, २. संगीत, ३. मुसकान, ४. दृश्य ५. प्रकृतिके, ६. बात करना, ७ क्षण, ८. मदिरा-पात्र, ९. गायकका, १०. रेगिस्तानकी, ११. लयकी, १२. वाद्य, १३. रंजीदा, १४. वास्तविक, १५. भ्रममूलक-से।

जैसे तनहाईमें इक साज़ बजाता हो कोई
जैसे ख़ामोश सितारोंको रुलाता हो कोई
"मैं कहाँ जाऊँ ?"·········यह आवाज़ किधरसे आई ?

कौन गुमनाम ख़लाओंमें[१] बुलाता है मुझे ?
कौन मानूस-सा[२] इक राग सुनाता है मुझे ?
जैसे गुज़रे हुए लमहोंको[३] पुकारे कोई
जैसे डूबी हुई किश्तीको उभारे कोई
और यह आवाज़·········यह आवाज़ किधरसे आई ?

सिर्फ़ नग़मोंके सहारोंपै कोई जी न सका
साग़रे-अश्क भी ता-ज़ीस्त[४] कोई पी न सका
ज़िन्दगी ऐशो - मुहब्बतके सिवा भी कुछ है
ज़िन्दगी नग़मए - जन्नतके सिवा भी कुछ है
"मैं कहाँ जाऊँ ?"·········यह आवाज़ किधरसे आई ?

आ ! कि तलवार उठा, साज़के दिन बीत गये
यह अलम[५] हाथमें ले नाज़के[६] दिन बीत गये
तल्ख़िए - ज़ीस्तको[७] नग़मोंसे[८] भुलाना कबतक ?
ख़ूँ बहानेकी जगह अश्क[९] बहाना कबतक ?
"मैं कहाँ जाऊँ ?"·········यह आवाज़ किधरसे आई ?

---

१. अज्ञात स्थानोंमें, २. परिचित-सा, ३. क्षणोंको, ४. जीवन पर्यन्त, ५. झण्डा, ६. नखरोंके, हाव-भावके, ७. जिन्दगीकी कटुताको, ८. गीतोंसे, ९. आँसू ।

आ ! कि तारोंकी क़तारें हैं, जिलोमें[1] तेरे
उठ ! कि जन्नतकी बहारें हैं, जिलोमें तेरे
चल ! कि हर गामपै[2] सज्दोंकी[3] ज़रूरत ही नहीं
सुन ! कि अब तुझसे ग़ुलामीको मुहब्बत ही नहीं
इस दोराहे पै............यह आवाज़ किधरसे आई ?

१. बागडोर, कमानमें, २. क़दमपर, ३. उपासनाकी ।

'नाज़'—सुश्री वीनारानी 'नाज़'

वह दिल नहीं है कि जिसमें नासेह[1] सकून[2] है, बेकली नहीं है
वह जान क्या है जो सोज़े - उल्फ़तमें[3] ग़मसरापा[4] बनी नहीं है

क़दम - क़दमपर नफ़स - नफ़सपर[5] पुकारा जिसको दिले - हज़ींने[6]
न अपनी चश्मे - करमसे[7] देखा, पुकार दिलकी सुनी नहीं है

चमन है रंगीं, बहार रंगीं, बहारकी हर अदा है रंगीं
अज़लसे[8] दिल जिसको ढूँढ़ता है चमनमें वोह फूल ही नहीं है

अजब है हस्ती, हमारी हस्ती, हमारी दुनिया है ख़ूब दुनिया
मसर्रतोंका[9] तो ज़िक्र क्या है मुसीबतोंकी कमी नहीं है,

---

१. नसीहत देनेवाले, २. चैन, ३. प्रेम-अग्निमें, ४. साक्षात् दुःख-रंज, ५. श्वास-श्वासपर, ६. दुःखी दिलने, ७. कृपालु आँखोंसे, ८. सदैवसे, ९. खुशियोंका ।

'नाज़'—सुश्री नाज़ बिलगरामी

ग़ज़ल

ज़िन्दगानी कट रही है एक ही उम्मीदपर
जी रही हूँ बस तुम्हारी आज़ूए - दीदपर[1]
तुमको क्या एहसास[2] इक सरगश्तःओ-नाशाद[3] का
तुमसे बेदर्द ? और दर्द आशिक़े - बरबादका
सब बहारें गुलशने - हस्तीकी वीराँ हो चुकीं
सब तमन्नाएं मेरी ख़ूँनाबः अफ़शाँ[4] हो चुकीं
ज़िन्दगी क्या है अब इक आज़ार[5] है मेरे लिए
गुलशने - हस्तीका हर गुल ख़ार[6] है मेरे लिए
वे भी क्या दिन थे कि मेरी आज़ूएँ शाद थीं
क्या ज़माना था कि दिलकी बस्तियाँ आबाद थीं
फिर मुहब्बतपर बहार आये, तमन्ना हों जवाँ
फिर उमीदोंपर शबाब[7] आ जाये दुनिया हो जवाँ
फिर चले बादे - बहारी[8], फिर खिलें गुलहाए-ऐश
नग़माहाए - ऐशसे मामूर हो दुनियाए - ऐश

खोलदे तू 'नाज़'पर यारब ! किताबे - ज़िन्दगी
हालमें[9] पढ़ले वह मुस्तक़बिलका बाबे-ज़िन्दगी[10]

---

१. देखनेकी आशापर, २. ज्ञान, आभास, ३. दुःखी और रंजीदाका, ४. माथेका रक्तपूर्ण सिंगार, ५. मुसीबत, ६. काँटा, ७. जवानी, ८. मृदु-पवन, ९. वर्तमानमें, १०. भविष्य जीवनका परिच्छेद ।

हुस्नका इश्क़ राज़[1] क्या जाने ?
सादगीए - नियाज़[2] क्या जाने ?

हाय री सादगी मुहब्बतकी
यह नशेबो - फ़राज़[3] क्या जाने ?

चोट - सी दिल पै लग गई कैसी
निगहे - नीमबाज़[4] क्या जाने ?

कूच - ए - इश्क़की[5] कठिन राहें
ख़िज्र - सा पाकबाज़ क्या जाने ?

'नाज़'के दिल पै क्या गुज़रती है
तुझ-सा ज़ालिम यह राज़ क्या जाने ?

---

१. भेद, २. नम्रताकी सादगी, ३. परिणाम, ४. अधखुली आँखें, ५. प्रेमगलीकी ।

'नाहीद'[1]—सुश्री नीलोफ़र 'नाहीद'

ग़ज़ल

ख़ुशी जो आरज़ी शै[2] है न मैं कभी लूँगी
जो हो सका तो बस इक सोज़े-दायमी[3] लूँगी

जिगरमें दर्द, रगो-पै में टीस, आँखोंमें अश्क
तेरी ख़ुशी है तो मैं इस तरह भी जी लूँगी

निहाँ[4] है ख़ूने-जिगर ही में गर हयाते-दवाम[5]
तो मुसकराके मैं ख़ूने-जिगर भी पी लूँगी

रमूज़े - दिलको[6] छुपानेके वास्ते ऐ दोस्त !
तेरी क़सम है कि मैं अपने होंट सी लूँगी

दलीले-राहे-मुहब्बत ख़िरद[7] तो बन न सकी
जुनूने - शौक़से[8] अब दर्से - रहबरी[9] लूँगी

समझती हूँ जिन्हें नक़्क़ादे[10]-शेरो-फ़न 'नाहीद'
उन्हींसे आज मैं दादे-सुख़नवरी लूँगी

---

१. शुक्रग्रह, २. अस्थायी वस्तु, ३. स्थायी तड़प, ४. छिपा हुआ, ५. अमरत्व, ६. दिलकी बातको, ७. अक़्ल, ८. उत्साह रूपी लगनसे, ९. मार्ग-दर्शकका पाठ, १०. आलोचक ।

अन्दाज़े-सितम

अरबाबे-मुहब्बतने[1] तराशे हैं सनम और
बुतख़ानए-फ़ितरतका न खुल जाये भरम और

करता रहे सैराबे-ग़मे-दिल[2] कोई ऐ काश !
और मैं यह कहे जाऊँ "दिये जा मुझे ग़म और"

कुछ कम नहीं तो भी, मगर ऐ गर्दिशे-दौराँ[3] !
हम क्या कहें उस बुतका है अन्दाज़े-सितम और

इस राज़से वाक़िफ़ नहीं काफ़िर हो कि मोमिन
दुनियाए-मुहब्बतके हैं दैर[4] और हरम[5] और

जितना कोई मिटता है, रहे-इश्क़में[6] 'नाहीद' !
उनकी निगहे-नाज़का होता है करम[7] और

इश्क़की यादगार लेके चले
इक दिले-दाग़दार लेके चले

किससे कहिए कि हम बहारमें भी
ग़मे-फ़स्ले-बहार लेके चले

जो किसीसे न उठ सका वह बार[8]
आपके जाँ-निसार[9] लेके चले

---

१. प्रेमियोंने, २. दिलके दुःखोंको हरभरा, ३. दुनियाकी मुसीबतें, ४. मन्दिर, ५. मस्जिद, ६. प्रेम-मार्गमें, ७. कृपा, ८. बोझ, ९. जान-देनेवाले।

जाते-जाते भी तेरे कुश्तए-ग़म[1]
लज़्ज़ते - इन्तज़ार लेके चले
तेरी रहमतकी वुसअ़तोंके[2] लिए
गुनहे - बेशुमार[3] लेके चले
और होंगे जिन्हें नसीब हैं गुल
हम तो दामनमें ख़ार[4] लेके चले
जाते-जाते यह क्या ग़ज़ब ढाया
मेरा सब्रो-क़रार लेके चले
दामने-ग़ममें तेरी यादके साथ
गौहरे - आबदार[5] लेके चले

आज 'नाहीद' उनकी महफ़िलसे
आहे-सद शोला बार लेके चले

दामने-शकेबाई[6]

दिलने यूँ ली है आज अँगड़ाई
जैसे कोई मुराद बर आई[7]
आ रहे हैं खिंचे हुए जल्वे
किस क़दर पुर कशिश है तन्हाई

---

१. ग़ममें मिटे हुए, २. विस्तीर्णताके, ३. अनगिनत अपराध, ४. काँटे, ५. आबदार मोती, ६. सब्रका दामन, ७. इच्छा पूर्ण हुई।

'निक्हत'—सुश्री जहाँ निक्हत गुलशनाबादी

ग़ज़ल

ख़फ़ा हो किस लिए मैंने कहा क्या ?
बताओ तो हुई मुझसे ख़ता क्या ?

हसीनोंका जफ़ाकारी[1] है पेशा
फिर उनकी बेवफ़ाईका गिला[2] क्या ?

शिकिस्तः साज़[3]को क्यों छेड़ते हो ?
मेरे टूटे हुए दिलकी सदा[4] क्या ?

जो सरसे पाँव तक काफ़िर है काफ़िर
उन्हें नामे - ख़ुदासे वास्ता क्या ?

नहीं जब अम्ने - साहिलकी[5] ज़रूरत
तो फिर फ़िक्रे-ख़ुदा-ओ-नाख़ुदा[6] क्या ?

जफ़ा भी[7] अब तो उन्क़ा[8] हो गई है
वफ़ाका ज़िक्र ऐ 'निक्हत' ! भला क्या ?

---

१. ज़ुल्म करना, २. शिकायत, ३. टूटे वाद्यको, ४. आवाज़, ५. किनारेके सुखकी, ६. ईश्वर और मल्लाहकी चिन्ता, ७. बुराई, अत्याचार, ८. दुष्प्राप्य, एक पक्षीका नाम ।

'निक्हत'[1]—सुश्री शकीला बेगम निक्हत

बहार बनके तू आ जा कि जा चुकी है बहार

गुलोंको ओससे नहलाके जा चुकी है बहार
मुझे तो ख़ूनके आँसू रुला चुकी है बहार
मेरी तो दुनिया मिटाकर ही जा चुकी है बहार
फ़क़त मुझे यही नग़मः लिखा चुकी है बहार
बहार बनके तू आ जा कि जा चुकी है बहार

इन अन्दलीबोंके[2] नग्मोंकी लोरियोंकी क़सम
नसीमे-सुबहकी[3] उन मीठी थपकियोंकी क़सम
वोह तेरी यादकी दिलदोज़[4] हिचकियोंकी क़सम
तुझे गुलिस्ताँकी[5] रंगीन तितलियोंकी क़सम
बहार बनके तू आ जा कि जा चुकी है बहार

---

१. सुगन्ध, २. बुलबुलोंके, ३. प्रातःकालीन वायुकी, ४. दिलमें असर करनेवाली, ५. उद्यानकी ।

'निगाह'—सुश्री ज़हा 'निगाह'

छलक रही है मएनाब[1] तिश्नगीके[2] लिए
सँवर रही है तेरी बज़्म[3] बरहमीके[4] लिए

नहीं-नहीं हमें अब तेरी जुस्तजू[5] भी नहीं
तुझे भी भूल गये हम तेरी ख़ुशीके लिए

जहाने-नौका[6] तसव्वुर हयाते-नौका[7] ख़याल
बड़े फ़रेब[8] दिये तुमने बन्दगीके लिए

कहाँके इश्क़ो-मुहब्बत, किधरके हिज्रो-विसाल[9]
अभी तो लोग तरसते हैं ज़िन्दगीके लिए

जो ज़ुल्मतोंमें हवीदा[10] हो क़ल्बे-इंसाँसे[11]
ज़ियानवाज़[12] वह शोला[13] है तीरगीके[14] लिए

न मंज़िलोंकी तमन्ना, न रहगुज़र[15]की तलाश
न जाने किसपै भरोसा है रहबरी[16]के लिए

जो कर रहे हैं पसे-पर्दा, दुश्मनी अबतक
बड़े ख़ुलूससे[17] आये थे दोस्तीके लिए

१. निर्मल और ख़ालिस मदिरा, २. प्यासके लिए, ३. महफ़िल, ४. तितर-बितर होनेके लिए, ५. तलाश, ६. नवीन युगका, ७. नव-जीवनका, ८. चकमे, ९. विरह और मिलन, १०. प्रकट, ११. मानव-हृदयसे, १२. सूर्य्य, १३. चिनगारी, १४. अँधेरेके, १५. पगडण्डीकी, १६. मार्ग दिखानेके लिए, १७. सहृदयतासे।

मए-हयातमें[1] शामिल है तल्ख़िए-दौराँ[2]
जभी तो पीके तरसते हैं दोस्तीके लिए
तेरे जहानकी हर दिलकशी सलामत है
मेरी 'निगाह' भटकती है, आदमीके लिए

यह हुक्म है कि अँधेरोंको रोशनी समझो
मिले नसीब तो कोहो-यमनकी[3] बात करो
फ़रेब ख़ुर्दए-मंज़िल[4] हैं हमको क्या मालूम
ब-तर्ज़े-राहबरी[5] रहज़नीकी[6] बात करो
क़दम-क़दम पै फ़रोज़ाँ[7] हैं आँसुओंके चिराग़
इन्हें बुझाओ तो सुबहे-वतनकी बात करो
बहार आये तो चुप चाप ही गुज़र जाये
न रंगो-बूकी, न सरू-ओ-समनकी[8] बात करो
ख़िज़ाँने[9] आके कहा मेरे ग़मसे क्या हासिल ?
जहाँ बहार लुटी उस चमनकी बात करो
नहीं है मै[10] न सही चश्मे-इल्तफ़ात[11] तो है
नई है बज़्म[12] तरीक़े-कुहनकी[13] बात करो

---

१. जीवन-मदिरामें, २. ज़मानेकी कटुता, ३. पर्वतों और लाल याक़ूतोंके देशकी, ४. मार्गमें धोका खाये हुए, ५. मार्ग-दर्शकके ढंगपर, ६. लुटेरेपनकी, ७. प्रकाशवान्, ८. सरू वृक्ष और चमेलीकी, ९. पतझड़ने, १०. मदिरा, ११. कृपादृष्टि, १२. महफ़िल, १३. पुराने ढंगकी ।

जहाँ पर मुहरे-ख़ामोशी लगी है होंटोंपर
जो कर सको तो उसी अंजुमनकी बात करो
हुज़ूर काफ़ी सुखन-फ़हम भी हैं फ़नकारो !
ग़ज़लके रंगमें दारो-रसनकी बात करो

सब्रो - ज़ब्तके लेके बेशुमार नज़राने
तेरी याद आई थी, आज मुझको समझाने
पा गये हैं मंज़िलको ख़ुद-ब-ख़ुद ही दीवाने
अक़्लके दोराहे पै खो गये हैं फ़रज़ाने[1]
तुमने बात कह डाली, कोई भी न पहचाना
हमने बात सोची थी, बन गये हैं अफ़साने
उन नई बहारोंपर उन नये नज़ारोंपर
एक रिन्द[2] ही क्या हैं, रो रहे हैं मैख़ाने[3]
हाय क्या मुसीबत है, हाय क्या क़यामत[4] है
हम ही खा गये धोका, हम चले थे समझाने

ख़ुश जो आये थे पशेमान[5] गये
ऐ तग़ाफ़ुल[6] तुझे पहचान गये
ख़ूब है साहिबे-महफ़िलकी अदा
कोई बोला तो बुरा मान गये

१. बुद्धिमान्, दक्ष, २. मद्यप, ३. मदिरालय, ४. प्रलय, ५. शर्मिन्दा, ६. उपेक्षा ।

कोई धड़कन है, न आँसू, न उमंग
वक़्तके साथ यह तूफ़ान गये

इसको समझे कि न समझे लेकिन
गर्दिशे-दहर[1] तुझे जान गये

तेरी एक-एक अदा पहचानी
अपनी एक-एक ख़ता मान गये

उस जगह अक़्लने धोका खाया
जिस जगह दिल! तेरे फ़रमान गये

---

१. संसार-चक्र, दुनियाकी मुसीबत ।

'नुज़हत'[1]—सुश्री नुज़हत नजमी मुजफ़्फ़रनगरी

फ़रेबे-नज़र

दिलमें वह शर्मसार है अबतक
ख़ुद-ब-ख़ुद बेक़रार है अबतक
इश्क़की यादगार है अबतक
दिल मेरा दाग़दार है अबतक
हम पहुँच तो गये हैं मंज़िलपर
जुस्तजूए - क़रार[2] है अबतक
लाल-ओ-गुलकी चाक दामानी
मेरी आइनादार है अबतक
दिले-मायूसको[3] न जाने क्यों
जैसे कुछ इन्तज़ार है अबतक
उनकी हर बातपर ख़ुदा जाने
क्यों मुझे ऐतबार है अबतक
ज़ेरे-लब कौन गुनगुनाया था ?
रूह[4] वक़्फ़े-ख़ुमार[5] है अबतक
फ़स्ले-गुल[6] आगई मगर दिलको
इन्तज़ारे - बहार है अबतक
टूट जाये न दिल कहीं 'नुज़हत'
गृदिशे - रोज़गार है अबतक

१. पवित्रता, २. चैनकी तलाश, ३. निराश दिलको, ४. प्राण, ५. नग़मेमें मस्त, ६. बहार।

'नुद्रत'[1]—सुश्री सुरैय्या महमूद 'नुद्रत'

ग़ज़ल

अब तो नाकामी ही तक़्दीर बनी जाती है
ज़िन्दगी दर्दकी तसवीर बनी जाती है

तेरा मिलना ही था मेराजे-मुहब्बत[2] लेकिन
तुझसे दूरी मेरी तक़्दीर बनी जाती है

है करिश्मा यह अनोखा शबे-महजूरीका[3]
तीरगी[4] सुबहकी तनवीर[5] बनी जाती है

राहें मसदूद[6] हैं, महदूद[7] है दुनिया मेरी
ज़िन्दगी हलक़ए-ज़ंजीर[8] बनी जाती है

महफ़िले-हुस्नकी थी, ज़हनमें हल्की-सी झलक
वही फ़रदौसकी[9] तसवीर बनी जाती है

कौन-सा राज़[10] है, दिलका जो नहीं उन पै अयाँ[11]
ख़ामुशी ही मेरी, तक़रीर[12] बनी जाती है

आहकी बे-असरीका भी मुझे होश नहीं
बे-ख़ुदी[13] जल्वए-तासीर[14] बनी जाती है

---

१. नवीनता, २. प्रेमलक्ष, ३. विरह-रातका, ४. अँधेरापन, ५. ज्योति, ६. अवरुद्ध, रुकी हुई, ७. सीमित, संकीर्ण, ८. क़ैदी, परतंत्र, ९. जन्नत-की, १०. भेद, ११. प्रकट, १२. वाणी, वार्त्ता, १३. आत्मलीनता, बेहोशी, १४. प्रभावक ।

राज़े-ग़म[1] कैसे छुपाऊँ कि ख़मोशी भी मेरी
मेरे एहसासकी तफ़सीर[2] बनी जाती है
इक जफ़ा-पेशा[3] कि बेगाना अदाई[4] 'नुद्रत'!
मेरे हर ख़्वाबकी तावीर बनी जाती है

ग़ज़ल

तेरा राहमें आस्ताना[5] पड़ेगा
तो सरको ख़ुशीसे झुकाना पड़ेगा
तेरा ग़म मेरी ज़िन्दगी बन चुका है
ख़ुशीसे हर-इक ग़म उठाना पड़ेगा
मचल जायेंगे अश्क[6] आँखोंमें मेरी
तो दामन तुम्हींको बढ़ाना पड़ेगा
जो दुनिया बसाई थी उल्फ़तकी हमने
उसे अपने हाथों मिटाना पड़ेगा
यह राहे-वफ़ा, और यह पुरख़ार मंज़िल[7]!
सम्भलकर क़दम अब उठाना पड़ेगा
वह आतिश जो पिन्हाँ[8] है सीनेमें अबतक
उसे आँसुओंसे बुझाना पड़ेगा
सलामत रहे बेरुख़ी उनकी 'नुद्रत'
सिवा उनके हर शै भुलाना पड़ेगा

---

१. दुःखका भेद, २. भावोंका स्पष्टीकरण, ३. अत्याचार करना जिसका स्वभाव है, ४. अनजान-सा बननेवाला, ५. द्वार, ६. आँसू, ७. कण्टकाकीर्ण मार्ग, ८. छिपी हुई।

ग़ज़ल

शमएँ बुझीं, फ़लकसे[1] सितारे चले गये
उनसे बिछुड़के सारे सहारे चले गये
मौजे-बलाओ शोरिशे-तूफ़ाँका[2] क्या गिला[3]
पास आके और दूर किनारे चले गये
कैसी बहार, कैसा चमन और कहाँके फूल
तुम क्या गये यह सारे नज़ारे चले गये
तुम यूँ गये कि मुड़के भी देखा न एक बार
हम अश्कबार[4] तुमको पुकारे चले गये
मामूर[5] कर दिया था जिन्हें तुमने हुस्नसे
रातें गईं, वह चाँद सितारे चले गये
बे आसरा ख़ुदा न करे यूँ भी कोई हो
एक - एक करके सारे सहारे चले गये
'नुदरत' कभी तो आयेगा दौरे-बहार भी
इस आरज़ूमें[6] वक़्त गुज़ारे चले गये

ग़मकी यह रात ढले या न ढले
तीरगी[7] कहती है इक शमअ़[8] जले
अपनी महफ़िलकी बहारोंको सँभाल
तेरे दीवाने कहीं और चले

---

१. आकाशसे, २. लहरोंकी भयानकता और तूफ़ानके शोरका, ३. शिकायत, ४. अश्रुपूर्ण, ५. प्रकाशित, ६. उम्मीदपर, ७. अँधियारी, ८. मोमबत्ती ।

लौ हुई तेज़ चराग़े - दिलकी
अब कोई शमअ़ जले या न जले
जाने, है कौन - सी दुनिया आबाद
तेरी ज़ुल्फ़ोंकी घनी छाँव तले
हर क़दमपर है कोई मोड़ नया
कह दो 'नुदरत' से कि बच-बचके चले

धोके खाये हैं गो हज़ार अबतक
है मगर उनका एतबार अबतक
लग गई आग आशियाँको[1] मेरे
वर्क़[2] फिर क्यों है बेक़रार अबतक
जानती हूँ कि तुम न आओगे
फिर भी करती हूँ इन्तज़ार अबतक
गो तुम्हारी जफ़ासे हूँ वाक़िफ़
दिल मगर कर रहा है प्यार अबतक
जबसे उनसे निगाह चार हुई
ज़ख़्मे - दिल खाये बे शुमार अबतक
कैसी आई थी यह ख़िज़ाँ[3] 'नुदरत'!
कि फ़ज़ामें[4] है इन्तशार[5] अबतक

१. नीड़को, घरको, २. बिजली, ३. पतझड़, ४. वातावरणमें, ५. परेशानी ।

'नुसरत'[1]—सुश्री नुसरत क़ुरैशी

ख़ुदा मालूम

जब उसने मुझसे मेरा हाले-दिल किया मालूम
ख़ुद उसकी आँखमें आँसू थे क्यों ख़ुदा मालूम

हुए असीर[2], जला आशियाँ[3], गिरी बिजली
फिर उसके बाद गुलिस्ताँका[4] हाल क्या मालूम

बड़े दिनोंसे बहारोंकी आरज़ू थी मगर
लुटेंगे फ़स्ले-बहारोंमें यह न था मालूम

हवाए-तुन्द[5] है, तूफ़ाँ है, दूर साहिल[6] है
मेरे सफ़ीनेका[7] अंजाम[8] नाख़ुदा[9] मालूम

न दिलदही[10] न तशफ़्फ़ी[11] न इल्तफ़ात[12] ऐ दोस्त!
यह इब्तदाका[13] है आलम तो इन्तहा[14] मालूम

जफ़ासे पहले ज़रा यह तो सोच लें दिलमें
हुई जो वह भी हमें आपकी वफ़ा मालूम

कसक जो दर्दकी पूछो तो वह है ला-महदूद[15]
जो दिलकी चोटको पूछो तो वह है ना मालूम

---

१. सहायता, समर्थन, २. क़ैदी, बन्दी, ३. नीड़, घर, ४. उद्यानका, ५. प्रचण्ड हवा, आँधी, ६. किनारा, ७. नावका, ८. परिणाम, ९. मल्लाह, १०, ढारस, सान्त्वना, ११. तसल्ली, १२. कृपा, १३. प्रेमके प्रारम्भका, १४. अन्त, १५. असीमित ।

कुछ इस अदासे वह करते हैं मुझसे इस्तफ़सार[1]
कि जैसे उनको नहीं दिलका मुद्दआ[2] मालूम
हर-एक बातमें इल्ज़ाम दूसरोंको दिया
कभी किसीको न अपनी हुई ख़ता मालूम
ये मुद्दईसे[3] ज़ियादा हैं दुश्मनोंसे सिवा
समझ रहे हो तुम अपनोंको क्या खुदा मालूम
ज़माना रंग बदलता है किस तरह 'नुस्रत'
यह इन्क़िलाबके सदक़ेमें हो गया मालूम

१. प्रश्न, हाल-चाल पूछना, २. अभिप्राय, उद्देश्य, ३. वादीसे ।

'नूर'—सुश्री नूरजहाँ बेगम 'नूर' बदायूनी

औरत

औरत इस दुनियामें वह मज़मूअए-अज़्दाद[1] है
जिसके दिलमें वुस्अ़ते-अर्ज़ो-समाँ[2] आबाद है
हर कलीकी बू है यह, हर फूलका यह रंग है
देखकर नैरंगियाँ इसकी ज़माना दंग है
ज़ीनते-महफ़िल[3] भी है, आराइशे-ख़िल्वत[4] भी है
है कभी ग़ुंचा[5], कभी गुल[6], और कभी निकहत[7] भी है
इसकी पस्तीमें[8] निहाँ तहतुस्सराकी[9] पस्तियाँ
और इसकी रफ़अ़तें[10] बालाए-सतहे-आस्माँ[11]
इश्क़में है इसके मुज़मिर[12] सोज़िशे-बर्क़े-तपाँ[13]
हुस्न इसका आलमे-ईजादकी रंगीनियाँ[14]
पाँवमें हैं बेड़ियाँ लाखों मगर आज़ाद है
क़ल्बमें[15] जज़्बातकी दुनियाए-नौ आबाद[16] है
सादा दिल ऐसी कि बदले सूदके[17] ले ले ज़ियाँ[18]
नुक़्तादाँ ऐसी उड़ा दे अक़्लकी भी धज्जियाँ

---

१. पुरखोंकी समष्टि, पूर्वजोंकी श्रृंखलावर्द्धक, २. पृथ्वी-आकाशकी विस्तीर्णता, ३. महफ़िलकी शोभा, ४. एकान्तकी सजावट, ५. कली, ६. फूल, ७. सुगन्ध, ८. पतनमें, ९. पातालकी पतितावस्था छिपी हुई है, १०. उड़ान, उच्चता, ११. आकाशसे उच्च, १२. घुली-मिली, १३. बिजली-की तपिश, १४. संसारकी रौनक़, १५. दिलमें, १६. नवीन संसारकी भाव-नाओंका अस्तित्व, १७. लाभके, १८. हानि ।

गुंचए-फ़रदौस है बाग़े-इरमका फूल[1] है
आमिले-फ़ितरत[2] है यह, हर शै यहाँ मामूल है

बज़्मे-इशरत[3] आश्नाए-खन्दए-क़ल्क़ल[4] है यह
इस गुलिस्ताने जहाँकी[5] ख़ुशनवा[6] बुलबुल है यह

दस्ते-फ़ितरतमें[7] है इक तुर्फ़ा खिलौना इसकी ज़ात
है वजूद[8] इसका जहाँ में रौनक़े-बज़्मे-हयात[9]

नाज़ उठाती है, मगर ख़ुद भी सरापा नाज़ है
नग़मे रखती है मगर एक साज़े-बे-आवाज़ है

वजहे-शोरिश[10] भी, सकूने आलमे-इमकाँ[11] भी यह
क़ुल्ज़मे-तख़लीक़को[12] साहिल[13] भी यह तूफ़ाँ[14] भी यह

है वह दुख़्ते-नेक अख़्तर मादरे एय्यामकी[15]
जिसके ज़ुल्फ़ो-रुख़से[16] है तशरीह[17] सुबहो-शामकी

अलग़रज़ औरत है इक जामअ् किताबे-कायनात[18]
ग़ैर फ़ानी शै[19] थी, गर होती न दुनिया बेसबात[20]

---

१. जन्नतका फूल, २. कार्य रूपमें परिणत करनेवाली, ३. सुख देनेवाली महफ़िल, ४. वाणीकी मुसकानसे परिचित, ५. संसार वाटिकाकी, ६. मधुर स्वरवाली, ७. प्रकृतिके स्वभावमें, ८. अस्तित्व, ९. जीवनकी महफ़िलकी रौनक़, १०. उपद्रवका कारण, ११. विश्वशान्ति, १२. निर्वाण रूपी दरियाका, १३. किनारा, १४. तूफ़ान, १५. संसार रूपी माँकी नेक पुत्री, १६. ज़ुल्फ़ और कपोलोंसे, १७. भाग्य, १८. संसारकी प्रामाणिक पुस्तक १९. अमर वस्तु,, २०. नश्वर ।

'नैयिर'—सुश्री नवाब ज़किया सुल्ताना नैयिर सागर निज़ामी

मिलनकी जोत

मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

मिलनमें शक्ति मिलनमें मुक्ती, मिलन है चारों खूँट
कोढ़से बढ़कर रोग है बीरन ! यह आपसकी फूट
इकला और गुमराह मुसाफ़िर आप है अपनी लूट
अतलसके बिखरे हुए डोरे आप हैं अपनी टूट
पर रेशमकी कोमल लच्छी दे आहनको दान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

आप ही अपने दिये बुझाकर घरको करें ज़ुल्मात[2]
अपने चमनको आप ही फूँकें, आप ही सेकें हात
आप ही खोटी चालें सोचें, आप ही खायें मात
अपने चप्पू आप ही तोड़ें तूफ़ाँ में दिन-रात
अपनी नैय्या आप डुबोयें, बनकर ख़ुद तूफ़ान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

---

१. सूर्य्य, २. अन्धकार पूर्ण ।

हिन्दू-मुस्लिम बातिनमें[1] हैं दो तन और इक जान
जान जुदा तनसे हो जाये नहीं कोई आसान
फूट तेरा तन-मन डस लेगी, इस नागिनको जान
तारे टूटें बिजली कड़के लाख आयें तूफ़ान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

मेरे अभागे देशके बासी यूँ हैं कपटसे ख़्वार
जैसे लड़ें आपसमें भिकारी धनमन्तोंके द्वार
गुन अपने गाती है तबाही हँसता है संसार
आज़ादी बैठी रोती है, कैसी हुई यह हार
पहली ही मंज़िल पै पहुँचकर भटक गये नादान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

रूठोंको सीनेसे लगाले फूटको मनसे निकाल
मिलनका मंतर जपले बीरन ! तोड़ दे इसका जाल
देशका कस-बल टूट रहा है जनता है कंगाल
कब तक बर्बादीके झक्कड़, कब तक यह भूचाल
देश है प्याला तू है मदिरा, देश शरीर है तू है जान
मानवता दीपक है और आज़ादी जोत समान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

---

१. प्रकटमें ।

ग़ज़ल

शबे-ग़म सदा उनकी आने लगी है
मेरी रात फिर गुनगुनाने लगी है

गुल उनका तबस्सुम[1] चुराने लगे हैं
सबा[2] उनके पैग़ाम[3] लाने लगी है

मेरी आहकी नारसाई[4] तो देखो
सितारोंसे आगे भी जाने लगी है

जो डूबी हुई थी अँधेरेमें ग़मके
वह क़ौसे-कुज़ह[5] मुसकराने लगी है

जो पामाले-बेइल्तफ़ाती[6] थी कल तक
वही ख़ाक अब मुसकराने लगी है

नई एक झंकार उठी साज़े-दिलसे
उम्मीद एक नग़मा-सा[7] गाने लगी है

उलट दी जुनूँने बिसाते-मुहब्बत
ख़िरद[8] मात-पर-मात खाने लगी है

मुबारक सर अफ़राज़िए-इश्क़[9] 'नैयिर' !
मेरी याद अब उनको आने लगी है

---

१. मुसकान, २. वायु, ३. सन्देश, ४. पहुँच, ५. इन्द्रधनुष, ६. अकृपाओंके कारण पददलित, ७. गीत-सा, ८. अक़्ल, ९. प्रेमीका उच्च मस्तक, स्वाभिमान।

जफ़ा जू[1] किस क़दर है, यह ज़माना आज़माते हैं
हज़ारों ज़ख़्म खाते हैं, मगर हम मुसकराते हैं

किसी टूटे हुए मअबदमें[2] जैसे रो उठे दीपक
दिले-वीराँमें यादोंके दिए यूँ टिमटिमाते हैं

मेरी टूटी हुई किश्ती बिसाते-जश्ने-तूफ़ाँ[3] है
तलातुम[4] रक़्स[5] करते हैं, किनारे मुसकराते हैं

मेरी आँखोंमें तारीख़े-जफ़ाए-ज़िन्दगी[6] पढ़कर
सितम हाए-ज़माना मेरी हिम्मत आज़माते हैं

यह मेरे अश्क हैं, तारीख़ नग़माते-मुहब्बत भी
उन्हीं अश्कोंमें 'नैयिर' हालो-माज़ी[7] मुसकराते हैं

---

१. अत्याचारी, २. उपासना-गृहमें, ३. तूफ़ानके उत्सवकी बिछावन, ४. तूफ़ान, ५. नृत्य, ६. ज़िन्दगीके अत्याचारोंका इतिहास, ७. वर्त्तमान और भूतकाल।

'नोशाब:'[1]—सुश्री नोशाब: क़िदवाई

यादे-माज़ी[2]

धुँदली - धुँदली ख़मोश राहोंपर
कौन जाता है सर झुकाये हुए ?
लब भिंचे-से मगर रवाँ[3] आहें
बन्द पलकों पै अश्क आये हुए
लग़ज़िशें हर क़दम पै कुछ ऐसी
बार[4] जैसे कोई उठाये हुए
एक नग़मा[5] लबोंमें उलझा-सा
साज़ सीनेसे इक लगाये हुए
अहदे रफ़्ताकी[6] सरज़मीं है यहीं
यादे-माज़ी रवाँ यहीं है कहीं

नग़मए-ज़िन्दगी[7]

ज़िन्दगीके लबे-नौशींसे[8] सदा[9] आती है—
'मेरे ख़ुमख़ानए-ऐय्याममें[10] इशरतें[11] तो नहीं' ?

---

१. एक मशहूर मलकाका नाम, २. भूतकालकी स्मृति, ३. प्रवाहित, ४. बोझ, ५. गीत, ६. बीते युगकी, ७. ज़िन्दगीका गीत, ८. जीवनके ओठोंसे, ९. आवाज़, १०. दिनरूपी मदिरालयमें, ११. सुख-भोग।

मुझको बदमस्त बनानेकी अदा होती है,
ज़हरे-ग़मके[1] लिए तिरयाक़[2] मसर्रत[3] तो नहीं ?
मेरे आँचलसे मुहब्बतकी हवा आती है
मेरे दामनमें कोई ख़्वाबे-हक़ीक़त[4] तो नहीं ?

मुझमें इक सोज़े-तमन्नाकी तपिश[5] है लेकिन
हुस्ने-यज़दाँ[6] मेरे काशानेकी[7] क़िस्मत तो नहीं
ज़ौक़े-इसियाँ[8] मेरा काँटोंकी ख़लिश[9] है लेकिन
दर्दको कैफ़[10] बनानेकी ज़रूरत तो नहीं
मेरी उफ़तादगियोंमें[11] भी कशिश है लेकिन
मेरे कूचेमें कोई मंज़िले-रफ़अत[12] तो नहीं

मैं जहाँ तक हूँ वहीं तक है वजूदे-आलम[13]
मानती हूँ कि अबद[14] तक मेरी वुसअत[15] तो नहीं
रक़्स[16] करती हुई और पीती-पिलाती बाहम[17]
बढ़ती जाती हूँ ठहरना मेरी फ़ितरत[18] तो नहीं
ज़ख़्म एहसासपै[19] कितने ही लगे हों ताहम[20]
मेरे एहसासको इक आहकी फ़ुर्सत तो नहीं

---

१. दुःखरूपी विषके लिए, २. विषहर औषधि, अफ़ीम, ३. ख़ुशी, ४. वास्तविकताका स्वप्न, ५. इच्छाओंकी तपिश, ६. ईश्वरीय रूप, ७. घरकी, ८. पापका शौक़, ९. चुभन, १०. नशीला, ११. बरबादियोंमें, १२. विस्तृत मंज़िल, १३. संसारका अस्तित्व, १४. सदैवको, १५. शक्ति, सामर्थ्य, १६. नृत्य, १७. परस्पर, १८. स्वभाव, १९. भावनाओंपर, मनपर, २०. तोभी।

नोशाद:—सुश्री नोशाद: ख़ातून क़ुरैशी

अपनी हस्तीको मिटाकर बन, फ़रोग़े-अन्जुमन[1]
शमअ़से[2] कुछ सीख ले, सोज़ो-गुदाज़े-ज़िन्दगी[3]

है नवाए-तल्ख़[4] यारब ! सोज़ो-साज़े-ज़िन्दगी[5]
नग़मए-शीरीं[6] सुना बरबत - नवाज़े - ज़िन्दगी[7]

मुन्तशिर शीराज़ए-औराक़े-हस्ती[8] जब हुआ
आश्कारा[9] हो गया दमभरमें राज़े-ज़िन्दगी[10]

है सकूने-मौतसे[11] बदतर, सकूने-इन्जमाद[12]
सई-ओ-हरकत[13] दहरमें[14] है एहतियाज़े-ज़िन्दगी[15]

---

१. सभाओंका प्रकाश, उन्नति, २. दीपशिखासे, ३. जीवनको जलाकर पिघलनेकी विद्या, रुला देनेवाली कैफ़ियत, ४. कड़वी बातें, ५. जीवनकी दुःखभरी बातें कहना, ६. मधुर गीत, ७. जीवनवाद्य बजानेवाले, ८. जीवन-रूपी पुस्तकके पृष्ठ जब तितर-बितर हुए, ९. स्पष्ट, प्रकट, १०. जीवन-भेद, ११. मृत्युकी शान्तिसे, १२. स्थायित्वकी शान्ति, स्थिरताके चैनसे, १३. प्रयास और पराक्रम, १४. संसारमें, १५. जीवन-अस्तित्व ।

'पर्वीं'—सुश्री पर्वीं मुरादाबादी

क़तआत

मौजे-सराब—

चार दिनका शबाब[2] है दुनिया
ख़्वाब[3] है एक ख़्वाब है दुनिया
दिले-नादाँ[4] ! समझ न आवे-हयात[5]
एक मौजे-सराब[6] है दुनिया

दौलते-दिल—

हर निशाँ वजहे-बे-निशानी है
इक फ़साना है, इक कहानी है
दौलते-दिल है, [7]जाविदाँ 'परवीं'
और जो कुछ यहाँ है, फ़ानी[8] है

तल्ख़-हक़ीक़त[9]—

सीना-कावी[10] है, दिल फ़िगारी[11] है
ज़िन्दगी एक बेक़रारी है
बज़्मे-आलमके[12] ज़र्रे-ज़र्रे पर[13]
कैफ़े-सहबाए-यास[14] तारी[15] है

---

१. गुच्छा, २. रूप, यौवन, ३. स्वप्न, ४. मूर्ख दिल, ५. अमृत, ६. मृगमरीचिका, ७. अमर, ८. नाशवान्, ९. कटु सत्य १०. दाग़दार दिल, ११. घायल, १२. संसाररूपी महफ़िलके, १३. अणु-अणुपर १४. निराशारूपी शराबकी मस्ती, १५. छाई।

'पर्वीं'—सुश्री पर्वीं रागात्र

अअदासे[1] है, शिकवा न मुझे तुमसे गिला है
वह देख रही हूँ जो मुक़द्दरमें लिखा है
मुझको यह सबक़ दानए-गन्दुमसे[2] मिला है
दर अस्ल बक़ा[3] तकमीलय-ए-नक़्शे-फ़ना[4] है
क्योंकर न मैं उस दर्दको सीनेमें जगह दूँ
सरकारे-मुहब्बतसे यह इनआम मिला है
अब तक है, तेरी याद अनीसे-दिले-मुज़तर[5]!
दुनिया-ए-तसव्वुरमें[6] तू ही जल्वानुमा[7] है
देख इस बुते-रअनाको[8] सनमख़ान-ए-दिलमें[9]
मुश्ताक़े-तजल्ली[10]! हरमो-दैरमें[11] क्या है?
उनवान[12] हैं दो एक ही अफ़सानेके वरना
जो दैरमें बुत है, वही काबेमें ख़ुदा है
माल्लूम है, 'परवीं' तेरे नग़्मोंकी हक़ीक़त
यह रब्बे-दो-आलमकी फ़क़त लुत्फ़ो-अता है

---

१. प्रतिद्वन्द्वियोंसे, २. गेहूँके दानेसे, ३. जिन्दगी, ४. मृत्यु ही जीवन, ५. बेचैन दिलके साथी, ६. ध्यानके संसारमें, ७. प्रतिबिम्बित, आसीन, ८. सुन्दर प्रियतमको, ९. हृदय-मन्दिरमें, १०. प्रकाशके इच्छुक, ११. मस्जिद-मन्दिरमें, १२. शीर्षक।

'पर्वीं'—सुश्री आइशा पर्वीं

बीत रही बरसात

रैन अँधेरी सावनकी ऋतु छाई घटा घनघोर
बादल गूँजे, बिजली चमके, धक-धक हो मन मोर
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
ठंडी-ठंडी हवाके झोंके, मन मोरा लहराये
कोयलकी दरदीली सदाएँ, हूक-सी चुभ-चुभ जाये
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
बिना सजन यह सावन झूला, मन मोरा थर्राय
गीत सखी मैं कैसे गाऊँ, हाय जिया कलपाय
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
रो-रो तड़पूँ चैन न पाऊँ, हाय जिया घबराय
साजन अब तक घर ना आये, रह-रह याद सताय
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
रहते थे जब पास पिया, जगमें सब कुछ अपना था
देख लिया याँ जो कुछ देखा, कितना सुन्दर सपना था
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
भूल गये, परदेस बसे, प्रीतका रोग लगाना था
साजन क्या सच रूठ गये, दो दिन मुझको हँसाना था
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात

'पिनहाँ'[1]—सुश्री सिपिह्र[2] द्वारा रचित्या बरेलवी

फिर नये अपने ज़मी-ओ-आसमाँ पैदा करें
मावराए - लामकाँ[3] अपना जहाँ पैदा करें
फूँक डालें जो हवादसके[4] ख़सो-ख़ाशाकको[5]
आतिशीं आहोंसे[6] ऐसी बिजलियाँ पैदा करें
कायनाते-हुस्नमें[7] आ जाये जिससे ज़लज़ला
क़ारे-दिलसे वह नवाये-ख़ूँफ़िशाँ[8] पैदा करें
खेलते हो इस शकिस्ता साज़के[9] तारोंसे क्या
दिलके टुकड़े क्या, नवाये-दिलसिताँ[10] पैदा करें
कारगर हो जायगा 'पिनहाँ' कभी जज़्बे-जुनूँ[11]
नालए-शबगीरो - सोज़े - जाविदाँ[12] पैदा करें

नियाज़ो-नाज़[13] ना मक़बूल[14] दोनों
न समझी मैं कि है तेरी रज़ा[15] क्या ?
जबीने - हुस्नपर[16] सुर्ख़ी - सी दौड़ी
निगाहे-आज़ूने[17] कर दिया क्या ?

---

१. छिपी हुई, २. आकाश, ३. संसारसे परे, ४. मुसीबतोंके, ५. घास-तिनकोंको, ६. आहरूपी आगसे, ७. रूपकी दुनियामें, ८. रक्तरंजित गीत, ९. टूटे वाद्यके, १०. हृदय-वीणाके स्वर, ११. प्रेमोन्मादका विचार सफल होगा, १२. पिछली रातको उठनेवाली आहोंमें स्थायित्व, १३. नम्रता और अभिमान, १४. अरुचिकर, १५. इच्छा, १६. रूपके मस्तक पर, १७. इच्छा दृष्टिने ।

न ज़ाने क्या समझकर हँस पड़े हैं
यह है तमहीद[1] ज़ौक़े-एतना[2] क्या ?
ज़फ़ाओ-नाज़की ख़ूगर[3] हूँ 'पिनहाँ'
ख़ुदा मालूम है रस्मे-वफ़ा क्या ?

दीदनी[4] है तेरे अ़ताबका[5] रंग
शीशए-चश्ममें[6] शराबका रंग

शीशए-मीनामें[7] 'पिनहाँ' बर्क़[8] है
हुस्ने-पुरफ़न[9] आज ज़ेरे-दाम[10] है

---

१. भूमिका, २. उपेक्षाके शौक़की, ३. अभ्यस्त, ४. देखने योग्य, ५. क्रोधका, ६. आँखरूपी प्यालोंमें, ७. मदिरा-पात्रमें, ८. बिजली, ९. ऐय्यार सौन्दर्य, १०. जालमें बन्दी ।

'फ़रहत'—सुश्री सैय्यदा 'फ़रहत'

ग़ज़ल

इक तरफ़ शाने-ख़ुदी[1] मानए-इज़हार[2] भी है
ज़ब्ते-ग़म[3] दिलकी नज़ाकतपै मगर बार[4] भी है
लुत्फ़[5] दोनोंसे उठाते हैं उठानेवाले
ज़िन्दगी निकहते-गुल[6] भी, ख़लिशे-ख़ार[7] भी है
मुनहसिर[8] हौसिलए-दिलपै है साबुत क़दमी
जादहे-शौक़[9] तो आसाँ भी है, दुश्वार भी है
ख़ुदको खोया है तो पाई है मुहब्बत तेरी
ज़िन्दगीमें यह मेरी जीत भी है हार भी है
हदसे आगे न बढ़े हुस्नका यह नाज़ो-ग़रूर[10]
है वफ़ाकश[11] अगर इश्क़ तो ख़ुद्दार[12] भी है
इक ज़रा करती है मसहूर[13] तेरी चश्मे-करम[14]
दिल मगर तेरे तग़ाफ़ुलसे[15] ख़बरदार भी है
सैरे-महफ़िलसे जो फ़ुरसत हो इधर भी देखो
सरे-तस्लीम[16] झुकाये यह ख़तावार भी है

---

१. अहम्की शान, २. मनकी बात प्रकट करनेमें, ३. दुःखोंका छिपाना, ४. कोमलतापर बोझ, ५. आनन्द, ६. फूलोंकी सुवास, ७. काँटों-की चुभन, ८. निर्भर, ९. प्रेम-मार्ग, १०. अभिमान, गर्व, ११. प्यारेका तन-मन-धनसे साथ देना, वफ़ादारी, १२. स्वाभिमानी, १३. मन्त्रमुग्ध, मोहित, १४. कृपादृष्टि, १५. उपेक्षा भावसे, १६. मस्तकनत ।

फ़रार

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी[१] हसीं वादीमें[२]
ग़मे-हस्ती न मुख़िल[३] हो मेरी आज़ादीमें

दिलको दे लेने दे कुछ देर मसर्रतका फ़रेब[४]
चन्द साअ़त[५] तो मिले रूहको[६] तस्कीनो-शिकेब[७]
भूल जाने दे ज़मानेके फ़राज़ और नशेब[८]
ज़ाहरी शानो-शौकत और दिखावेकी यह ज़ेब[९]

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे-हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

चन्द लमहोंके[१०] लिए आपसे खो जाने दे
ख़ुद-फ़रामोश[११] ज़रा देरको हो जाने दे
तल्ख़िए-ज़ीस्तके[१२] एहसासको[१३] सो जाने दे
दिले-ग़मगींको किसी तौरसे बहलाने दे

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे-हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

---

१. कल्पनाओंको, २. सुन्दर घाटियोंमें, ३. आड़े न आये, विघ्न न डाले, ४. सुखका धोका, ५. क्षण, ६. दिलको, आत्माको, ७. चैन, सब्र, ८. ऊँचाई-नीचाई, ९. सजावट, रौनक़, १०. क्षणोंके, ११. अपनेको भूलना, १२. जीवनके कड़ुवे, १३. ज्ञानको।

भूलने दे कि जहाँमें ग़मो-आलाम[1] भी हैं
हसरतो-यास[2] भी, अफ़्कार[3] भी, औहाम[4] भी हैं
बेकसो-ज़ार[5] भी हैं, ज़ालिमो-ख़ुदकाम[6] भी हैं
एकसे सब हैं, मगर ख़ास भी हैं आम भी हैं

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे-हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

इक ज़रा आँखसे ओझल हों भयानक मंज़र[7]
दिल पै हो जाये न वहशतका तसल्लुत[8] यकसर
सर्द हो जाये न दिल, तंग न हो जाये नज़र
ख़ार[9] बनकर न मेरी आँखमें खटके गुले-तर[10]

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे - हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

ग़मके एहसासमें हो जाये न पैदा शिद्दत[11]
इज़्ज़ते-नफ़्स[12] न हो परदए-ग़ममें रुख़सत[13]
मौतकी नींद न सो जाये फ़सुर्दा फ़ितरत[14]
अपनी हस्तीसे भी हो जाये न मुझको नफ़रत

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे - हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

---

१. दुःख, २. इच्छा और निराशा, ३. चिन्ताएँ, ४. वहम, ५. दीन-दुःखी, ६. अत्याचारी और निरंकुश, ७. दृश्य, ८. उन्मादका प्रभाव, ९. काँटा, १०. प्रफुल्ल फूल, ११. अधिकता, १२. शारीरिक प्रतिष्ठा, १३. विदा, १४. मुर्झाई बहार ।

जानती हूँ कि नहीं, सहल हक़ीक़तसे[1] फ़रार[2]
चोट खाये हुए दिलका है सँभलना दुश्वार
तै बहरहाल यह करना ही है राहे-पुरख़ार[3]
ख़ुद-फ़रेबीके[4] सिवा कोई नहीं चाराकार[5]

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे-हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

१. वास्तविकतासे, २. छुटकारा, ३. कण्टकाकीर्ण मार्ग, ४. स्वयंको धोखा देना, ५. उपाय ।

'वर्क़'—सुश्री सरला 'वर्क़'

ग़ज़ल

उसका सानी जमाल[1] मुश्किल है
और मेरी मिसाल मुश्किल है
दिलके हाथों है जान आफ़तमें
ना समझकी सँभाल मुश्किल है
लाख मरहम रखे कोई दिलपर
ज़ख़्मका अन्दमाल[2] मुश्किल है
किस तरह उसको हमनवा कर लें
दर्दका इन्तक़ाल मुश्किल है
हम - कलामी[3] उदूकी[4] ऐ तोबा
हमसे यह इब्तज़ाल[5] मुश्किल है
अभी नादान है मेरा नासेह
कैफ़में ऐतिदाल[6] मुश्किल है
हम न कहते थे हज़रते-मूसा !
ताबे - 'बर्क़' - जमाल[7] मुश्किल है

---

१. सदृश सौन्दर्य्य, २. भरना, ३. वार्त्तालाप, ४. सौतसे, ५. अश्लीलता, फूहड़पन, ६. नशेमें सन्तुलन, ७. सौन्दर्य्यकी बिजलीकी ताब ।

'बशीर'—सुश्री बशीरुन्निसाबेगम हैदराबादी

ग़ज़ल

बताऊँ क्या तुम्हें, मैं कौन हूँ, क्या हूँ बहरसूरत
सरापा[1] दर्द हूँ इक हस्तिए-महरूमे-दरमाँ[2] हूँ

चमनमें फूल हूँ, गुलमें ब-रंगे-बू हूँ पोशीदः[3]
सितमदीदः[4] हूँ, वीरानेकी मैं ख़ाके-परीशाँ हूँ

मेरी नाचीज़ हस्ती, दहरकी तकवींका[5] बाइस[6] है
ख़िज़ाँदीदः शजर[7] हूँ, दरख़ुरे-ज़ेबे-गुलिस्ताँ[8] हूँ

तलाशे-गौहरे-मक़सूदमें[9] मुज़तर[10] है दिल मेरा
नज़र आवारए-सहने-गुलिस्ताँ गुलबदामाँ हूँ

मुझे क्या साज़े-इशरतसे[11] मुझे क्या बाज़ हसरतसे[12]
'बशीर' इस आलमे-हस्तीमें मैं मानिन्दे-महमाँ हूँ

'बशीर' उम्मीद क्या रक्खें चमनमें हमसफ़ीरोंसे[13]
लगाई आग अपनोंने जला जब आशियाँ[14] अपना

परेशाँ फूल हैं ख़ामोश बुलबुल आशियानोंमें
इलाही! मशवरे क्या हो रहे हैं बाग़बानोंमें?

---

१. व्यथाकी मूर्त्ति, २. चिकित्सासे वंचित व्यक्ति, ३. छिपी हुई, ४. अत्याचार पीड़ित, ५. सृष्टि-निर्माणका, ६. कारण, साधन, ७. पतझड़का अनुभव किया हुआ वृक्ष, ८. उपवनकी शोभा योग्य, ९. उद्देश्यरूपी मोतीकी खोजमें, १० बेचैन, ११. सुख-वाद्यसे, १२. अभिलाषाओंसे सरोकार, १३. साथियोंसे, १४. नीड़, घोंसला।

'बानो'—सुश्री शकीलाबानो भोपाली

मुझको रास आगये तेरे जौरो-सितम
ज़िन्दगी मिल गई ज़िन्दगीकी क़सम
उनके वादेकी लज्ज़त ख़ुदाकी क़सम
याद रखना ग़ज़ब, भूल जाना सितम
मेरी मंज़िल वहाँसे भी कुछ दूर थी
देखते रह गये मुझको दैरो-हरम[1]
हो ख़ुशी जिसके हिस्सेमें उसको मिले
मेरे हिस्सेमें आ जायें दुनियाँके ग़म
सच है अन्दाज़े-तक़रीर दिल खींच ले
हाये नीयत मेरे वाइज़े-मुहतरिम
यूँ मुहब्बतकी राहोंसे 'बानो' गुज़र
लोग देखा करें तेरा नक़्शे-क़दम[2]

१. मन्दिर-मस्जिद, २. चरणचिह्न ।

'बानो'—सुश्री इक़बाल बानो

ग़ज़ल

फूलोंके इश्तयाक़में[1] काँटोंसे जा मिले
ऐ दश्ते-शौक़[2]! तेरी तमन्नाके सिलसिले

मेरे लिए चमनमें फ़क़त रह गया ग़ुबार[3]
आगे निकल गये हैं, बहारोंके क़ाफ़िले[4]

कहते हैं लोग बादे-सबाका[5] दरूद[6] है
लेकिन कहीं चमनमें कोई शाख़ तो हिले!

अब दास्ताने-ग़म भी सुनाना हुआ मुहाल[7]
फ़रियाद की जहाँ भी वहीं मेरे लब सिले

'बानो' यह हाल अपनी उमीदोंका हो गया
कुछ फूल जैसे गोरे-ग़रीबाँ[8] पै हों खिले

---

१. चाहतमें, २. यात्राका उत्साह, ३. धूलका धुआँ, ४. यात्रीदल, ५. पवनका, ६. उपहार, ७. कठिन, ८. क़ब्रिस्तानमें।

'बिलक़ीस'—सुश्री बिलक़ीस रहमानी बानो

इज़हारे-मुहब्बत

हम न समझें तेरे इल्ताफ़ो-करमके[1] माने
लाख नादाँ सही, अब ऐसे भी नादाँ तो नहीं
शबकी[2] आग़ोशमें[3] बल खाती हुई काहकशाँ[4]
यह किसी माँगकी बिखरी हुई अफ़शाँ[5] तो नहीं

दिलके दाग़ोंसे मैं सीनेको सजाऊँ कब तक
दिल तो दिल ही है, कोई बज़्मे-चराग़ाँ[6] तो नहीं
क्यों मुझे देखते ही झुक गईं नज़रें उनकी
कहीं अब अपने किये पर वह पशेमाँ[7] तो नहीं

दौलते-दर्द सलामत रहे राहत[8] न सही
घर जो आबाद नहीं क्या हुआ, वीराँ[9] तो सही

---

१. महर्बानी और कृपाके, २. रातकी, ३. गोदमें, ४. छायापथ, ५. माँग सजानेकी वस्तुएँ, ६. सभाका दीप, ७. शर्मिन्दा, ८. चैन, ९. उजाड़।

'बिलक़ीस'—सुश्री नाहीद बिलक़ीस अकबराबादी

ग़ज़ल

किस क़दर हुस्ने-नज़र है तेरे दीवानोंमें
कलियाँ दामनकी सजाई हैं गरेबानोंमें
हुस्नको खींचके ले आई मुहब्बतकी कशिश
आके ख़ुद शमअ़को जलना पड़ा परवानोंमें
क्या ख़बर हमको हरम[1] क्या है कलीसा[2] क्या है
ज़िन्दगी हमने गुज़ारी इन्हीं मैख़ानोंमें[3]
हमने देखी है तेरी मस्त जवानीकी अदा
हँसते फूलोंमें, छलकते हुए पैमानोंमें
फूल खिलता है जो कोई तो ख़्याल आता है
यह भी शायद है तेरे चाक गरेबानोंमें[4]
दिले-नाकामके उजड़े हुए गेसू[5] तौबा
एक महफ़िल भी थी शायद उन्हीं दीवानोंमें
हमको 'बिलक़ीस'[6] तकल्लुफ़की ज़रूरत क्या है
पी लिया करते हैं, टूटे हुए पैमानोंमें

---

१. काबा, २. गिरजा, ३. मदिरालयोंमें, ४. कुरतेका फटा हुआ गला, ५. ज़ुल्फ़, ६. एक मशहूर मलकाका नाम ।

'बेख़ुद'---सुश्री शान्ति 'बेख़ुद'

फिर दास्ताने-दिलको[1] रक़म[2] कर रही हूँ मैं
क़तरेको[3] मौजे-बहरमें[4] ज़म[5] कर रही हूँ मैं

अच्छा हुआ कि आप मेरे दिलमें बस गये
घर बैठे अब तवाफ़े-हरम[6] कर रही हूँ मैं

ज़ाहिद ! यह क्या हुआ मेरे ज़ौक़े-नियाज़[7] को
सज्दे जो आज पेशे-सनम[8] कर रही हूँ मैं

वक़्ते-नज़अ[9] भी उनसे तसव्वुरमें[10] बार-बार
क्यों अर्ज़े-इल्तफ़ाते-करम[11] कर रही हूँ मैं

आसानियोंके शौक़में 'बेख़ुद'[12] हूँ इस क़दर
दुश्वारियोंको अपने बहम[13] कर रही हूँ मैं

---

१. दिलकी कहानीको, २. लेखबद्ध, ३. बूँदको, ४ दरियाकी लहरोंमें, ५. एकीकरण, मिलाना, ६. कावेकी परिक्रमा, ७. नम्रताके चावको, ८. मूर्तिकी तरफ़, प्रियतमकी ओर, ९. मृत्यु-समय, १०. ध्यानमें, ११. कृपाके लिए प्रार्थना, १२. आत्मलीन, १३. एकत्र ।

'बेगम'—सुश्री करामत फ़ात्मा बेगम

ग़ज़ल

भरी महफ़िलमें भी तनहाइयाँ[१] महसूस[२] करती हूँ
कि दिलमें आजकल वीरानियाँ महसूस करती हूँ
कभी वह दिन थे हासिल थी मुझे ग़ममें भी इक लज्ज़त
मसर्रतमें[३] भी अब तो तल्खियाँ[४] महसूस करती हूँ
तिलस्मे-दो जहाँ[५] क्या है, समझमें कुछ नहीं आता
कि हर-सू[६] देखकर हैरानियाँ महसूस करती हूँ
कभी मालूम होता है कि गोया[७] है हर इक ज़र्रा[८]
कभी हर चार-सू ख़ामोशियाँ महसूस करती हूँ
वही है गुलशने-हस्ती[९] मगर ऐ हमनशीं[१०]! फिर भी
ख़ुदा जाने कि क्यों वे कैफ़ियाँ[११] महसूस करती हूँ
नहीं मालूम क्या दुनियाए-दिलमें इन्क़िलाब आया
सकूने-क़ल्बकी[१२] वर्बादियाँ महसूस करती हूँ
क़फ़समें[१३] घुटके रह जाता है मेरा ज़ौक़े-आज़ादी
तड़प जाती हूँ जब मजबूरियाँ महसूस करती हूँ
हुजूमे-ग़मसे घबराकर निकल आते हैं जब आँसू
शिकस्ते-ज़ब्तकी[१४] रुसवाइयाँ[१५] महसूस करती हूँ

---

१. अकेलापन, २. अनुभव, ३. सुखमें, ४. कड़ुवाहट, ५. लोक-परलोकका तिलिस्म, ६. हर तरफ़, ७. मुखरित, ८. कण, ९. जीवन-वाटिका, १०. मित्र, साथी, ११. परेशानियाँ, १२. दिलके चैनकी, १३. पिंजरेमें, १४. छिपावकी हारकी, १५. बदनामियाँ।

ग़ज़ल

देता है सरे-महफ़िल क्यों जानका नज़राना
क्यों शमअ़को करता है बदनाम यह परवाना
कमबख़्तके हाथों है, दुश्वार मुझे जीना
तग़ईरके[१] क़ाबिल है मेरा दिले - दीवाना
यह जाम ही बस पीकर तौबा मुझे करनी है
क़ुर्बान[२] मेरे साक़ी भर दे मेरा पैमाना
अपनोंमें जो अपनायत बाक़ी न रही कुछ भी
यकसाँ है हमें दोनों अपना हो कि बेगाना
क्या कीजिएगा सुनकर कुछ लुत्फ़[३] न आयेगा
दर्दो-ग़मो-हसरतसे[४] पुर[५] है मेरा अफ़साना[६]
आज़ाद यक़ींसे हो जायँ अगर नज़रें
हर जगह वह मिलता है, काबा हो कि बुतख़ाना
क्या हूँ मैं हक़ीक़तमें मालूम नहीं 'बेगम'
दीवाना समझ लीजे या जानिए फ़रज़ाना[७]

---

१. परिवर्त्तनके, २. न्योछावर, ३. आनन्द. ४. रंज और इच्छाओंसे, ५. पूर्ण, ६. क़िस्सा, ७. दक्ष, बुद्धिमती।

'मक़बूल'—सुश्री मक़बूल नसरीन

मिल गया मुझको अमानतका[1] वह पैग़ाम[2] तेरा
नामा[3] आया है मगर क्यों, यह मेरे नाम तेरा
यानी मुलज़िम[4] बनूँ और झेल लूँ इल्ज़ाम तेरा
ले तेरे ख़तके एवज़ मुज़दहो-इनआम[5] तेरा

मैं तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान[6] बना जाऊँगी

नूरमें[7] डूबी हुई चाँदनी रातोंकी क़सम
शबनमी[8] भीगी हुई सावनी रातोंकी क़सम
बर्फ़-सी सहमी हुई सुरमयी रातोंकी क़सम
जगमगाते हुए तारोंकी बरातोंकी क़सम

मैं तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी

सर्द रातोंमें चमकते हुए तारोंकी क़सम
फूल बरसाती हुई मस्त बहारोंकी क़सम
सुबहे-बेदारके[9] शादाब[10] नज़ारोंकी क़सम
रोदेबानासके सरसब्ज़[11] किनारोंकी क़सम

मैं तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी

१. धरोहरका, सुपुर्दगीका, २. सन्देश, ३. पत्र, ४. अपराधी, ५. खुशख़बरी और उपहार, ६. निराशाका शीर्षक, अपनी असफलताओंकी स्मृति, ७. प्रकाशमें, ८. ओससे, ९. जागृत प्रातःकालके, १०. प्रफुल्ल दृश्योंकी, ११. नदीके हरे-भरे।

मए-गुल रंगके[1] अनवारे-गुलाबीकी[2] क़सम
इत्रमें डूबे हुए जिस्मे-शहाबीकी[3] क़सम
नफ़से-तेज़की आवाज़े-रुबाबीकी[4] क़सम
वस्लमें[5] शर्मके अन्दाज़े-हिजाबीकी[6] क़सम
मैं तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी

जल्वए-हुस्नकी[7] हर शाने-जमालीकी[8] क़सम
इश्क़में ज़ब्तकी आदाते-मिसालीकी[9] क़सम
बे नियाज़ीके[10] हर अन्दाज़े-जमालीकी[11] क़सम
अर्शे-आज़मके[12] फ़सूँ साज़ कमालीकी[13] क़सम
मैं तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी

---

१. लाल रंगकी मदिराके, २. गुलाबी चमककी, ३. रक्तवर्ण शरीरकी, ४. हृदय-वीणाकी, ५. सम्भोगमें, ६. शर्मीलेपनकी, ७. सौन्दर्यके चमत्कारकी, ८. रूपके शानकी, ९. सब्र करनेकी, आदर्श आदतकी, १०. निःस्वार्थके, ११. महान् आदर्शकी, १२. उन्नत्त आकाशके, १३. जादू भरे कमालकी ।

'मख़्फ़ी'[1]—सुश्री सैयद: जहाँ मख़्फ़ी

ग़ज़ल

चश्मे[2]-तर ! देख ग़मे-दिल न नुमायाँ[3] हो जाय
इश्क़के सामने और हुस्न पशेमाँ[4] हो जाय

जानता हूँ मैं तमन्नाको[5] गुनाहे-उल्फ़त[6]
इश्क़ वह है जो निहाँ[7] रहके नुमायाँ हो जाय

अपनी मजबूरिए-उल्फ़तका फ़साना[8] कहकर
डर रहा हूँ कि कहीं वह न पशेमाँ हो जाय

दाग़े-उल्फ़तकी तजल्ली जो नुमायाँ हो जाय
शोलए-तूर[9] भी इक बार पशेमाँ हो जाय

ज़ब्ते-ग़मसे[10] नहीं याराए-ख़मोशी मुझको
तुम जो कुछ पूछो तो मुश्किल मेरी आसाँ हो जाय

काश यूँ बर्क़ गिरे ख़िरमने-दिलपर[11] 'मख़्फ़ी'
ज़र्रा-ज़र्रा[12] मेरी हस्तीका फ़रोज़ाँ[13] हो जाय

---

१. छिपा हुआ, २. अश्रुपूर्ण नेत्र, ३. प्रकट, ४. शर्मिन्दा, ५. आकांक्षाको, ६. प्रेम-दोष, ७. अप्रकट, ८. कहानी, ९. पर्वत-अग्नि, १०. दुःखके जब्तसे, ११. दिलरूपी खलियानपर, १२. कण-कण, १३. प्रकाशवान् ।

'मीना'—सुश्री मीना क़ाज़ी

उनकी तस्वीर जब आँखोंमें उतर आई है
मैंने तारीक फ़ज़ाओंमें[1] ज़िया[2] पाई है

हुस्न जब होने लगा माइले-इल्फ़ातो-करम[3]
इश्क़की जान पै कुछ और भी बन आई है

आज तक मेरी निगाहोंको मयस्सर[4] न हुई
लोग कहते हैं कि गुलशनमें बहार आई है

अब ज़मानेकी ख़बर है न ख़ुद अपना ही पता
मेरी वहशत[5] मुझे क्या जाने कहाँ लाई है

ऐ निगाहे-ग़लत अन्दाज़ तेरी उम्र दराज़[6]
ज़िन्दगी अब ग़म-ओ - आलामकी शैदाई[7] है

अब तो आ जा ग़मे-हस्तीके मिटाने वाले
बस तेरी याद है मैं हूँ शबे-तन्हाई[8] है

मैं शबो-रोज़[9] पिया करती हूँ अक्सर 'मीना'
मेरे साग़रमें निहाँ[10] बादए - मीनाई है

---

१. अँधेरी दिशाओंमें, २. रौशनी, ३. कृपा करनेको उद्यत, ४. नसीब, ५. दीवानगी, ६. उम्र बढ़े, ७. दुःख-व्यथाकी इच्छुक, ८. विरह-रात्रि, ९. दिन-रात, १०. छिपी हुई ।

'मुज़मिर'—सुश्री रफ़िया बानो मुज़मिर रज़ूयः

क़ते

चाँदनी, तारे, समन्दर, फ़स्ले-गुल[1], कैफ़े-बहार[2]
उफ़ यह अम्बोहे-तजम्मुल[3], यह हुजूमे-रंगो-बू
इस तरफ़ ज़ानू पै मेरे उनका रूए-नाज़नीं[4]
हाँ यक़ीनन आज मैं हूँ कामयाबे-आज़ू[5]

ऐ सितारो ! चश्मे-शाइरके चमकते आँसुओ !
जागकर रोते हो तुम रातोंको क्यों आख़िर लहू ?
देखते रहते हो क्यों हसरतसे शाइरकी तरफ़
इसके दामनमें मचलनेकी है फिर क्या आज़ू ?

सितारे

जो चर्ख़पर सीमीं सितारे[6] इस तरह हैं मुन्तशिर[7]
जैसे हूराने-बहिश्तीकी[8] रदाए-नूरसे[9]
गिर पड़े हों चन्द गुञ्चे[10] टूटकर हँसते हुए
या हवादिससे[11] फ़रिश्ते जब असर लेने लगे
रोशनो-बेताब आँसू उनकी आखोंसे गिरे
या फ़रोग़े-नक्बतो-नाशादकामी[12] देखके
आस्मानोंकी जबीनोंपर[13] पसीने आ गये

---

१. फूलोंका मौसम, २. मस्ती भरी बहारें, ३. सौन्दर्य्य-वैभव, ४. कोमल मुख, सर. ५. सफल, ६. रुपहले नक्षत्र, ७. बिखरे हुए, ८. जन्नतकी सुन्दरियोंके, ९. प्रकाशवान ओढ़ने (चादर) से, १०. कली, ११. दुर्घटनाओंसे, १२. दरिद्रता और अकुशलताका परिणाम, १३. मस्तकोंपर ।

ग़ज़लके शेर

जज़्बात[1] उलट देंगे चेहरेसे नक़ाब आख़िर
इक चश्मे-तमाशासे[2] कब तक यह हिजाब[3] आख़िर
दुनियाकी ख़बर भी है ओ महवे-जफ़ाकोशी[4]
कब तक यह बहारें हैं कब तक यह शबाब[5] आख़िर

एक मैं हूँ बाइसे-रुसवाई[6] उनके वास्ते
एक वे हैं ज़िन्दगीका आसरा मेरे लिए

अज़्म (संकल्प)

बदल दूँगी निज़ामे-ज़िन्दगीको[7] सइए-पैहमसे[8]
ज़माना काँप उट्ठेगा मेरे अज़्मे - मुसम्मिमसे[9]
यह ख़ाको-ख़ूनमें लिथड़े हुए अफ़कारे-इन्सानी[10]
यह महकूमीकी[11] क़ुर्बांगाहपर[12] ज़हनोंकी[13] क़ुर्बानी
यह ख़ूनी आँसुओंपर हँसनेवाली संगदिल[14] बस्ती
क़दामतके[15] ख़ुमारे-सरगिराँसे[16] मुज़महिल[17] बस्ती
यह बस्ती जिसने वीराँ कर दिया आबाद रूहोंको[18]
किया है क़ैदे-ज़ंजीरे-जुनूँ[19] आज़ाद रूहोंको

---

१. मनोभाव, २. प्रेमीसे, ३. पर्दा, ४. अत्याचार करनेमें लीन ५. यौवन, ६. बदनामीकी कारण, ७. जीवन-व्यवस्था, ८. लगातार प्रयत्नों से, ९. दृढ़ निश्चयसे, १०. मानव चिन्ताएँ, ११. शासनकी, १२. बलिदान स्थलपर, १३. विचारोंकी, बुद्धिकी, १४. कठोर, १५. प्राचीनताके १६. अप्रसन्नतारूपी उतरे हुए नशेसे, १७. क्लान्त, १८. जीते-जागते जीवन को, १९. उन्मादकी जंजीरोंमें क़ैद।

जहाँ इन्सानियतके वलवलोंका[1] ख़ून होता है
जफ़ा दस्तूर[2] होती है, सितम क़ानून होता है
जहाँ तहज़ीबकी बुनियाद है अश्कोंपर आहोंपर
जहाँ इख़लाककी[3] बुनियाद डाली है गुनाहोंपर
जहाँ इश्क़ो-मुहब्बतको जुनूँका नाम देते हैं
दरिन्दे[4] अम्नो-तस्कींका[5] जहाँ पैग़ाम[6] देते हैं
जहाँ पहरे लगाये हैं, निगाहोंपर ज़बानोंपर
बुढ़ापेकी हुकूमत है जहाँके नौजवानोंपर
जहाँ जुहलो-हविसका[7] नाम इल्मो-पारसाई[8] है
जहाँ बन्दोंपर इन्सानी ख़ुदाओंकी ख़ुदाई है
जहाँ दोशीज़गी ख़म है[9] हविसके आस्तानोंपर[10]
जहाँ मज़हब बिका करता है, तक़वाकी[11] दुकानोंपर
मैं इस दुनियाको 'मुज़मिर' अपने नारेसे हिला दूँगी
फ़रोग़े - सोज़े - ग़मसे[12] आग दुनियामें लगा दूँगी
उठूँगी मैं जलालो-अज़्मो-हिम्मतका अलम[13] लेकर
बढ़ूँगी मौतकी सूरत बग़ावतका अलम लेकर
मेरे बिगड़े हुए तेवरसे तूफ़ाँ दम - ब - ख़ुद होंगे
मेरे बिफ़रे हुए नारोंसे इन्साँ दम-ब-ख़ुद होंगे

१. उमंगोंका, २. अत्याचार करनेका प्रचलन, ३. सदाचारकी, ४. हिंसक पशु, ५. शान्ति-चैनका, ६. सन्देश, ७. मूर्खता और वासनाका, ८. ज्ञान और शील, ९. कौमार्यभंजन, १०. वासनाओंके आगे, ११. संयम-रूपी दुकानपर, इन्द्रिय निग्रहके नामपर, १२. व्यथाकी आगकी चमकसे, १३. महत्ता, दृढ़ता और साहसका झंडा लेकर।

'मैमूनः'[1]—सुश्री मैमूनः आरिफ़ा मुरादाबादी

मजबूरियाँ

टूटे दिलको जोड़ लिया है
हमने वफ़ाका पास किया है
काश यह जाने आप कि हमने
हँसते-हँसते ज़हर पिया है

मेरी वफ़ाकी मजबूरी थी
जिसको जफ़ाका रूप दिया है
काँटोंको सीनेसे लगाकर
चाक दिले-मग़मूम[2] सिया है

आप भी अपना हरज न कीजे
कौन किसीके ग़ममें जिया है
दिलकी क्या रूदाद[3] कहें हम
मौज हवा है और दिया है

आँखोंने 'मैमूनः' तुम्हारी
शबनमका[4] दिल जीत लिया है

---

१. शुभ, कल्याण, २. सन्तप्त विदीर्ण हृदय, ३. कहानी, ४. ओसका।

'यास्मीन'[1]—सुश्री तस्नीम यास्मीन

ग़ज़ल

तल्ख़िए-ज़ीस्तने[2] हालत यह बनाई अपनी
चोट जब दिल पै लगी आँख भर आई अपनी
उनको पानेका जब इमकान[3] न पाया कोई
ज़िन्दगी हमने मुहब्बतमें गँवाई अपनी
किस क़दर हौसलए-शौक़ - तलब निकले हैं
न सही गर-कोई हसरत न बरआई[4] अपनी
माँग लेते हैं ख़ुदासे जो हमें हो दरकार
बे-नियाज़[5] अहले करमसे[6] है, गदाई[7] अपनी
हुस्न[8] भी शेफ़्तए-इश्क़[9] है शायद कि मुझे
उनकी तस्वीरमें सूरत नज़र आई अपनी
बे सबब तो नहीं मानूसे-क़फ़स[10] दिल अपना
नज़र आती नहीं उम्मीदे - रिहाई अपनी
'यास्मीन' जबसे नसीब उनका हुआ है दीदार[11]
फिर कोई शक्ल न आँखोंमें समाई अपनी

१. चमेलीका फूल, नवमल्लिका, २. जीवनकी कटुताने, ३. उपाय, ४. पूर्ण हुई, ५. उपेक्षा भाव, ६. कृपालुओंसे, ७. याचकवृत्ति, ८. रूप, ९. प्रेमका दीवाना, १०. पिंजरेकी ओर आकर्षित, ११. दर्शन ।

'रख़्शाँ' सुश्री रख़्शाँ रूही

कब आओगे

आराइशे - जमाल[1] दिखाने कब आओगे
प्यासी नज़रकी प्यास बुझाने कब आओगे ?
छाई हुई हैं कबसे घटाएँ निराशकी
आशाके दीप दिलमें जलाने कब आओगे ?
लेकर जलोमें[2] अपने हज़ारों तजल्लियाँ[3]
तारीकिए - हयात[4] मिटाने कब आओगे ?
शीराज़ए - हयात[5] परेशाँ है इन दिनों
आख़िर यह इन्तशार[6] मिटाने कब आओगे ?
बन - बनके मौजे-बादे नसीमे - सहर ख़राम[7]
गुञ्चा[8] दिले-हज़ींका[9] खिलाने कब आओगे ?
आई बसन्त लेके उमंगें नई - नई
बीते दिनोंकी याद मिटाने कब आओगे ?
कब तक रहूँ रहीने-सितम[10] हाये रोज़गार ?
बे - कैफ़िए - हयात[11] मिटाने कब आओगे ?
पैग़ामे-ज़िन्दगी[12] लिये ऐ जाने-ज़िन्दगी[13] !
'रख़्शाँ'[14] की ख़िल्वतोंको[15] लजाने कब आओगे ?

---

१. सज्जित रूप, २. बागडोरमें, अपनेमें, ३. चमत्कार, ४. जीवन-अँधेरा, ५. ज़िन्दगी, ६. अस्त-व्यस्तता, ७. प्रातःकालीन अलबेली मधुर चालवाली वायु, ८. कली, ९. निराश हृदयका, १०. अत्याचार पीड़ित, ११. निरानन्द जीवन, १२. जीवन-सन्देश, १३. जीवन सर्वस्व, १४. दीप्त, प्रकाशवान्, १५. एकान्तमें बिछी सेजको ।

ग़ज़ल

हँसनेका वक़्त है, यह हँसानेका वक़्त है
यानी चमनमें फूल खिलानेका वक़्त है
आई है, फिर बहार ब-अन्दाज़े-दिलबरी
सरको हुज़ूरे - दोस्त झुकानेका वक़्त है
माना, ख़िरद[1] है, शमए-रहे-ज़िन्दगी[2] मगर
ऐ बे-ख़बर ! यह होशमें आनेका वक़्त है
कबसे है इन्तज़ार नज़रको न पूछिए
काशानए - हयात[3] बसानेका वक़्त है
अब बन रही है, अपनी यह धरती ही आस्माँ
ख़ुर्शीदो - माहताब[4] उगानेका वक़्त है
छिटकी है फिर चमनमें बहारोंकी चाँदनी
तारीकए - हयात[5] मिटानेका वक़्त है
लो आ गये हैं, बज़्ममें[6] मीना - बदोश[7] वह
हर-हर क़दम पै जाम लुँढ़ानेका वक़्त है
कब तक रहेगी ईद मुहर्रम बनी हुई
आओ कि जश्ने-शौक़[8] मनानेका वक़्त है
नज़रोंके साथ दिल भी करो फ़र्शे-राह तुम
'रख़्शाँ' ! यह उनके बज़्ममें आनेका वक़्त है

---

१. बुद्धि, २. जीवन-मार्गका दीपक, ३. जीवन-कुटिया, ४. सूर्य्य-चन्द्र, ५. जीवन-अँधियारी, ६. महफ़िलमें, ७. मदिरा-सहित, ८. उत्सव।

'राना'—सुश्री ज़ुबेदा रअ़ना

नई करवट

हर-इक दिल है मसायबका[१] निशाना
नई करवट बदलता है ज़माना
हक़ीक़त[२] ताड़ लेता है ज़माना
निगाहोंसे निगाहोंको बचाना
अँधेरेमें हैं अहले - बज़्मके[३] दिल
चिराग़े - बज़्मसे धोका न खाना
दिले - मुज़तर[४] तड़प लेनेसे तेरे
पलट आयेगा क्या गुज़रा ज़माना
मगर अहले-चमन अब वह नहीं हैं
वही हम हैं, वही है आशियाना[५]
कहाँ जायें तेरे मैख़्वार[६] साक़ी !
कहीं मिलता नहीं कोई ठिकाना
कभी आयेगा ऐसा वक़्त 'रअ़ना[७]'
हमें पहचान लेगा ख़ुद ज़माना

---

१. मुसीबतोंका, २. वास्तविकता, ३. महफ़िलवालोंके, ४. बेचैन दिल; ५. नीड़, ६. मद्यप, ७. रूपवान्, यह शब्द उर्दूमें ऐनसे लिखा जाता है, अतः यहाँ रानाके बजाये अधिक शुद्ध 'रअ़ना' लिखा है। जैसे शमा (शमअ़)।

है आख़िरतका ख़ौफ़ ग़मे-दीनवीके बाद
इक और ज़िन्दगी भी है इस ज़िन्दगीके बाद

वाइज़ ! यह बन्दगी कहीं बेकार हो न जाय
तू बन्दगीपर नाज़ न कर बन्दगीके बाद

पिन्हाँ[1] हज़ार ग़म हैं, मसर्रतकी[2] ओटमें
आँसू कहीं तड़पके न निकलें हँसीके बाद

इंसाँको है ज़रूरते-अम्नो-अमाँ[3] मगर
पैग़ामे-अम्न[4] दीजे न इन्साँ-कशीके[5] बाद

क्या उनसे रहबरीकी[6] तवक़्क़ो[7] रखे कोई
जो आ सकें न राह पै बे-रहरवीके[8] बाद

'रअ़ना' हज़ार बातकी यह एक बात है
कुछ लुत्फ़ दोस्तीमें नहीं दुश्मनीके बाद

१. छिपे हुए, २. ख़ुशियोंकी, ३. सुख-शान्ति, ४. सुल्ह-शान्तिका सन्देश, ५. मानव-हत्याके, ६. मार्गदिग्दर्शकताकी, ७. आशा, ८. मार्ग भटकनेके ।

'राना'—सुश्री सफ़िया सुल्तान 'रअ़ना'

तजल्लियाते-'रअ़ना'

हज़ार शुक्र कि रोने पै मुझको क़ाबू है
हज़ार चाहें हँसाना हँसा नहीं जाता
कुछ ऐसा अज़्मे-तमन्ना[1] निगहसे मिलता है
कभी-कभी जो ज़बाँसे कहा नहीं जाता
कुछ इस अदासे तवज्जह वह आप करते हैं
निगाहे-शौक़से अक्सर उठा नहीं जाता
शबे-फ़िराक़में[2] ऐसी भी मंज़िलें आईं
जहाँ पै अर्ज़े-तमन्ना किया नहीं जाता
नसीब क्या है, वह इंसान क्या है, ऐ 'रअ़ना'
कि जिससे ज़ख़्मे-मुहब्बत सिया नहीं जाता

मुहब्बतमें कुछ कामराँ[3] और भी हैं
तेरे ग़मके कुछ राज़दाँ[4] और भी हैं
सम्भलकर ज़रा जल्वए-तूरे-मूसा[5] !
हरीफ़े - रुख़े - कहकशाँ[6] और भी हैं

---

१. विचारोंकी दृढ़ता, २. विरह रात्रिमें, ३. सफल, कामयाब, ४. भेदी, जानकार, ५. मूसाको तूर पर्वतपर दिखाई देनेवाले चमत्कार, ६. मुख देखने-के स्पर्द्धी ।

क़मरको[1] है बेवजह क्यों नाज़ो-बेजा[2]
शबाबे - गुलो - गुलसिताँ[3] और भी हैं
अभी ना मुकम्मिल-सी बरबादियाँ हैं
निगाहोंमें कुछ बिजलियाँ और भी हैं
लबोंपर ही रक़्साँ[4] नहीं गीत उनके
निगाहोंमें राज़े - निहाँ[5] और भी हैं
मयस्सर नहीं सर्फ़ेग़ाम[6] तुमको 'रअ़ना' !
तुम्हारे सिवा कामराँ और भी हैं

हिजाबे-मुहब्बत[7] उठाये गये हैं
बड़ी शानसे हम बुलाये गये हैं
जिन्हें माहो-अंजुम[8] न अपना सके थे
वह अवसर मेरे दिलमें पाये गये हैं
जवानीकी ऋतुमें निगहकी ज़वानी
मुहब्बतके क़िस्से सुनाये गये हैं
वह ख़ुद ही इलाजे-मुहब्बत करेंगे
जो इक दर्द दिलमें उठाये गये हैं
वही अश्क थे हासिले-इश्क़ 'रअ़ना'
तेरी यादमें जो बहाये गये हैं

---

१. चन्द्रमाको, २. व्यर्थ गर्व, ३. उद्यान और फूल-जैसे रूपवान्, ४. थिरकते हुए, ५. छिपे भेद, ६. दुःख प्रदान होना, ७. प्रेममें संकोचके पर्दे, ८. चन्द्र-नक्षत्र ।

'राबिआः'[1]—सुश्री राबिआः बेगम हैदराबादी

ग़ज़ल

ज़ुल्फ़ बरहम[2] थी मिज़ाजे-यार गर बरहम[3] न था
बख़्त[4] यावर[5] था, दिले-वहशी[6] मगर बेरम[7] न था
परदए - फ़क़्रो - ग़ना[8] जिस दम दरे - दिलसे[9] उठा
एक थे शाहो-गदा[10], कुछ रंज बेशो-कम न था
आये हैं किस वक़्त यारब ! वे मरीज़े-ग़मके पास
लबमें गोयाई[11] न थी, आँखोंमें बाक़ी दम न था
देख ऐ दिल ! शाने - इस्तग़नाए - तर्के - आर्ज़ू[12]
ऐश कोई चीज़, कोई माले - जामे - जम[13] न था
हम हैं वे दरमान्दए - सामाने - राहत[14] हाय - हाय
अन्दमाले - ज़ख़्मके[15] भी वास्ते मरहम न था
कौन-सा दिल था इलाही ! जो अलम अफ़ज़ा[16] न था
कब हमारे वास्ते ख़ारे - ग़मे - पैहम[17] न था
'आयसः'[18] ! जबसे तबीअत ख़ूगरे - हरमाँ[19] हुई
था हुजूमे-यास[20] लेकिन दिल ब-बन्दे ग़म न था

---

१. साध्वी स्त्री, २. उलझी हुई, ३. आवेशमें, ४. भाग्य, ५. सहायक, ६. दिलरूपी हिरन, ७. दौड़नेको तत्पर, ८. याचना और दानका भेद (पर्दा), ९. हृदय-द्वारसे, १०. राजा-रंक, ११. बोलनेकी शक्ति, १२. निष्काम भावनाकी गरिमा, १३. भोग एवं सम्पदा व्यर्थ मालूम देने लगे, १४. साधन-हीन, १५ ज़ख़्मके इलाजको, १६. दुःखपूर्ण, १७. लगातार दुःखके काँटें, १८. आप इस उपनामसे भी शेर कहती है, १९. नैराश्य-की अभ्यस्त, २०. निराशाओंकी भीड़ ।

'राहत'—सुश्री राहतुन्निसा बेगम हैदराबादी

ग़ज़ल

उठते-उठते ही ज़मानेको बदलने वाले !
दूसरा नाम क़यामत, तेरी अँगड़ाई है
रंग इक बोलता जादू है अरे क्या कहना
तुझसे बढ़कर तेरी तसवीरमें गोयाई[१] है
फिर मेरी यूसिफ़े-[२]ख़ूबीके हैं जल्वे रौशन[३]
फिर मेरी आँखमें याक़ूबकी[४] बीनाई है
साज़ सद् गर्मिए-हंगामा है यह ऐ 'राहत' !
कि उम्मीदोंसे मेरी अंजुमन आराई है

दोरंगिए-जहाँसे ले दर्स[५] गर है आक़िल
इकजा है सीनाकोबी[६], इकजा हैं शादियाने[७]
हाँ अब समन्दे-हिम्मत[८] आगे बढ़ाके देखो
खाते रहोगे कब तक ज़िल्लतके ताज़ियाने[९]
करना है जो वह करलो क्या ज़ीस्तका[१०] भरोसा
फिर क्या करोगे जिस दम आई क़ज़ा[११] बुलाने

---

१. बोलनेकी ताक़त, २. रूपके, ३. चमत्कार प्रकट हो रहे हैं, ४. हज़रत यूसुफ़के पिताकी जैसी, ५. पाठ, ६. छाती कूटना, ७. नक़्क़ारे बज रहे हैं, ८. साहसरूपी अश्व, ९. हण्टर, १०. ज़िन्दगीका, ११. मृत्यु ।

'रूही'—सुश्री रूही देहलवी

हम मुहब्बतमें आह करते हैं
जैसे कोई गुनाह[1] करते हैं
वोह जिधर भी निगाह करते हैं
एक आलम[2] तबाह करते हैं
खा चुके हैं, फ़रेब[3] दुनियाके
फिर भी दुनियाकी चाह करते हैं
हम मिज़ाजे-गुलो-समन[4] पाकर
ख़ारो-ख़ससे[5] निबाह करते हैं
दिलको भी कुछ ख़बर नहीं होती
दिलमें कुछ यूँ वह राह करते हैं
हम फ़रिश्ते[6]-नहीं हैं ऐ वाइज़[7]!
आदमी हैं गुनाह करते हैं

यह तुम जानो कि तुम फूलोंपर इतने महर्बां क्यों हो ?
मगर यह तो कहो काँटोंसे इतने सरगिराँ[8] क्यों हो ?
चमनमें और भी तो आशियाने[9] हैं बुलन्दीपर
मेरा ही आशियाँ बर्बाद ऐ बर्क़े-तपाँ[10] क्यों हो ?

---

१. भूल, अपराध, २. दुनिया, ३. धोके, ४. फूल और चमेलीका स्वभाव, ५. काँटों और तिनकोंसे, ६. देवता, ७. उपदेशक, ८. अप्रसन्न, ९. नीड़, १०. क्रुद्ध बिजली ।

हमें लुटना था राहे-ज़िन्दगीमें लुट गये हम तो
मगर अब तुम पशेमाँ[१] ऐ अमीरे-कारवाँ[२] क्यों हो?

मुहब्बत दो दिलोंका एक पाकीज़ा ताअ़ल्लुक़ है
यह रब्ते-बाहमी[३] आलूदए - लफ़्ज़ो-बयाँ[४] क्यों हो?

अजलकी[५] राहमें एक मुख़्तसर[६] वक़्फ़ा[७] सही, हस्ती[८]
मगर यह मुख़्तसर वक़्फ़ा भी 'रूही' रायगाँ[९] क्यों हो?

हर नफ़स[१०] मौतका इशारा है
ज़िन्दगी आँसुओंका धारा है

हमने अपनी लहूकी सुर्ख़ीसे
चहरए - ज़िन्दगी निखारा है

आज गुलशनमें ख़ारो-ख़सने[११] भी
लाल - ओ - गुलका रूप धारा है

दिल धड़कता है इस तरह जैसे
कोई टूटा हुआ सितारा है

ज़िन्दगीके उदास लमहोंमें[१२]
अब तेरे नामका सहारा है

---

१. शर्मिन्दा, २. यात्री संघका सर्दार, ३. परस्परका सम्बन्ध, ४. वाणी या लेखनीका बन्दी, ५. मृत्युकी, ६. संक्षिप्त, ७. विराम, ठहराव, ८. जिन्दगी, ९. व्यर्थ, १०. श्वास, ११. काँटों और तिनकोंने, १२. क्षणोंमें।

हमने इस ज़िन्दगीसे घबराकर
बारहा[1] मौतको पुकारा है
जबसे वह हैं शरीके-ग़म 'रूही'
हर ग़मे-ज़िन्दगी गवारा है

इस दिलकी कायनात[2] है तेरी नज़रके साथ
ग़ुंचेकी[3] ज़िन्दगी है नसीमे-सहरके[4] साथ
आयेगी हाथ मंज़िले-मक़सूद[5] ख़ुद-ब-ख़ुद
देखो तो चलके चार क़दम राहबरके[6] साथ
हम जानते हैं गर्दिशे-शामो-सहरका[7] हाल
गुज़री है उम्र गर्दिशे-शामो सहरके साथ
ऐ रहमते-तमाम! तेरी शानके निसार[8]
दामो-क़फ़स[9] भी बख़्श दिये बालो-परके साथ
'रूही' किसीकी याद है इस दिलमें ज़ोफ़गन[10]
इक फूल खिल रहा है, तुलूए-सहरके[11] साथ

---

१. अक्सर, बार-बार, २. दुनिया, ३. कलीकी, ४. प्रातःकालीन वायुके, ५. अभिलषित यात्रा स्थल, ६. मार्ग-दिग्दर्शकके, ७. सन्ध्या और प्रातःकालकी परेशानियाँ, ८. क़ुर्बान, न्योछावर, ९. जाल और पींजरे, १०. प्रकाशमान, ११. सूर्योदयके।

वह शमए - दिल, वह रोशनीए - आरज़ू कहाँ
वह गुल कहाँ, वह अंजुमने - रंगो - बू कहाँ
नज़रोंका बार - बार वह मिलना तपाकसे
ख़ामोश - सी दिलोंकी वह अब गुफ़्तगू कहाँ
मंज़िलमें लाख हुस्ने - बहिश्ते - तरब सही
लेकिन वह दिल कशीए - ग़मे - जुस्तजू कहाँ
आदाबे - मैकदा है इसी तरह आज भी
लेकिन वोह बादानोश वह जामो - सुबू कहाँ
'रूही' निगाहे - दोस्तसे बरगश्ता इन दिनों
ले जाऊँ चाके - दिलको बराए - रफ़ू कहाँ

'शफ़क़'—सुश्री शफ़ीक़ बानो 'शफ़क़'

ग़ज़ल

बारहा[2] मैं अपनी तासीरे-फ़ुग़ाँ[3] देखा किया
बारहा बरहम निज़ामे-दो जहाँ[4] देखा किया
फिर रही थी कल जिन आँखोंमें बहारे-आशियाँ[5]
आज उन्हीं आँखोंसे ख़ाके-आशियाँ देखा किया
नामाबरको[6] शक हुआ उस वक़्त मेरी ज़ीस्तपर[7]
देर तक जब वह मेरा तर्ज़े-बयाँ[8] देखा किया
इक निगाहे-महर[9] जिन ज़र्रों पै[10] उनकी पड़ गई
मैं ज़मींपर उनको शक्ले-आसमाँ देखा किया
मिस्ले-ग़ुंचा[11] खिल गये मेरे दिले-पुर ग़मके दाग़[12]
बैठकर घरमें बहारे-गुलसिताँ[13] देखा किया
बूए-गुलकी तरह मैं आवारगाने-इश्क़का[14]
दोशपर[15] बादे-सबाके[16] आशियाँ देखा किया
ऐ 'शफ़क़' हमदर्दिए-उल्फ़त पै उसकी मैं निसार[17]
नज़अमें[18] वह मेरे मरनेका समाँ देखा किया

---

१. उषा, २. बार-बार, अनेकबार, ३. आहोंका प्रभाव, ४. लोक-परलोकके प्रबन्धकी अव्यवस्था, ५. घोंसलेका सौन्दर्य, ६. पत्र-वाहकको, ७. जीनेपर, ८. बोलनेका ढंग, ९. कृपा-दृष्टि, १०. कणों पै, ११. कलीके समान, १२. दुःखी दिलके दाग़, १३. उद्यानकी बहार, १४. प्रेममें आवारा, १५. कन्धेपर, १६. हवाके, १७. न्योछावर, १८. मृत्युके क्षणोंमें।

'शफ़ीक़'[1]—सुश्री शफ़ीक़ फ़ातिमा शेरी

बुलन्द निगाही

मैं ख़ुद फ़रेब[2] सही, दिल उम्मीदवार[3] तो है
वफ़ा हो, या न हो वादे-पै ऐतबार[4] तो है
बलासे पायें न मंज़िल मगर यह क्या कम है
भटकते फिरनेमें इस दिलको कुछ क़रार[5] तो है
गुमाने-तर्के-तअल्लुक़[6] न कीजियो नासेह[7]?
जो उसकी बज़्म[8] नहीं, उसकी रहगुज़ार[9] तो है
गिला[10] नहीं मुझे बे-कैफ़िए-हयातका[11] अब
खटकते रहनेको सीनेमें कोई ख़ार[12] तो है
विदाए-मौसमे-गुलका न ग़म कर ऐ बुलबुल!
वह इक नवा[13] कि जो है रूकशे-बहार[14] तो है
चमकके कहती है, ज़ुल्मतसे[15] इक यक़ींकी[16] किरन
सहर[17] न आई तो क्या, उसका इन्तज़ार तो है
हुए जो अश्क रवाँ[18] उन पै इख़्तियार न था
पै उनको तुझसे छुपाने पै इख़्तियार तो है

---

१. कृपालु, मित्र, २. स्वयं धोका खानेवाली, ३. आशावान्, ४. विश्वास, ५. चैन, सन्तोष, ६. सम्बन्ध-विच्छेदका विश्वास, ७. नसीहतकार, ८. महफ़िल, ९. मार्ग, आने-जानेका रास्ता, १०. शिकायत, ११. आनन्द रहित जिन्दगीका, १२. काँटा, १३. तान, आवाज़, १४. बहारके मुक़ाबिल, १५. अँधेरीसे, १६. विश्वासकी, १७. सुबह, १८. प्रवाहित, जारी ।

कोई समझ न सका गर उसे तो क्या शिकवा[१]
इसीमें .खुश है मेरा दिल कि .खुद अयार[२] तो है
ब-चश्मे-कम मेरी पस्तीको देखने वाले !
मेरी बुलन्द निगाहोंका तू शिकार तो है
फ़लकसे[३] कह दो कि सारे जहाँ पे छाजाये
जो मैं नहीं रही बाक़ी मेरा ग़ुबार तो है

सीता

तेरा नाम लेकर सहर[४] जागती है
तेरे गीत गाती है तारोंकी महफ़िल
तेरी ख़ाक या हिन्दका राज़े-अज़मत[५]
तेरी ज़िन्दगी मेरे ख़्वाबोंकी मंज़िल
कहानी तेरी सुनके थर्रा उठी मैं
धड़कने लगा धीरे-धीरे मेरा दिल

छुपाये हैं सीनेमें कुछ राज़[६] अपने
दकनके कुहस्ताँकी[७] तपती चटानें
मुसाफ़िर कुछ आये थे उन जंगलोंमें
फ़ज़ाँमें[८] हैं बिखरी हुई दास्तानें[९]
वह हमदर्द आँखें, वह बातोंमें जादू
वह मज़बूत बाज़ू वह भारी कमानें

---

१. शिकायत, २. परखनेकी कसौटी, ३. आकाशसे, ४. सुबह, ५. प्रतिष्ठा का भेद, ६. भेद, ७. पर्वतोंकी, ८. बहारोंमें, दिशाओंमें, ९. कहानियाँ ।

वह इक ख़ुद-फ़रामोश[1] पीकी पुजारन
कुटी पत्तियोंकी नदीका किनारा
निगाहोंसे छनता हुआ नूरे-उल्फ़त[2]
जबींपर[3] फ़रोज़ाँ[4] वफ़ाका सितारा[5]
बरसते हुए फूल ख़ुशियोंके हर-सू[6]
ज़माना भी था रुकके महवे-नज़ारा[7]

वह पैहम[8] सफ़र, वह हवादसके[9] तूफ़ाँ
वह पैरोंमें छाले, वह हँसती निगाहें
कभी दिलको ग़ुरबतमें[10] बहलाये रखना
कभी देसकी यादमें सर्द आहें
रही साल-हा-साल तू जादा पैमा[11]
यह धुन थी कि तै हों रियाज़तकी[12] राहें

मगर आज़माइश थी कुछ और बाक़ी
अभी सामने और भी इम्तहाँ थे
असीरी[13] फिर इक राक्शसकी असीरी
बहुत दूर तुझसे तेरे पासबाँ[14] थे
तेरी पाक फ़ितरत[15] मगर इक सिपर[16] थी
तेरे सामने राकशस नातवाँ[17] थे

१. अहम्से रहित, अपनापन भूली हुई, २. प्रेम-प्रकाश, ३. मस्तकपर, ४. प्रकाशमान्, ५. नेकियोंका नक्षत्र, ६. चारों तरफ़, ७. देखनेमें लीन, ८. लगातार ९ मुसीबतोंके, १०. परदेशमें, ११. पथिक, राहगीर, १२. तपस्याके दिन, १३. बन्दी जीवन, १४. रक्षक, १५. पवित्र स्वभाव, १६. ढाल, १७. राक्षस, दुर्बल ।

उठे फिर तेरा नाम लेकर जवाँ कुछ
जरी हौसलामन्द[1] सच्चे जयाले
हिला डाले ईवान[2] इक सल्तनतके
तेरे पासबाँ[3] थे बड़ी आन वाले
तेरी वापसी कर रही थी यह एलाँ[4]
न हारेंगे बातिलसे[5] टकराने वाले

सहे जो सितम बन गये सब फ़साना[6]
तलाफ़ीका[7] अब आ रहा था ज़माना
हुई आह लेकिन यह कैसी तलाफ़ी!
दुबारा मिला जंगलोंमें ठिकाना
भटकती रही दिल शिकस्ता-ओ-तन्हा[8]
कि लाज़िम था बारे-अमूमत उठाना

अजब हैं, यह इसरारे-वस्लो-जुदाई[9]
कि मंज़िलको पाकर भी मंज़िल न पाई
यह कैसा सितम है कि इज़्ज़तकी देवी
सबूत अपनी इज़्ज़तका देनेको आई
वह शोलेकी मानिन्द शोलोंसे[10] गुज़री
वह बिजली-सी बनकर ज़मीमें समाई

---

१. वीर उत्साही, २. महल, ३. रक्षक, ४. एलान, ५. आधिभौतिकवादसे, ६. इतिहास, ७. क्षयपूर्तिका, ८. भग्न हृदय और अकेली, ९. मिलन-विरहकी बात, १०. आग।

दुःखी माँ ! यही ज़िन्दगी है वह विरसा[1]
तेरी बेटियाँ जिसको पाती रही हैं
यूँ-ही राकशसे[2] वार करते रहे हैं
यूँ ही आगमें वह नहाती रही हैं
वह इज़्ज़तकी ख़ातिर तरसती रही हैं
वह सदियोंके सद्मे उठाती रही हैं

सती माँ ! कठिन है बहुत ज़िन्दगानी
बड़ा जुर्म है दहरमें[3] नातवानी[4]
दुकानोंमें होता है बे ख़ौफ़ सौदा
तड़पती है हर बेसहारा जवानी
ग़ुलामी है तक़दीर उन बेबसोंकी
न ख़ुद कर सकें अपनी जो पासबानी[5]

तेरा नाम लेकर अब उठना ही होगा
मिटाये नहीं मिटती बेताबए-दिल
पयाम[6] इक नया आज लाई हैं, किरनें
नमी आँसुओंकी हवामें है शामिल
तेरे सोज़े-दिलसे है जो शमअ़ रोशन
उसीके उजालेमें ढूँढेंगे मंज़िल

---

१. उत्तराधिकार, २. राक्षस, ३. संसारमें, ४. निर्बल होना, ५. रक्षा, ६. सन्देश ।

'शबनम'[1]—सुश्री सैयद: ख़ुर्शीद 'शबनम' भोपाली

धनक

इश्क़के अफ़साने लबपर थरथराकर रह गये
उनकी पलकोंपर सितारे झिलमिलाकर रह गये
क्या कहूँ आग़ाज़े-उल्फ़त सिर्फ़ इतना याद है
आँख मिलना थी कि वह दिलमें समाकर रह गये
रूठकर जाना किसीका इक क़यामत हो गया
साज़े-दिलके तार[2] जैसे झनझनाकर रह गये
वह मुहब्बत, वह ज़माना, वह ख़ुशी, वह ज़िन्दगी
आज कितने ही फ़साने याद आकर रह गये
यूँ तो उनको आर थी 'शबनम'से मिलनेमें मगर
सामना जब हो गया तो मुसकराकर रह गये

नग़मए-बहार

खिलाओ फूल तबस्सुमसे[3] गुलसिताँ[4] बन जाओ
गुलोंका नग़मा[5] बहारोंकी दास्ताँ बन जाओ
नज़र - नज़रमें सितारोंकी ताबिशें[6] भर दो
हमारी अंजुमने - दिलमें कहकशाँ[7] बन जाओ

---

१. ओस, २. हृदय-वीणाके तार, ३. मुसकानसे, ४. वाटिका,
५. संगीत, ६. चमक, ७. आकाशगंगा ।

भटक रहा है, अँधेरोंमें कारवाने - हयात
उठाओ पर्दए - रुख़ माहे ज़ौ - फ़िशाँ[1] बन जाओ
दिले - तबाहको तसकीं तो हो किसी सूरत
सितमसे बाज़ न आओ तो महर्बां बन जाओ
निबाहो रस्मे - मुहब्बत तुम अपनी 'शबनम'से
नज़रसे दिलमें समा जाओ राज़दाँ बन जाओ

शबनम-ओ-गुल

इक निगाहे - तबस्सुम[2] असर मिल गई
रोशनीए - बहारे - सहर[3] मिल गई
जब चमक दर्दकी कुछ सिवा हो गई
अपने ही दिलसे उनकी ख़बर मिल गई
वह समुन्दरकी वुसअतको[4] समझें भी क्या
जिनको मौजे - सदफ़[5] सतहपर[6] मिल गई
जब फ़रोज़ाँ[7] हुए अपने दाग़े - जिगर
शामे - ग़मको नवेदे - सहर[8] मिल गई
मरहबा[9] ! अज़्मे - नौ रहरवे - शौक़को[10]
ज़िन्दगीकी नई रहगुज़र[11] मिल गई
नग़मए - जाँ फ़िज़ा[12] छेड़ ऐ मुतरिबा[13] !
आज 'शबनम'की गुलसे नज़र मिल गई

---

१. चमकीला चाँद, २. मुसकराती नजर, ३. सुबहकी बहारकी रोशनी, ४. विस्तीर्णताको, ५. मोतियोंकी लहर, ६. किनारेपर, ७. रोशन, ८. सुब्हका निमन्त्रण, ९. शाबाश, १०. आशाके नवीन [illegible], ११. मार्ग, राह, १२. प्राण-संचारक संगीत, १३. गानेवाली ।

'शमा'—सुश्री अज़मत इक़्बाल शमअ़

दिलमें जब बेचैनियोंकी लज़्ज़तें पाती हूँ मैं
होशकी मंज़िलसे कोसों दूर हो जाती हूँ मैं

यह घटाएँ, यह बहारें, यह हवाएँ, यह फ़ज़ाँ
हर गुले-नज़्ज़ारामें[1] फ़ितरतकी[2] बू पाती हूँ मैं

इक कशा-कश[3] हर क़दम, हर लहज़ा पेश इक इम्तहाँ[4]
हर नफ़स[5] बरहम[6] निज़ामे-ज़िन्दगी[7] पाती हूँ मैं

कार फ़रमाँ[8] कौन-सी क़ूवत[9] दिले-महज़ूँ में[10] है
जी में क्या कुछ है, मगर कहने नहीं पाती हूँ मैं

हर तबस्सुम[11] भी मेरा इक दास्ताने-दर्द है
मुसकराती हूँ तो अश्क आँखोंमें भर लाती हूँ मैं

ज़ब्ते-ग़मकी चाराफ़रमाईको[12] गुज़रीं मुद्दतें
ज़िन्दगीकी कश-म-कशसे[13] अब तो घबराती हूँ मैं

साज़े-ख़ामोशीमें[14] भी हैं, ग़मके नग़्मे[15] सदहज़ार[16]
आश्कारा[17] है वोह जिसको राज़[18] बतलाती हूँ मैं

---

१. दर्शनीय फूलोंमें, २. प्रकृतिकी, ३. खींचातानी, बेचैनी, ४. प्रत्येक क्षण-परीक्षा, ५. हर श्वासमें, ६. अव्यवस्थित, ७. जीवन-व्यवस्था, ८. आज्ञा देनेवाली, ९. शक्ति, १०. शोकग्रस्त हृदयमें, ११. मुसकान, १२. चिकित्साके प्रयत्नको, १३. झंझटोंसे, १४. मौन वाद्यमें, १५. व्यथा-गीत, १६. हज़ारों, १७. प्रकट, १८. भेद, गुप्त ।

कितनी ला-महदूद[1] हैं, उस बेख़ुदीकी[2] वुसअतें[3]
मंज़िले-इद्राकसे[4] आगे बढ़ी जाती हूँ मैं

नब्ज़े-ग़म साकित[5] है, और नब्ज़े-फ़ितरत[6] है ख़मोश
जैसे इक खोई हुई शै आज फिर पाती हूँ मैं

गरचे 'शमअ़' जलबुझी 'शमए-शबिस्ताने-उम्मीद[7]
दिलके ख़ाकिस्तरमें[8] कुछ अपनी शरर[9] पाती हूँ मैं

जुस्तजू-ए-राह बाक़ी है न मंज़िलकी तलाश
मुझको ख़ुद है अब मेरे खोये हुए दिलकी तलाश

रोक ऐ हमदम! न मेरी अश्क-अफ़शानीको तू
महफ़िले-हस्तीको है इक शम-ए-महफ़िलकी तलाश

अब नज़र आये जहाँ अपने सिवा कोई न हो
दिलको राहे-शौक़में है ऐसी मंज़िलकी तलाश

दीदए-ज़ाहिरसे कब तक देखिए अन्दाज़े-दोस्त
कीजिए ऐ 'शमअ़'! अब इक दीदए-दिलकी तलाश

---

१. असीमित, २. तन्मयताकी, ३. विस्तीर्णता, ४. अक़्लके मार्गसे, ५. सहमी हुई, ६. विधाता, ७. आशा रूपी महफ़िलकी शमा, ८. राखके ढेरमें, ९. चिनगारी।

'शम्सी'[1]—सुश्री नवाब बेगम शम्सी

दास्ताने-हयात

दास्ताने-हयात[2] कुछ तो हो
सूरते-वाक़ियात कुछ तो हो

ग़लत अन्दाज़ ही सही लेकिन
निगहे - इल्तफ़ात[3] कुछ तो हो

न सही इशरते-हयात[4] मगर
फ़र्क़े-मौतो-हयात[5] कुछ तो हो

हस्तीए-बेसबात[6] कुछ भी नहीं
हस्तीए - बेसबात कुछ तो हो

महर्बानी ही महर्बानी क्या
महर्बानीमें बात कुछ तो हो

दौलते-दर्द मिल गई 'शम्सी' !
हासिले-कायनात[7] कुछ तो हो

---

१. सूर्य्य सम्बन्धी, २. जीवन-कथा, ३. कृपादृष्टि, ४. जीवन-सुख, ५. मृत्यु-जीवनमें अन्तर, ६ नाशवान् जीवन, ७. दुनियासे लाभ ।

जज़्बए-इश्क़

किस क़दर दूर हूँ
सख़्त मजबूर हूँ
जज़्बए - इश्क़से[1]
शोलए - तूर[2] हूँ
कोई पर्दा नहीं
फिर भी मस्तूर[3] हूँ
हँस रही हूँ मगर
रंजसे चूर हूँ
तेरा शिकवा नहीं
ख़ुद ही मजबूर हूँ
है तुम्हारा करम[4]
मैं जो मशहूर हूँ

नग़मए-शौक़

साज़े - उम्मीद बजा
नग़मए - शौक़ सुना
तीर इक और लगा
दर्दे-दिल और बढ़ा

१. प्रेम-भावनासे, २. पर्वतकी आग, ३. छिपी हुई, ४. कृपा।

देख ले आज फ़ज़ा
साग़रे - शौक़ उठा
कलियाँ उम्मीदकी चुन
दामने - दिलको सजा
मेरा ग़म कुछ भी न कर
अपना अफ़साना सुना
आज ग़मगीन है दिल
मेरे ज़ख़्मोंको हँसा
कुछ बता भी तो मुझे
क्यों हुआ मुझसे ख़फ़ा

'शमीम'[१]—सुश्री सफ़ीयः शमीम मलीहाबादी

कब तक रहूँ सरगश्तः - ओ-आलाम रसीदः[२]
आ सूरते - ताबीरमें[३] ऐ ख़्वाबे - नादीदः[४]
आ जा कि है अब दामने-उम्मीद बुरीदः[५]
बे - महरिए-एहबाब[६] है, क़िस्मत है कशीदः[७]
फिर सायेमें काकुलके[८] चमक ऐ रुख़े-रंगीं[९] !
फिर अब्रकी[१०] छाओंमें तड़प बर्क़े - रमीदः[११]
यह मौजे-तबस्सुम[१२] यह जबीने-अ़रक़ आलूद[१३]
गोया सरे - शबनम असरे - सुबहे - दमीदः[१४]
बे चैन है दिल, मुन्तज़िरे - दीद[१५] हैं नज़रें
ज़ुल्मातके[१६] परदेसे निकल हुस्ने - रसीदः[१७]
रोशन है तेरी यादसे फ़ानूसे - तख़ैय्युल[१८]
ऐ जल्वए - सदरंग[१९], चराग़े - दिलो - दीदः[२०]
बस इक निगहे-महर जमाले-चमन अफ़रोज़[२१]
हर फूल है गुलशनमें गरेबान दरीदः[२२]

---

१. सुगन्ध, २. उद्विग्नताओं और दुःखोंसे घिरी, ३-४. अनदेखे स्वप्नके परिणाममें, ५. आशाओंकी चादर फटी हुई, ६. इष्ट-मित्रोंकी उपेक्षा, ७. भाग्य विपरीत, ८. जुल्फ़ोंके, ९. रंगीनमुख, १०. बादलकी, ११. पलायन की गई बिजली, १२. हँसीकी लहर, १३. मस्तक पसीनेसे भींगा हुआ, १४. सुबहकी ओसका प्रभाव, १५. देखनेकी इच्छुक, १६. अँधेरोंके, १७. महान् सौन्दर्य्य, १८. कल्पनाओंका झाड़-फ़ानूस, १९. पूर्णरूपेण सौन्दर्य-प्रकाश, २०. दिल और आँखोंकी रोशनी, २१. उद्यानको विकसित करनेवाली सूर्य्य-दृष्टि, २२. गरेबान फाड़े हुए।

ऐ शिद्दते-अन्दोह[1] ठहर, देख कि दिलसे
होने ही पै है रिश्तए - एहसासे - बुरीद:[2]
अब कश-म-कशे-यास[3] है बस याद है इतनी
देखा था कभी हमने भी इक ख़्वाबे-दमीद:[4]
मुमकिन हो तो अब पर्दए - इसरार[5] उठा दे
ऐ ग़ुंचए - मस्तूर[6], 'शमीमे' - नाशुनीद:[7]

चमनमें जश्ने - उरूसे - बहार[8] है आ जा
उरूसे-नग़मा[9] सरे-आबशार[10] है आ जा
हर-एक जुम्बिशे गुलमें[11] हज़ार नग़मे हैं
हर-इक नसीमका[12] झोंका बहार है आ जा
सरूरबख़्श[13] घटाओंके मस्त सायेमें
जमाले-लाल-ओ-गुल[14] ताबदार[15] है आ जा
रविश-रविश पै छिड़ी है हदीसे-लाल-ओ-गुल
कली-कलीको तेरा इन्तज़ार है आ जा
तुझे ख़बर भी है इस मौसमे-बहारमें भी
'शमीम' नाविके-ग़मका[16] शिकार है आ जा

---

१. दुःखकी अधिकता, २. भावनाओंकी चादर फटनेवाली है, ३. निराशाओंसे छेड़छाड़, ४. उगता हुआ, ५. गोपनीय पर्दे, ६. छिपी कली, ७. नहीं सुनी हुई, ८. बहारकी दुल्हनका उत्सव, ९. संगीतकी दुल्हन, १०. झरनेके समीप, ११. फूलोंकी हलन-चलनमें, १२. हवाका, १३. आनन्दप्रद, १४. लालफूल और अन्य फूलोंका सौन्दर्य, १५. आभायुक्त, १६. दुःखरूपी तीरोंकी ।

यह किसके फ़रेब खा रहे हैं
अरमानोंसे दिल बसा रहे हैं

रह-रहके उमड़ रहे हैं आँसू
यह दिलसे किसे भुला रहे हैं

बेचैन हैं बिजलियाँ फ़लकपर[1]
गुलशन हैं कि मुसकरा रहे हैं

हो ख़ैर चिराग़े - बज़्मे - हसरत[2]
क्यों शामसे झिलमिला रहे हैं

सावनके 'शमीम' मस्त बादल
क्या जानिए क्यों रुला रहे हैं

कुछ ख़बर हो सकी न तेरे बग़ैर
कब बहार आई, कब ख़िज़ाँ आई

ख़िज़ाने[3] ख़ाक उड़ाई हज़ार गुलशनमें
चमनमें फूल मगर मुसकराये जाते हैं

जहाँ उजड़ा, वहीं तामीर[4] होगा आशियाँ[5] अपना
तड़पती बिजलियोंपर हँस रहा है गुलसिताँ[6] अपना

---

१. आस्मानपर, २. अभिलाषाओंकी महफ़िलके चिराग़, ३. पतझड़ने, ४. निर्माण, ५. नीड़, ६. उद्यान।

वे तसव्वुरमें[1] यकायक आ गये
हिज्रकी[2] सूरत बदलकर रह गई

यह किसके अश्क थे, जो बन गये तबस्सुमे-गुल[3] ?
यह किसके दिलकी तमन्ना बहार होके रही ?

जल बुझी शम-ए-आर्ज़ू[4], लेकिन—
इक धुआँ-सा ज़रूर उठता है

क्या क़यामत थी परदादारिए-ग़म
मुसकराते ही आ गये आँसू

बेख़बर ! मंज़िले-मक़सूद[5] नहीं दूर, मगर—
आलमे-होशसे हस्तीको गुज़र जाने दो

उनकी नज़रको जुरअते-पुरसिश[6] न हो सकी
दिल ग़मपै इस क़दर हुआ नाज़ाँ[7] कभी-कभी

---

१. ध्यानमें, २. विरहकी, ३. फूलकी मुसकान, ४. अभिलाषा-दीप, ५. लक्ष्य केन्द्र, ६. हालचाल पूछनेकी हिम्मत, ७. गर्वीला ।

उठो कि शबमें[1] जमाले-सहर[2] तलाश करें
हुजूमे-ख़ारमें[3] गुलहाये-तर[4] तलाश करें

लबाए-अब्रमें[5] ढूँढें फ़रोग़े-माहो-नजूम[6]
रिदाए-ख़ाकमें[7] लालो-गुहर[8] तलाश करें

हरीमे-ज़हनके[9] सब झिलमिला रहे हैं चिराग़
चलो तजल्लिए-शम्सो-क़मर[10] तलाश करें

रबाबे-वक़्त पै छेड़े तरानए-अबदी[11]
दयारे-मर्गमें[12] उम्रे-ख़िज़र तलाश[13] करें

फिर आओ तनतनए-ख़ुसरवीकी[14] डालें तरह
फिर आओ ताबिशे-ताजो-क़मर[15] तलाश करें

तवहम्मातकी अफ़सुर्दावादियोंमें[16] 'शमीम'
दमाग़े-गर्मो-दिले मअ़तबर[17] तलाश करें

---

१. रातमें, २. प्रातःकालीन सौन्दर्य्य, ३. काँटोंकी झाड़ियोंमें, ४. ताज़े फूल, विकसित कुसुम, ५. बादलोंकी लौमें, ६. चन्द्र-नक्षत्रोंका प्रकाश, ७. धूल रूपी चादरमें, ८. लाल-मोती, ९. मस्तिष्क-परिधिके, १०. सूर्य्य, चन्द्रका प्रकाश, ११. युगानुकूल रूपी वाद्यपर अमर संगीत गायें, १२. मृत्यु-पथमें, १३. खिज़रकी स्थायी आयु, १४. बादशाही रोब-दाबकी नींव, १५. राज्य-मुकुट और चन्द्रमाकी चमक, १६. बुराइयोंकी उजाड़ घाटियोंमे, १७. विश्वस्त हृदय और ओजस्वी मस्तक।

एजाज़े-नग़मा

अगर मैं तिलस्मे-तकल्लुम[१] दिखा दूँ
तरानोंसे बज़्मे-सुरैया[२] बना दूँ
तल्ख़-आशना[३] तल्ख़[४] आहोंको कर दूँ
क़बाए-हवादसके[५] पुर्ज़े उड़ा दूँ
अगर चर्ख़को[६] अज़्म[७] दूँ बन्दगीका
दरे-ख़ाकपर माहे-ताबाँ[८] झुका दूँ
अगर नग़मए-सरमदी[९] छेड़ दूँ मैं
ख़िज़ाँमें गुलोंको महकना सिखा दूँ
अजल भी मेरे ग़म पै आँसू बहाये
अगर नालए-ज़िन्दगानी सुना दूँ
अगर छेड़ दूँ साज़ ख़िल्वतमें[१०] तेरी
चिराग़ोंको ताक़े-हरमसे[११] गिरा दूँ
कहो तो बदल दूँ निज़ामे-दो आलम
जहन्नुममें फूलोंकी जन्नत बसा दूँ
गुलिस्ताँका हर फूल दिल बनके महके
अगर एक अश्के-तमन्ना गिरा दूँ
'शमीम' आह कर दूँ तो लौ दे ज़माना
फ़ज़ा मुसकरा दे अगर मुसकरा दूँ

---

१. वार्तालापका तिलिस्म, २. एक नक्षत्रका नाम, ३. आनन्दसे परिचित, ४. कड़वी, ५. मुसीबत रूपी परिधानके, ६. आकाशको, ७. निश्चयका, इच्छाका संकेत, ८. चन्द्रमा, ९. नित्यताका सन्देश, १०. एकान्तमें, ११. मसजिदके आलेसे।

रूबाइयाँ

शर्मिन्दा कभी न रूहे-महनत[1] होगी
हिम्मत है तो हर गाम[2] पै नुसरत[3] होगी
इस वक़्त अगर तुझसे गुरेज़ाँ[4] है तो हो
कल वक़्तको ख़ुद तेरी ज़रूरत होगी

कुछ भी नहीं ज़िन्दगीमें ख़िदमतके सिवा
सोज़े-दिलो-दर्द आदमीयतके[5] सिवा
औरंगो[6]-निशानो[7]-चतरो[8]-मुहरो[9]-दीहीम[10]
सब हेच[11] हैं, सब हेच हैं, मुहब्बतके सिवा।

किस तौरसे देख जी रहा है, इंसाँ
ख़ुद अपने कफ़नको सी रहा है इंसाँ
कुछ तुझको भी मालूम है ऐ रब्बे-जलील!
इंसानका ख़ून पी रहा है इंसाँ

---

१. दिली श्रम, मनसे किया हुआ काम, २. पग-पग पै, ३. विजय, सफलता, ४. उपेक्षाका भाव लिये हुए है, ५. मानवताके दुःख-दर्दके सिवा, ६. राज्य-सिंहासन, ७. राज्य-पताका, ८. छत्र, ९. राजकीय मुहर, १०. कलगी, राज्य-मुकुट, ११. तुच्छ।

गुलशनकी हर इक कली चटक जाती है
पेशानिए-आफ़ाक़[1] दमक जाती है
जब नाज़से वोह कुछ मुसकरा देते हैं
गुलज़ारमें चाँदनी छिटक जाती है

तूफ़ानमें किश्तीको बढ़ाऊँ कैसे ?
आँधीमें चिराग़े-दिल जलाऊँ कैसे ?
यह क़हर[2], हवादस[3] यह हुजूमे-आलाम[4]
अल्लह यह बारे-ग़म[5] उठाऊँ कैसे ?

बेज़ार तसन्नअ[6] हूँ सदाक़तकी[7] क़सम
बारफ़्तए-नफ़रत[8] हूँ मुहब्बतकी क़सम
अब तालिबे-ज़ुल्मत[9] हूँ तजल्ली[10] कैसी
सरशार[11] मए-ग़म[12] हूँ मसर्रतकी[13] क़सम

---

१. विश्व-मस्तक, २. ज़ुल्म, ३. मुसीबतें, ४. दुःखोंकी भीड़, ५. दुःखोंका बोझ, ६. बनावटसे परेशान, ७. सत्यकी, ८. शिथिल घृणा, ९. अँधेरोंकी इच्छुक, १०. प्रकाशकी, ११. मस्त, नशेमें, १२. दुःख रूपी मदिरा पीकर, १३. आनन्दकी सौगन्ध ।

'शमीम[1]'—सुश्री किशोर शमीम कैलाशपुरी

प्रेम बड़ा आज़ार[2]

प्रेमके राग न गाना पगले
प्रेम-नगर मत जाना पगले
राह यह है पुरख़ार[3], पगले
प्रेम बड़ा आज़ार

प्रेममें रोना ही होता है
जीवन खोना ही होता है
जीत हो या कि हार, पगले
प्रेम बड़ा आज़ार

इस संसारमें प्रीति नहीं है
कोई किसीका मीत नहीं है
झूठा जगका प्यार, पगले
प्रेम बड़ा आज़ार

तू ही बता क्या पाया आख़िर
प्रीति किये पछताया आख़िर
अब रोना बेकार, पगले
प्रेम बड़ा आज़ार

---

१. सुगन्ध, २. दुःखदायी, ३. कण्टकाकीर्ण ।

'शमीम'—सुश्री सलमा 'शमीम'

शिकायत

अपने क़रारो - क़ौल भुलाये हुए हो तुम
नक़्शे - वफ़ाको दिलसे मिटाये हुए हो तुम
पहले मेरी हँसीमें रहा करते थे शरीक
अब मेरे आँसुओंमें समाये हुए हो तुम
अव्वल मेरी वफ़ाओंके अरमान थे तुम्हें
अब-खुद वफ़ासे हाथ उठाये हुए हो तुम
बाज़ी थी जिस बिसातपर अपनी जमी हुई
नक़्शा कुछ और उस पै जमाये हुए हो तुम
ग़ैरोंका क्या गिला[1] कि वह कम्बख़्त ग़ैर हैं
अफ़सोस अपने होके पराये हुए हो तुम
खुलता नहीं यह हाल कि क्या हो गया तुम्हें
क्यों अब यह हाल अपना बनाये हुए हो तुम
पोशीदा[2] क्या नज़रमें कोई राज़[3] है नया
मेरी तरफ़से आँख चुराये हुए हो तुम
रहने लगे हो सामने मेरे कुछ इस तरह
जैसे किसीको मुझसे छुपाये हुए हो तुम
बाँ ई-हमा वह चीज़ है जानो - दिले-'शमीम'[4]
जिस चीज़पर निगाह जमाये हुए हो तुम

---

१. शिकायत, २. छिपा हुआ, ३. भेद । ४. सुगन्ध ।

'शमीम'—सुश्री क़ैसर शमीम

आज मुझे कुछ गाने दो

रो-रोकर इक उम्र गँवाई, आज मुझे कुछ गाने दो
अपने बेकल, पागल मनको गीतोंसे बहलाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

जीवनके दुख-सुखकी कहानी कहते-कहते जुग बीते
आँखोंके झरनोंसे पानी बहते - बहते जुग बीते
बहते पानीकी धाराको आज ज़रा रुक जाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

नीले सागरमें इक किश्ती हौले - हौले बहती है
इस किश्तीमें चाँदकी रानी तारोंसे कुछ कहती है
जो कुछ कहती है वह रानी खुलके उसे कह जाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

अपने भूले-बिसरे सपने आज मुझे याद आते हैं
मेरे कोमल हृदयको फिर तड़पाते हैं बरमाते हैं
उन भूले - बिसरे सपनोंको और मुझे तड़पाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

उन नैनोंकी नीलाहटसे माँद हुआ जाता है गगन
उन होंटोंका मद पी-पीकर झूम रही है आज पवन
आज तो इस मतवाली पवनको अमृत रस छलकाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

'शमीयः'—सुश्री शमीयः शाहिद

ज़ीस्तको[1] पुर बहार[2] क्या करते
दिल ही था सोगवार[3] क्या करते

आपके ग़मकी बात है वर्ना
ख़ुदको हम बेक़रार[4] क्या करते

आपका एतबार ही कब था
आपका इन्तज़ार क्या करते

थी हमें क्या बहारसे उम्मीद
हम उमीदे-बहार क्या करते

ज़ीस्तपर कब हमें भरोसा था
आपपर एतबार क्या करते

थे न जिनको अज़ीज़[5] ख़ारे-चमन[6]
वह भला गुलसे प्यार क्या करते

'शमीयः' जब न शब[7] ही रास आई
सुबहका इन्तज़ार क्या करते

---

१. ज़िन्दगीको, २. बहारसे परिपूर्ण, ३. शोक-सन्तप्त, ४. बेचैन, ५. प्रिय, ६. बाग़के काँटे, ७. रात।

'सलमा'—सुश्री सलमा बी० ए०

धड़कनें

उठाना मेरा साज़े-हस्ती[1] उठाना
बहुत देरसे मुन्तज़िर[2] है ज़माना

कभी मुसकराहट कभी चश्मे-पुरनम[3]
बस इतना-सा है ज़िन्दगीका फ़साना[4]

तेरे इश्क न होनेसे हैं बे-हक़ीक़त[5]
यह रंगीं फ़ज़ाएँ[6] यह मौसम सुहाना

शबे-ग़म[7] सितारे भी बुझने लगे हैं
मेरे दिलके दाग़ो ! कोई लौ बढ़ाना

मुझे आज भी याद है दुश्मने-जाँ !
वह आग़ाज़े-उल्फ़तका[8] रंगीं ज़माना

वजूदे - मुहब्बत[9] मआले-तमन्ना[10]
हक़ीक़त-हक़ीक़त, फ़साना-फ़साना

न तेरा गिला[11] है न दुनियाका शिकवा
लिखा है मुक़द्दरमें आँसू बहाना

---

१. जीवन-वाद्य, २. प्रतीक्षित, ३. अश्रुपूर्ण नेत्र, ४. इतिहास, ५. व्यर्थ, ६. बहारें, ७. दुःखकी रातोंमें, ८. प्रेमकी शुरुआतका, ९. प्रेमका अस्तित्व, १०. इच्छाओंका परिणाम, ११. शिकायत ।

कोई छेड़ दे नग़महाए-मुहब्बत[1]
बहुत ग़ौरसे सुन रहा है ज़माना
तेरी याद ही वजहे-तस्कीने-दिल[2] है
बड़ा ही करम[3] है, तेरा याद आना
मैं दुनियामें ग़मके भी क़ाबिल नहीं क्या
तेरा दर्द भी छीनता है ज़माना
नहीं ज़िन्दगानीसे मायूस 'सलमा'
तग़ैय्युर पसन्दी मज़ाजे-ज़माना

ज़ेरे-लब

हुआ है जबसे ग़मे-दोस्त ! तुझसे प्यार मुझे
सकूने-दिल[4] भी गुज़रने लगा है बार[5] मुझे
मेरी तबाही पै इस तरह हाथ मल-मलकर
न कर ख़ुदाके लिए और शर्मसार मुझे
तुम्हारी यादकी ख़ुशबूके नर्म झोंकोंसे
उदास कर गई रंगीनिए-बहार मुझे
किया है बार-हा[6] महसूस मैंने शामे-फ़िराक़[7]
कि जैसे करता हो छुप-छुपके कोई प्यार मुझे

---

१. प्रेमगीत, २. दिलके चैनका कारण, ३. कृपा, ४. दिलका चैन, ५. भार, ६. बार-बार, ७. विरह-सन्ध्या ।

यूँ ज़ेरे-लब न सुना दास्ताने-उल्फ़त-ओ-शौक़
पुकारना है तो खुलकर ज़रा पुकार मुझे

ऐ इज़्तरावे-तमन्ना[1] ! तेरी हयात दराज़[2]
कि हो चला है ग़मे-ज़िन्दगीसे प्यार मुझे

फ़रेब[3] खाये हैं, दिलने कुछ इस तरह 'सलमा'
नहीं रहा है किसी पर भी एतबार मुझे

१. अभिलाषाओंकी बेचैनी, २. उम्र बड़ी हो, ३. धोके ।

'सलमा'—सुश्री सलमा मन्सूर

धड़कनें

फ़रेबे-इश्क़[1] पैहम[2] खा रही हूँ
तेरी बातोंमें फिर भी आ रही हूँ
तुझे देखा है मैंने जिस घड़ीसे
मैं अपने-आपसे शर्मा रही हूँ
न समझी मैं यह अपना राज़[3] अबतक
तड़पती हूँ कि मैं तड़पा रही हूँ
बढ़ी जाती है मेरे दिलकी धड़कन
किसीको आज मैं याद आ रही हूँ
ख़ुदा जाने यह आ पहुँची कहाँ मैं
कि ख़ुदको अजनबी-सा पा रही हूँ
बसाया था जिसे सौ आर्ज़ूसे
उसी दुनियासे मैं अब जा रही हूँ
है 'सलमा' इब्तदा जिनकी क़यामत
मैं उन क़िस्सोंको अब दुहरा रही हूँ

---

१. प्रेमके धोके, २. लगातार, ३. भेद ।

'सलमा'—सुश्री सलमा अख़्तर

ज़ख़्मे-दिल

ज़ख़्मे-दिलपर दवा तो लग जाये
आँख मेरी ज़रा तो लग जाये

ख़ून हो-होके दिल टपकता है
इसके मुँहको मज़ा तो लग जाये

रक़्से-आलमको[1] यूँ ही रहने दो
दिल मिरा एक जा तो लग जाये

क्यों दरे-मैकदाको[2] बन्द करें
शैख़ गुज़रे हवा तो लग जाये

उसको दुनियामें ढूँढ़ ही लेंगे
अपने दिलका पता तो लग जाये

ख़ाक ही होके चैन पा जाऊँ
मुझको इक बद्दुआ तो लग जाये

तुझको मेरा पता लगाना है
मेरे आलममें[3] आ, तो लग जाये

लाख वह बेवफ़ा सही 'सलमा'
उसको मेरी वफ़ा तो लग जाये

---

१. दुनियाके चक्रको, २. मदिरालयके द्वारको, ३. दुनियामें, स्थितिमें।

सागरे - ग़म पिया, पिया ही क्यों
रोते - रोते जिया, जिया ही क्यों

अश्क ही पूँछे मेरी आँखोंसे
तुमने कुछ भी किया, किया ही क्यों

अब तो काँटे भी दे रहे हैं मज़ा
हाये अब गुल दिया, दिया ही क्यों

शब अँधेरी सही गुज़र जाती
तुमने बुझता दिया, दिया ही क्यों

चाके - दामन बहुत था सीनेको
ज़ख़्मे-'सलमा' सिया, सिया ही क्यों

'सहर'—सुश्री तबस्सुम 'सहर'

समझी नहीं हयातकी[1] शामो-सहरको[2] मैं
हैरतसे देखती रही शम्सो-क़मरको[3] मैं
यह कौन ग़ायबाना[4] है, जल्वे दिखा रहा
बेताब पा रही हूँ जो अपनी नज़रको मैं
मंज़िलका होश है, न है अपनी ख़बर मुझे
मुद्दतसे तक रही हूँ तेरी रहगुज़रको[5] मैं
दिलकी कली कभी न खिली फिर भी आज तक
हसरतसे[6] तक रही हूँ नसीमे-सहरको[7] मैं
मेरे जनूने-शौक़का आलम[8] तो देखिए
सज्दे[9] भी कर रही हूँ तो अपने ही दरको[10] मैं
मुड़-मुड़के देखने पर वह मजबूर हो गये
अब कामियाब पाती हूँ अपनी नज़रको मैं
यह किसके नक़्शे-पा[11] ने हैं थामे मेरे क़दम
मंज़िल समझकर बैठ गई रहगुज़रको मैं
माना नहीं है कोई तबस्सुम - नवाज़ आज
फिर भी परख रही हूँ किसीकी नज़रको मैं

---

१. ज़िन्दगीको, २. सन्ध्या और प्रातःकालको, दिन-रातको, ३. सूर्य-चन्द्रको, ४. छिपे-छिपे, ५. रास्तेको, ६. ललचाई नज़रोंसे, ७. प्रातः-कालीन वायुको, ८. प्रेमोन्मादकी अवस्था, ९. मस्तक झुका रही हूँ, १०. द्वारको, ११. चरण-चिह्नोंने ।

'सहाब'[1]—सुश्री सहाब क़िज़लबाश देहलवी

ग़ज़ल

हज़ार बातें हैं दिलमें अभी बतानेको
मगर ज़बाँ नहीं मिलती हमें सुनानेको

हम अहले-ज़र्फ़ अभी तक हैं एक जिंसे लतीफ़
जिन्हें कुचल दिया दुनियाने आज़मानेको

वह आँखें आज सितारे तराशती देखीं
जिन्होंने रंगे-तबस्सुम दिया ज़मानेको

हमारे फूल, हमारा चमन, हमारी बहार
हमींको जा नहीं मिलती है आशियानेको

लरज़के रख दिया जिस बारको फ़रिश्तोंने
वह हमको बख़्श दिया तुमने आज़मानेको

'सहाब' इतने तग़ैय्युर - नवाज़ हैं हम भी
कि अपने नग़मोंने चौंका दिया ज़मानेको

---

१. मेघ, अभ्र ।

'साहिरः'[1]—सुश्री साहिरः इटावी

जब कली कोई मुसकराती है
मेरी आँख अश्कसे भर आती है

दूर बजती हो जैसे शहनाई
इस तरह उनकी याद आती है

दिलकी किश्ती निकलके तूफ़ाँसे
आके साहिल पै[2] डूब जाती है

जैसे जमनामें अक्से-ताज महल
दिलमें यूँ उनकी याद आती है

सुबहे-नौकी[3] किरन उफ़क़के[4] क़रीब
सुर्ख़ घूँघटमें मुसकराती है

जब नया आशियाँ बनाती हूँ
दिलमें बिजली-सी कौंद जाती है

तेरी ख़ातिर जो मर मिटे ऐ दोस्त!
क्या तुझे उनकी याद आती है

साज़े-दिल सुनके 'साहिरा' अक्सर
आर्ज़ूओंको नींद आती है

---

१. मायाविनी, जादूगरनी, २. किनारे पै, ३. सूर्य्यकी, ४. ऊषाके।

मुझको दिलसोज़ नज़ारोंका[1] ख़्याल आता है
उजड़े गुलशनकी बहारोंका ख़्याल आता है

बज़्मे - इशरतमें[2] बहारोंसे खेलनेवाले
क्या तुझे ग़मके भी मारोंका ख़्याल आता है

जब कोई गीत मचलता है मेरे होंठोंपर
दिलके टूटे हुए तारोंका ख़्याल आता है

डूब जाते हैं वही ज़ोरे - तलातुममें[3] नदीम[4] !
जिनको तूफ़ाँ में कनारोंका ख़्याल आता है

उनको ऐ 'साहिरा' मिलती नहीं मंज़िल अपनी
जिनको तूफ़ाँ में सहारोंका ख़्याल आता है

---

१. दग्ध - हृदयके दृश्योंका, २. सुख-वैभवकी गोदमें खेलनेवाले, ३. तूफ़ानोंके वेगमें, ४. मित्र ।

'सुरूर'[1]—सुश्री बेगम सुरूर

हमने तेरे नज़रके इशारे जो पा लिये
जितने भी ग़म मिले वह ख़ुशीसे उठा लिये

अब तो ख़ुशीके नामसे डरने लगा है दिल
रोये हैं मुद्दतों जो, ज़रा मुसकरा लिये

यूँ-ही ज़रा ख़मोश जो रहने लगे हैं हम
लोगोंने कैसे - कैसे फ़साने बना लिये

कहला रहे हैं करके वफ़ा बे-वफ़ा हमीं
अच्छा हुआ यह ग़म भी हमींने उठा लिये

हम भी यह चाहते हैं जियें और ख़ुश रहें
यह आर्ज़ू हमारे भी दिलसे निकालिये

मैं हूँ तेरे करमसे[2] जो महरूम[3] हूँ अभी
लोगोंने अपने-अपने मुक़द्दर बना लिये

अपनी तो आर्ज़ू कोई पूरी न हो सकी
सारे जहाँमें फिरते रहे मुद्दआ लिये

शाने-करम पै हर्फ़ न आ जाये ऐ ख़ुदा
हमने अगर दुआके लिए हाथ उठा लिये

सौ मुँह हज़ार बातें हैं, दुनियामें ऐ 'सुरूर' !
अल्लाह आप अपनी निगाहें सँभालिये

---

१. हर्ष, हल्का नशा, २. कृपासे, ३. वंचित ।

'सोज़'[1]—सुश्री नसीम : 'सोज़'

जहाने-आर्ज़ू

आँसुओंको ख़ुश्क करके मुसकराये थे मगर
हाले - दिल अपनी निगाहोंसे नुमायाँ[2] हो गया
ऩग़्मःज़न[3] है फिर मेरे रंगीं तसव्वुरमें[4] कोई
फिर रबाबे - ज़िन्दगीका[5] तार लरज़ाँ हो गया
क्या तुम्हें भी अहदे-रफ़्ता[6] याद आता है कभी?
या तुम्हारे वास्ते ख़्वाबे - परेशाँ हो गया?
फिर नवेदे - जाँ फ़ज़ाँ[7] देने लगी बादे-सबा[8]
फिर जहाने - आर्ज़ू जन्नत - बदामा हो गया

चाँदनी

चाँदनी रातमें मेरे हमदम!
कोई मल्लाह गीत गाता है
बाँसुरीकी लतीफ़ तानोंमें
अपना क़िस्सा कोई सुनाता है
चाँदनीकी हसीन रातोंमें
दूर जो सैरको मैं जाती हूँ
सारी दुनियाके ज़र्रे - ज़र्रेपर
मुसकराहट ख़ुशीकी पाती हूँ

---

१. जलन, तपिश, २. प्रकट, ज़ाहिर, ३. गा रहा है, ४. ध्यानमें, ५. जीवन-वीणाकी, ६. बीता ज़माना, ७. प्राण-संचारक सन्देश, ८. वायु।

डर है, मुझको मेरी निगाहोंसे
क़िस्सए-दिल बयाँ न हो जाये
फिर तमन्ना है उनसे मिलनेकी
फिर तमन्ना रायगाँ[1] न हो जाये
फिर जफ़ा-केशसे[2] शिकायत है
फिर मुख़ालिफ़[3] जहाँ न हो जाये
दामने-सब्र छूटा जाता है
दिल कहीं नौहाख़्वाँ[4] न हो जाये

साजनसे

कोयलिया जब बनमें गाये
भूली बिसरी याद दिलाये
आँखोंमें आँसू भर आये
धीरे-धीरे लब पै आये
हाये मनवा हाये !

प्रीतिका नाता जोड़के साजन
मन-मूरखको तोड़के साजन
मुझको रोता छोड़के साजन
किस नगरीको जाये !
हाये मनवा हाये !

---

१. व्यर्थ, २. अत्याचार स्वभावीसे, ३. विरुद्ध, ४. शोकाकुल ।

जैसे कोई पंछी आके
फूलको अपना मीत बनाके
फिर उड़ जाये गीत सुनाके
ऐसे तुम भी आये
हाये मनवा हाये!

दुखिया मन कैसे बहलाऊँ!
नयनोंसे मैं नीर बहाऊँ
सपनोंमें तुमको पा जाऊँ
फिर नैना खुल जाये
हाये मनवा हाये!

आओ

तुम बिन मोरी दुनिया सूनी
मन है सूना नैन है सूनी
आओ मन-मन्दिरमें आओ
आओ और नज़रोंमें समाओ
यह ऊदी-ऊदी बरखायें
महकी-सी यह प्यारी फ़ज़ायें
आओ मन-मन्दिरमें आओ
दर्शनको न अब तरसाओ

बादल जब कि हवा पै झूले
दिल भी धड़के हौले-हौले
आओ मन-मन्दिरमें आओ
व्याकुल जीको चैन दिलाओ
भूल रही हूँ अपना राग
बुझ रही है आशाकी आग
आओ मन-मन्दिरमें आओ
नैनोंका सपना बन जाओ

आती हैं मौजें मुँह खोले
प्रीतकी नैया डग-मग डोले
आओ मन-मन्दिरमें आओ
नैया अपनी पार लगाओ

'हज़ीं'—सुश्री आमिना नफ़ासत 'हज़ीं'

हालते-दिल अयाँ[1] हो गई
ख़ामुशी तरजुमाँ[2] हो गई
हालते-ज़िन्दगीका बयाँ[3]
दुख-भरी दास्ताँ हो गई
कोशिशे - इल्तफ़ातो - करम[4]
कोशिशे-रायगाँ[5] हो गई
दास्ताने - ग़मे - आर्ज़ू[6]
जब बढ़ी बेकराँ[7] हो गई
खुल गया ज़िन्दगीका भरम
हर नफ़स[8] इम्तहाँ हो गई
आजके दौरमें आबरू
आशिक़ोंका जहाँ हो गई
तुमने हँसकर जो देखा मुझे
ज़िन्दगी नग़मा-ख़्वाँ[9] हो गई
रखके नामे-वफ़ा दुश्मनी
आदते-दोस्ताँ हो गई
तुमको उसका बहुत पास था
लो 'हज़ीं'[10] शादमाँ हो गई

---

१. प्रकट, ज़ाहिर, २. मौन रहनेसे ही सब भाँप गये, ३. कथन, ४. कृपाओंकी कोशिश, ५. व्यर्थ, ६. इच्छाओंके ग़मकी कहानी, ७. असीम, ८. श्वास, साँस, ९. गायक, १०. पीड़ित, दुःखी ।

'हबीब'—सुश्री सफीयः हबीब

सितम इक जहाँके सहे जा रहे हैं
हमारा ही दिल है जिये जा रहे हैं

किया ग़र्क़[1] लाकर हमें बहरे-ग़ममें[2]
दुआ नाख़ुदाको[3] दिये जा रहे हैं

अजब कश-म-कशमें है यह ज़िन्दगानी
मरे जा रहे हैं, जिये जा रहे हैं

नहीं है जहाँमें कोई जब कि अपना
तो किसके लिए हम जिये जा रहे हैं

नहीं सख़्त जाँ कोई हम-सा 'हबीब'[4] अब
कि मर-मरके हर दम जिये जा रहे हैं

१. डुबाया, २. दुःख-समुद्रमें, ३. मल्लाहको, ४. प्रियतमा, प्यारा ।

'हया'—सुश्री कनीज़ फ़ातमा हया लखनवी

ऐसेमें

सहरके[1] झुटपुटेमें जब परिन्दे चहचहाते हैं
मनाज़िर[2] सुबहके जिसदम रसीले राग गाते हैं
बहारोंके जिलौमें[3] दिलरुबा नग़मे[4] लुटाते हैं
हसीं ग़ुंचे[5] चमनमें सुबह दम जब मुसकराते हैं
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख़्ता क्यों याद आते हो ?
शफ़क़[6] जब झाँकती है दामनोंसे कोहसारोंके[7]
फ़ज़ामें[8] थरथराते हैं तराने आबशारोंके[9]
हवामें तैरने लगते हैं नक़्शे जूए - बारोंके[10]
बयाबाँ[11] जब बदल लेते हैं चोले सब्ज़ाज़ारोंके[12]
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख़्ता क्यों याद आते हो ?
परी क़ौसे-क़ुज़ाकी[13] आस्माँपर जब सँवरती है
अदाए-दिलबरीसे रंगके साँचोंमें ढलती है
सबाके मुश्कबू[14] झोंकोंसे निकहत[15] टूट पड़ती है
बहार आकर चमनकी जब गुलोंसे माँग भरती है
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख़्ता क्यों याद आते हो ?

---

१. सुबहके, २. दृश्य, ३. नेतृत्वमें, बागडोरमें, ४. चित्ताकर्षक संगीत, ५. सुन्दर फूल, ६. उषा, ७. पर्वतोंसे, ८. वातावरणमें, दृश्यावलिमें, ९. झरनोंके, १०. पानीकी बूँदोंके, ११. रेगिस्तान, १२. जंगलोंके, वनोंके, १३. इन्द्र-धनुषकी, १४. सुगन्धित, १५. सुवास ।

कनारे-आबका[1] नज़्ज़ारा जब मदहोश होता है
दरख़्शाँ[2] रेतका मैदान जब ज़रपोश[3] होता है
कँवल आबे-रवाँकी ज़ीनते-आग़ोश[4] होता है
हसीं लहरोंके दिलमें जज़्बए-पुरजोश[5] होता है
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख़्ता क्यों याद आते हो ?
ख़ुनक रातोंकी भीनी-भीनी जब महकार होती है
सितारोंकी नज़र जब वाक़िफ़े - इसरार[6] होती है
किसी शाइरकी चश्मे-रूह[7] जब बेदार[8] होती है
मेरे पिन्दारके[9] तारोंमें जब झंकार होती है
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख़्ता क्यों याद आते हो ?

शमीम ताज़ा

यह मस्त फ़ज़ाएँ किसने अनोखी ख़ुशबूसे महकाई हैं ?
यह कैसी बहिश्तें उल्फ़तकी हर नख़्ले-शजर[10] पर छाई हैं ?
क्यों आज बहारोंकी परियाँ पैग़ामे-मसर्रत[11] लाई हैं
फिर आज तुम्हें शायद छू कर यह मस्त हवाएँ आई हैं

---

१. नदी किनारेका, २. चमकीला, ३. चाँदी-जैसा चमकता है, ४. लहरोंकी गोदकी शोभा, ५. भावनाओंका प्रबल वेग, ६. भेदोंसे परिचित, ७. हृदयकी आँखें, ८. जागृत, ९. गर्वके, १०. पेड़ोंपर, ११. आनन्द-समाचार ।

दुनिया पै है तारी[1] रंग नया, आलमने[2] भी बदले हैं चोले
यह किसने अदाए-ख़ाससे फिर रुख़सारे-महो-अंजुम[3] खोले
और एक हसीन अँगड़ाईकी हर जुम्बिशसे मोती रोले

फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

कुछ दर्द-सा है दिल वालोंमें, कुछ सोज़[4] भी है अफ़सानोंमें
एहसासे-ग़मे-महरूमी[5] लो बेदार[6] हुआ दीवानोंमें
इक लग़ज़िशे-पैहम[7] होने लगी फ़ितरतके हसीं ईवानोंमें[8]

फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

हर ज़र्रए-आलम रक़्साँ[9] है, मुश्शातिए फ़ितरत[10] जोशमें है
इक होशकी दुनिया मुज़तर-सी[11] हस्तीके दिले-बदहोशमें है
थी जिसकी तमन्ना मुद्दतसे जैसे कि वही आग़ोशमें[12] है

फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

है चाक गरेबाँ[13] ग़ुंच-ओ-गुल[14] ख़न्दाँ है गुलिस्ताँ[15] एक तरफ़
आकाश तले हैं शैख़ो-बरहमन ख़ुल्दे-बदामा[16] एक तरफ़
और आलमे-सरशारीमें 'हया' है आज ग़ज़लख़्वाँ एक तरफ़

फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

---

१. छाया हुआ, २. दुनियाने, ३. चन्द्र और नक्षत्रके मुख, ४. उत्ताप, ५. दुःखसे वंचित होनेका आभास, ६, जागृत, ७. लगातार भूल, कंपन, ८. प्रकृतिके सुन्दर महलोंमें, ९. विश्वका प्रत्येक अणु नृत्यमें लीन, १०. प्रकृतिका कङ्घा, ११. बेचैन-सी, १२. गोदमें, १३. गला फाड़े हुए, १४. कली और फूल, १५. उद्यान, १६. जन्नत।

हम-तुम

है अब भी इत्तिसाले-दिल[1] अगर्चे दूर हैं हम-तुम
यह है इक राज़[2] इस दूरी पै भी मसरूर[3] हैं हम-तुम
यह माना तल्ख़िए-इंकारसे[4] रंजूर[5] हैं हम-तुम
मगर शिकवा[6] नहीं गोया लबे-मजबूर[7] हैं हम-तुम
बज़ाहिर नौ जवानीकी शबे-महजूर[8] हैं हम-तुम
हक़ीक़तमें इन्हीं राज़ोंका[9] जरीं नूर[10] हैं हम-तुम

चलें अब वादिए-ग़ुरबतमें[11] इक दुनिया बसायें हम
ग़रूरो-कब्रो-नख़वतके[12] जहाँ टुकड़े उड़ायें हम
जहाँ फ़िक्रो-हवादसके फ़साने[13] भूल जायें हम
जहाँ तख़्लीक़के[14] रंगीन गुल बूटे खिलायें हम
हों उन अंजुम फ़िशाँ[15] नौरस शग़ूफ़ोंके मकीं[16] हम-तुम
नज़र आयें जहाँसे आस्मानोंके नगीं हम-तुम

ज़माने भरमें इख़लासो-वफ़ाकी[17] ख़ू[18] नहीं मिलती
कि इंसानोंमें कुछ इंसानियतकी बू नहीं मिलती

---

१. एकत्र, २. भेद, ३. प्रसन्न, ४. अस्वीकृतिकी कटुतासे, ५. रंजीदा, ६. शिकायत, ७. ओठ सीये हुए, ८. विरहकी रात, ९. भेदोंका, १०. चमकीला प्रकाश, ११. परदेशमें, १२. ईर्ष्या-द्वेष, घृणाके, १३. मुसीबतोंकी चिन्ताओंके क़िस्से, १४. निर्माणके, १५. नक्षत्र-मण्डलके, १६. उद्यान-निवासी, १७. सद्व्यवहार एवं स्नेहकी, १८. स्वभाव, आदत।

जहाने-इश्क़में तबए-हक़ीक़त[1] जो नहीं मिलती
निगाहोंको कोई सूरत सदाक़त-रौ[2] नहीं मिलती

मुहब्बतका लिबासे-नौ[3] करें अब ज़ेबे-जाँ[4] हम-तुम
बनें आओ उख़ुव्वतका[5] पयामे-जाविदाँ[6] हम-तुम

यह किस अन्दाज़से फिर तल्ख़ो-बेदारीकी[7] शाम आई
बुझी जाती है मेरी शमअ सोज़े-दर्दे-तनहाई[8]
न छुप जाये कहीं हेजानमें[9] अश्कोंकी[10] सच्चाई
सवादे-शबमें[11] खो जायें तख़ैय्युलकी[12] न बीनाई[13]

तुम आओ तो क़मरसे[14] छीन लें ताबिन्दगी[15] हम-तुम
फ़लकसे[16] लूट लें रूहानियतकी[17] ज़िन्दगी हम-तुम

बहारोंकी हसीं परियाँ हमें कबसे बुलाती हैं
हमारे ख़ैर-मक़दमके[18] लिए आँखें बिछाती हैं
तसव्वुरसे[19] हमारे उनकी नज़रें मुसकराती हैं
हमें तारोंके रोज़नसे[20] हर-इक दिन झाँक जाती हैं

चलें उस नूरकी[21] बस्तीमें बस जायें 'हया' हम-तुम
रहें तारीक[22] दुनियाकी नज़रसे मावरा[23] हम-तुम

---

१. सच्ची तबीयतें, २. सत्यनिष्ठ, ३. नवीन परिधान, ४. सुशोभित, ५. संगठनका, एकताका, ६. अमर सन्देश ७. जागरणकी कटुताकी सन्ध्या, ८. एकान्तकी व्यथाका उत्ताप, ९. बेचैनीमें, आवेशमें, १०. आँसुओंकी, ११. दुःखोंकी कालिमामें, १२. विचारोंकी, १३. दृष्टि, १४. चाँदसे, १५. चमक, प्रकाश, १६. आकाशसे, १७. आत्माओंकी, १८. स्वागतके, १९. ध्यानसे, २०. छिद्रोंसे, २१. प्रकाशकी, २२. अँधेरी, २३. परे।

इशारात

फूलोंकी तरफ़, उनकी क़तारोंकी तरफ़ देख
महके हुए सरशार नज़ारोंकी तरफ़ देख

है कश-म-कश इश्क़की हर गाम पै दावत
बहकी हुई बदमस्त बहारोंकी तरफ़ देख

कुन्दनकी तरह निखरी हुई चाँदनी रातें
बिखरे हुए मदहोश सितारोंकी तरफ़ देख

यह सहने-चमन कर-मके-शबताबकी[1] परवाज़ें[2]
उड़ते हुए बेचैन शरारोंकी[3] तरफ़ देख

गुज़री हुई उल्फ़तकी जो कुछ याद दिलायें
बहते हुए दरियाके किनारोंकी तरफ़ देख

बसती है यहाँ एक ख़यालातकी दुनिया
चश्मोंके लहकते हुए धारोंकी तरफ़ देख

यह गरदिशे-गरदूँका[4] धड़कता हुआ सीना
कुछ मादरे-गेतीके फ़िशारोंकी[5] तरफ़ देख

कुछ ख़ाकके रौंदे हुए ज़र्रों पै नज़र कर
आलमके भी रंगीन मिनारोंकी तरफ़ देख

१. जुगनूँकी, २. उड़ान, ३. चिन्गारियोंकी, ४. चक्कर खाते हुए आकाशका, ५. मातृभूमिके गड्ढोंकी तरफ़ (ज़ख़्मोंसे अभिप्राय है)।

दुनिया यह अगर्चे तरब-अंगेज़[1] है लेकिन
भूलेसे कभी दर्दके मारोंकी तरफ़ देख

कहता था 'हया' सुबहका टूटा हुआ तारा
"कुछ तू भी मशैयतके[2] इशारोंकी तरफ़ देख"

इक़रारे-मुहब्बत

–६ बन्दमेंसे २–

जीमें हसरत है सुनायें उन्हें अफ़सानए-ग़म
कभी मौक़ा मिले सब कुछ कहें उनकी ही क़सम
लेकिन आते नहीं सुनते नहीं रूदादे-अलम[3]
कितने मजबूर हैं बतलायें यह है कैसा सितम
इस पै तुर्रा है कि उल्फ़तका भी इक़रार करो
हमको पूजो, हमें चाहो, हमें तुम प्यार करो

ऐसे बेरहम हैं, इंसाफ़का भी पास नहीं
महरकी[4] ज़र्रा बराबर भी तो बू-बास नहीं
ऐसी बेमहरीपै[5] भी दिलके मेरे पास नहीं
अब भी आ जायें कि जीनेकी कोई आस नहीं
और ख़ुद आके कहें इश्क़का इज़हार करो
हमको पूजो, हमें चाहो, हमें तुम प्यार करो

---

१. आनन्दवर्द्धक, २. दुनियाके, ३. व्यथा-कहानी, ४. दया, कृपाकी, ५. स्थितिमें।

शिकायत

–१२ मेंसे ६–

तुम्हींने की थी मुहब्बतकी इब्तदा[1] कि नहीं ?
तुम्हींने दर्से - ग़मे - दिल[2] हमें दिया कि नहीं ?

हमारा तिफ़्ले - दिल[3] आगाह[4] था न हसरतसे[5]
लुभा - लुभाके निगाहोंसे ज़ुल[6] दिया कि नहीं ?

यह बेनियाज़ियाँ[7] अब किसलिए बताओ तो
फ़सानए - ग़मे - उल्फ़त मेरा सुना कि नहीं ?

तमाम लुत्फ़े - मुहब्बतकी यादगारोंको
बस इक ज़रा-सी 'नहीं'में मिटा दिया कि नहीं ?

निगाह मिलते ही रूहोंका एक हो जाना
वह वक़्त आह तुम्हें मद्दे[8] हो गया कि नहीं ?

कहा था अहदे - मुहब्बत कभी न भूलेंगे
मगर यह अहदे-मुहब्बत भुला दिया कि नहीं ?

---

१. शुरुआत, २. हृदय-वेदनाका पाठ, ३. किशोर हृदय, ४. परिचित, ५. प्रेम-व्यवहारसे, ६. चकमा, धोका, ७. उपेक्षाएँ, ८. स्मरण ।

इल्तिजा

–५ मेंसे ३–

अभी आओ कि नये सिरसे मुहब्बत कर लें
दिलके वीरानेको मामूरे-मसर्रत[१] कर लें
गर्दिशे-चर्ख़को[२] फिर ख़ूगरे-बहजत[३] कर लें
उम्रे-नाशादको[४] सरमायए-इशरत[५] कर लें
वक़्त बाक़ी है अभी आओ कि उल्फ़त कर लें
अभी आओ कि नये सिरसे मुहब्बत कर लें

आओ देखो कि सरापा ग़मे-पिन्हाँ[६] हूँ मैं
शमअ़की तरहसे इक शोलए-सोज़ाँ[७] हूँ मैं
दिल शिकिस्ता[८] हूँ, सितमकश हूँ, परेशाँ हूँ मैं
दर्द शाहिद[९] है कि मिन्नत-कशे-दरमाँ[१०] हूँ मैं
तुम जो आ जाओ तो सब दूर शिकायत कर लें
अभी आओ कि नये सिरसे मुहब्बत कर लें

मुझसे गर तुमको गिला है तो सुनाओ मुझको
गर ख़ता मुझसे हुई हो तो बताओ मुझको
हो ख़फ़ा मुझसे तो पास आके जताओ मुझको
ग़मे-दूरीसे मगर अब न जलाओ मुझको
नालए-दर्दको[११] आहंगे-मसर्रत[१२] कर लें
अभी आओ कि नये सिरसे मुहब्बत कर लें

---

१. आनन्दसे जगमग, २. आकाशका, ३. आनन्दका अभ्यस्त, ४. दुखिया आयुको, ५. आनन्दोल्लाससे परिपूर्ण, ६. छिपे हुए दुखोंका भण्डार, ७. सन्तप्त, ८. भग्न हृदय, ९. गवाह, १०. चिकित्साकी अधिकारिणी, ११. व्यथाकी श्वासोंको, १२. आनन्दपूर्ण ।

'हूर'—सुश्री गौहर इक़बाल 'हूर' मेरठी

आर्ज़ूए-मौहूम

मैं सोचती रहती हूँ
यह मेरी तमन्ना है
ऐ काश कभी ऐसा
इक दौरे-अमल आये
इक फूल मैं बन जाऊँ
फूलोंकी लताफ़तमें
शाख़ोंकी नज़ाकतमें
मैं नुज़हतें फैलाऊँ
फिर फूलोंके ख़िरमनपर
और सब्ज़ःके दामनपर
कुछ निगहतें बरसाऊँ
ऐसा जो हो तो शायद
मुमकिन है कभी शायद
राहत मैं यहाँ पाऊँ
हासिल हो सकूँ दिलको
और कैफ़े-बक़ा मुझको
लेकिन यह नहीं मुमकिन
देखो जो हक़ीक़तमें
राहत नहीं दुनियामें
फ़ानी है यहाँ हर शै

मैं सोचती रहती हूँ
यह मेरी तमन्ना है
ऐ काश कभी ऐसा
इक दौरे - अमल आये
इस बज़्मे - परेशाँसे
ज़ुल्मतगहे - हस्तीसे
इस गंजे - लताफ़तसे
उड़कर मैं पहुँच जाऊँ
महताब मैं बन जाऊँ
हर शामको रौशन हूँ
हर सुबहको छुप जाऊँ
फिर बज़्मे-फ़लकपर सब
तारें करें झिलमिल जब
हँसकर मैं निकल आऊँ
उस दश्ते - मुसीबतपर
गहवारए - ज़ुल्मतपर
वह नूर मैं बरसाऊँ
कि फिर मेरी ही किरनोंसे
हर जर्रः चमक उट्ठे
हर क़तरेको चमकाऊँ
ऐसा जो हो तो शायद
मुमकिन है कभी शायद
राहत मैं यहाँ पाऊँ

सिंहावलोकन

[बहू-बेटियोंकी शाइरी]

★

इश्क़

प्रेम रहित जीवन शुष्क

उभय पक्षका प्रेम

एकाङ्गी प्रेम

आशिक़-माशूक़

हिन्दी-उर्दू-दृष्टिकोण

महिलाओंकी शाइरी

इश्क़

इश्क़ किया नहीं जाता, हो जाता है। इश्क़की आग दावानलकी[1] तरह लग तो अनायास जाती है, लेकिन फिर उसकी भाँति बुझकर नहीं देती—

इश्क़पर ज़ोर नहीं, है यह वोह आतिश[2] 'ग़ालिब'!
कि लगाये न लगे और बुझाये न बुझे॥

आतिशे-इश्क़ (प्रेम-ज्वाला) रूईकी आगकी मानिन्द बेमालूम और धीमे-धीमे सुलगती रहती है। शुरू-शुरूमें तो इसकी सेंक शीत-ऋतुमें तापने-जैसी सुखद मालूम होती है—

शायद इसीका नाम मुहब्बत है 'शेफ़्ता:'!
इक आग-सी है सीने के अन्दर लगी हुई॥

फिर यही आग-सी मुहब्बत शनैः-शनैः आशिक़ (प्रेमी) को चाट जाती है। ब-क़ौले-मीर—

इश्क़ आदममें नहीं कुछ छोड़ता।
हौले-हौले कोई खा जाता है जी॥

इश्क़की चपेटमें एक बार आने पर फिर उससे छुटकारा सम्भव नहीं—

हमने अपनी-सी की बहुत लेकिन—
मर्ज़े-इश्क़का इलाज नहीं॥

---

१. वनमें वृक्षोंकी रगड़से आप-से-आप लगनेवाली आग,
२. अग्नि,

इस मर्ज़े-इश्क़ या प्रेम-ज्वालाको लगानेमें नयन-अग्नि-बाण कमालका कौशल रखते[1] हैं—

नावक-सर[2] से लाइकै, तिलकु तरुनि इत ताँकि।
पावक-झर सी झमकि कै, गई झरोखा झाँकि ॥५७०॥

---

१. उदाहरण-स्वरूप हिन्दीके प्रसिद्ध कवि विहारीके दोहे दिये जा रहे हैं। उनके सब दोहे 'विहारी-रत्नाकर' ग्रन्थसे उल्लिखित किये गये हैं और उनपर ग्रन्थकी अंक-संख्या डाल दी गई है। जो दोहे कबीर, मतिराम, रहीम आदिके दिये गये हैं, उनपर अंक-संख्या न देकर यथास्थान कविका नाम दिया गया है। जिनपर अंक-संख्या है, वे सब दोहे बिहारी रत्नाकरके हैं।

२. 'नावक-सर' का प्रयोग एक ऐसे बाणके अर्थमें किया जाता है, जो नलिका-द्वारा चलाया जाता है। यह नलिका लोहेकी होती है। इसमें बारूद तथा छोटे-छोटे बाण भर दिये जाते हैं। इस नलिकामें एक स्थानपर छिद्र होता है। उसमें अग्निका संचार करनेपर बारूदके प्रभावसे उसमें-के बाण निकलकर बन्दूक़की गोलीके समान बहुत दूरतक चोट करते हैं। इन बाणोंको चलाते समय लक्ष्यका अनुसंधान, अर्थात् उसकी ऊँचाई-नीचाई तथा दिशाका निश्चय करना पड़ता है। इसलिए 'ताँकि' (तर्क करके-निश्चय करके) का प्रयोग किया है। जब इस नलिकामें आग दी जाती है, तो बारूदके उड़नेसे प्रकाश-सा होता है। इसीलिए कविने 'पावक-झर सी झमकि कै' कहा है। यहाँ झरोखेको कविने 'नलिका', नायिकाके रूपके प्रकाशको अग्नि-संचारकी चमक, एवं नायकपर दृष्टिकी चोटको नावक-सर लगना माना है। 'तिलकु' (क्षण-मात्र) से कवि यह व्यंजित करता है कि नायिका नावक चलानेमें ऐसी दक्ष है कि उसको लक्ष्यका अनुसन्धान करनेमें विलम्ब नहीं लगा और देखते ही अचूक बाण मार दिया।

इन नैन-बाणोंकी मार सहन करना हँसी-खेल नहीं, बड़े-बड़े चतुर खिलाड़ी चौकड़ी भूल जाते हैं। अच्छे-अच्छे सूरमा सुध-बुध बिसार बैठते हैं—

कहा लड़ैते दृग करे, परे लाल बेहाल।
कहुँ मुरली, कहुँ पीत पटु, कहूँ मुकुट, बनमाल[1] ॥१५४॥

इस अचूक एवं कौशलपूर्ण तीरन्दाजीका करिश्मा देखकर एक हमजोली आश्चर्यचकित होकर पूछती है—

तिय कित कमनैती पढ़ी, बिनु जिहि भौंह-कमान।
चलचित-बेझैं चुकति नहिं बंक-बिलोकनि-बान[2] ॥३५६॥

अर्थ—नायक कहता है—"तरुणी झरोखेमें से झाँककर, क्षणमात्र मेरी ओर अनुसन्धान करके, अग्निकी ज्वाल-सी झमककर बाण मारकर हट गई।"

१. सखी राधासे कहती है—"तेरे इन लाड़ले नैनोंने कृष्णको इस बुरी तरह घायल किया है कि बेसुध पड़े हुए हैं। उनकी मुरली कहीं पड़ी हुई है, पीत-पट कहीं फिका हुआ है, मुकुट कहीं लुढ़का पड़ा है और माला कहीं गिरी हुई है।"

२. "तूने यह विलक्षण धनुर्विद्या कहाँ सीखी ? बिन डोरीके भौंह रूपी कमानपर तिर्छी चितवनके बाणसे चलायमान चित्तको बेधनेमें तू चूकती नहीं।" बिन डोरीकी कमानसे तीर नहीं फेंका जा सकता, तिर्छा बाण कभी लक्ष्यको भेद नहीं सकता। चंचल (हिलते-डुलते) पर भी कभी निशाना नहीं बैठता। लेकिन सुन्दरीका कौशल सराहिए कि वह ये सब असम्भव बातें सम्भव करके दिखला रही है।

खेलन सिखए, अलि, भलैं चतुर अहेरी मार।
कानन-चारी नैन-मृग नागर नरनु सिकार[1] ॥४५॥

ये नैन-बाण अन्य सब बाणोंसे विषम होते हैं। ये लगते तो आँखोंमें हैं, किन्तु घाव हृदयमें करके समस्त अंगोंको व्याकुल कर देते हैं—

दृगनु लगत, बेधत हियहिं, बिकल करत अँगआन।
ए तेरे सब तैं बिषम, ईछन-तीछन बान ॥३४१॥

ऐसे प्रेमनगरमें कैसे बसा जाय और क्योंकर निर्वाह किया जाय? जहाँ न्याय-नीति न हो। यहाँ तो ऐसा अन्धेर है कि अपराध तो लोचन करते हैं और निरपराध हृदय व्यर्थमें बँध जाते हैं—

क्यौं बसियै, क्यौं निबहियै, नीति नेह-पुर नाँहिं।
लगालगी लोइन करैं, नाहक मन बँधि जाँहि ॥४०७॥

लेकिन यह सब ऊपरी मनकी बातें हैं। वास्तवमें होता यह है कि एक बार नैनबाणसे घायल होनेपर कुछ उसकी चुभनमें ऐसा अकथनीय आनन्द मिलता है कि बार-बार तीर खानेको दिल करता है। वक़ौले-'ग़ालिब'—

कोई मेरे दिलसे पूछे, तेरे तीरे-नीम-कशको।
यह ख़लिश कहाँसे होती, जो जिगरके पार होता[2] ॥

किसीसे एक बार आँख लगनेपर फिर आँख नहीं लगती। नींदें उचाट हो जाती हैं—

---

१. हे सुन्दरी! कामदेव रूपी चतुर अहेरीने तेरे कानन-चारी मृग-नैनोंको नागरिक नरोंका शिकार करना खूब सिखलाया है। कलतक तो नर ही मृगोंका आखेट करते आये थे, किन्तु आज यह मैं अभूतपूर्व दृश्य देख रही हूँ कि मृग मनुष्योंको घायल कर रहे हैं।

२. माशूक़ने तीरे-नजर कुछ इस अन्दाजसे मारा कि वह जिगरके पार न होकर दिलमें चुभकर रह गया। अगर वह पार हो जाता तो चुभनका लुत्फ़ उम्र भर क्योंकर उठाया जाता?

जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि ।
आँखिनु आँख लगी रहैं, आँखैं लागति नाँहि[1] ॥६२॥
लाल, तुम्हारे रूपकी, कहौ, रीति यह कौन ।
जासौं लागत पलकु दृग लागत पलक पलौ न[2] ॥३९८॥

नैना लड़नेपर थकते नहीं, पुनः पुनः लड़ते रहते हैं। कोई लड़नेसे वरजना भी चाहे तो यह अपनी लड़नेकी आदत नहीं छोड़ पाते—

नैना नैंक न मानहीं, कितौ कह्यौ समुझाइ ।
तनु मनु हारैं हूँ हँसैं, तिन सौं कहा बसाइ[3] ॥१६०॥
लाज-लगाम न मानहीं नैना मो बस नाहिं ।
ए मुँहजोर तुरंग ज्यौं ऐंचत हूँ चलि जाहिं[4] ॥६१०॥

---

१. जब भी प्रियतमकी सुध आजाती है, प्रियाकी सब सुध-बुध चली जाती है। उसकी प्रतीक्षामें आँखें द्वारकी ओर तो लगी रहती हैं, परन्तु क्षण भरको आँखोंसे आंख नहीं लगती, नींद नहीं आती।

२. प्रियतम ! कहो तो सही तुम्हारे रूपकी यह क्या रीति है, कि जिसके दृग पलक भरको उसपर लगते हैं; फिर उसके दृग पलभर भी नहीं लगते।

३. मैं क्या करूँ ? अपने नयनोंको कितना ही समझाया, किन्तु मानकर ही नहीं देते। भला जो ज्वारी तन-मन हारनेपर भी हँसते रहें, उनपर मेरा क्या वश चल सकता है ? ज्वारी कब किसीकी सीख मानते हैं, वे तो हारनेपर और भी बढ़कर खेलते हैं।

४. नयन मेरे वशमें नहीं हैं। ये मुँहज़ोर (लगामको खींचनेपर भी न रुकने वाले) घोड़ेकी तरह लज्जारूपी लगामको नहीं मानते और खींचते हुए भी प्रेमीकी ओर चले ही जाते हैं।

बहके सब जिय की कहत, ठौरु कुठौरु लखैं न।
छिन औरै, छिन और से, ए छवि-छाके नैन[1] ॥९॥

नैनोंकी यह बहक, आँख-मिचौनी उजागर हुए बिना नहीं रहती। कबीरने सच ही कहा है—

प्रेम छिपायो ना छिपै, जा घट परघट होय।
जो पै मुख बोलै नहीं, नैन देत हैं रोय॥

प्रेम छिपायेसे छिपता नहीं, रोकनेसे रुकता नहीं। प्रकट होनेपर कुछ लोग हँसते हैं, कुछ बरजते हैं। मगर वकीले-'असर' लखनवी—

इश्क़से लोग मनअ़ करते हैं।
जैसे कुछ इख़्तियार है अपना॥

---

१. ये नैना प्रियतमकी छवि रूपी मदिरा पीकर ऐसे बावले और मतवाले हो रहे हैं कि मनकी गोपनीय बातें यत्र-तत्र ठौर-कुठौर, मौक़े-बे-मौक़े कह देते हैं।

प्रेम-रहित जीवन शुष्क

इश्क़ करना या प्रेमी होना कोई अपराध नहीं, यह तो स्त्री-पुरुपका स्वाभाविक कर्म है। उनकी जीवन संबंधी आवश्यकताओंका मुख्य अंग है। प्रेमके विना जीवन नीरस और शुष्क है। कबीरने सच ही कहा है—

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहारकी साँस लेत बिन प्रान॥

प्रेमकी आगमें तपकर ही मनुष्य खरा होता है। बक़ौले–'असर' लखनवी—

इन्सानको बे-इश्क़ सलीक़ा नहीं आता।
जीना तो बड़ी चीज़ है मरना नहीं आता॥

और जब मनुष्य प्रेममें आठों पहर भीगा रहता है, तब यही धराधाम उसके लिए स्वर्ग बन जाता है। बक़ौले–राधेनाथ कौल—

इश्क़ जन्नत है आदमीके लिए।
इश्क़ नेमत है आदमीके लिए॥

प्रेम जितना जीवनके लिए आवश्यक है, उतना ही कठिन और दुरूह है—

'रहिमन' मैन तुरंग चढ़ि चलिबो पावक माँहि।
प्रेम-पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाँहि॥
अन्तर दाँव लगी रहे, धुआँ न प्रगटै सोय।
कै जिय जाने आपुनो, कै जा सिर बीती होय॥
जे सुलगे ते बुझि गये, बुझे ते सुलगे नाहिं।
'रहिमन' दाहे प्रेमके, बुझि-बुझिके सुलगाहिं॥
यह न 'रहीम' सराहिए, लेन-देनकी प्रीत।
प्रानन बाजी राखिए, हारि होय कै जीत॥

उभय पक्षका प्रेम

प्रेम करनेका वास्तविक आनन्द तब है, जब कि यह आग दोनों ओर बराबर लगी हुई हो। कौन प्रेमी और कौन प्रेयसी है, यह भेद-भाव मिटाकर दोनों एक दूसरेके प्रेमी हो जाते हैं। मतिराम के अनुसार—

कौन बसत है कौनमें, यों कछु कही परै न।
पिय नैननि तिय नैन हैं, तिय नैननि पिय नैन॥

इसी भावको विहारीने यूँ व्यक्त किया है—

कीनैं हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु।
भो मन मोहन-रूपु मिलि पानी मैं कौ लौनु[1] ॥१८॥

इकतर्फ़ा प्रेम, प्रेम नहीं उन्माद है। एकाङ्गी प्रेम एक पहियेके रथके समान है। जो कभी लक्षतक नहीं पहुँचता। यदि पुरुषकी अपेक्षा नारी-हृदयमें प्रेमका अंकुर प्रस्फुटित हो तो, वह पुरुषको भी आकर्षित कर लेगी; एवं उससे मिलनेके अनेक उपाय निकाल लेगी; और यदि वह नहीं चाहेगी तो पुरुषके सब उपायोंको निरर्थक कर देगी। अनेक उपायों एवं राज्य-शक्तिका उपयोग करनेपर भी रावण सीताका, अलाउद्दीन पद्मिनीका और औरंगज़ेब रूपनगरकी राजकुमारीका प्रेम तो दरकिनार, उनकी परछाईंका भी स्पर्श-सुख प्राप्त न कर सके। समस्त वैभव और राज्य-बल मुँह ताकते रह गये। इसके विपरीत रुक्मिणीका कृष्णको, संयोगिताका पृथ्वीराजको, रूपनगरकी राजकुमारीका राणा राजसिंहको, प्रेम-निमन्त्रण भेजनेपर न उन्हें इतने दूरवर्ती कण्टकाकीर्ण मार्ग रोक सके,

---

१. मनमोहनका लावण्यमय रूप मेरे मनरूपी सरोवरमें मिलकर लवण हो गया है। कोटिक प्रयत्न करनेपर भी उसको उसमें से कौन निकाल सकता है?

न दुर्गम पर्वत और विशाल नदियाँ निरुपाय कर सके और न विपक्षीकी अपार शक्ति ही उन्हें डरा सकी। नारीका प्रेम-निमन्त्रण पुरुषत्वके लिए चुनौती है। यदि वह प्रियतमा बनने योग्य है, तो पुरुष जानपर खेलकर भी उसे प्राप्त करेगा। प्रियतमा चाहे तो मिलनके अनेक उपाय निकाल लेती है--

चितई ललचौहैं चखनु डटि घूँघट-पट माँह।
छल सौं चली छुवाइकै छिनकु छबीली छाँह[1] ॥१२॥
झटकि चढ़ति उतरति अटा, नैंक न थाकति देह।
भई रहति नट कौ बटा अटकी नागर-नेह[2] ॥१९४॥

यदि प्रेमी-प्रेयसी दोनों प्रेम-विह्वल हैं तो मिलनकी ताक-झाँकमें लगे रहते हैं, और कुछ-न-कुछ साधन जुटा ही लेते हैं। प्रेमी और प्रेयसीके

---

१. प्रियतम बहुत दिनोंमें विदेशसे आया है। उसकी प्रियतमा गुरु-जनोंकी उपस्थितिके कारण प्रेम-विह्वल होनेपर भी लज्जावश न मुँह खोलकर उसे देख सकती है और न कोई बात कर सकती है। तो भी वह अपना अनुराग प्रकट किये बिना न रह सकी। पहले तो घूँघटमेंसे प्रियतमको जी भरके निहारती रही। फिर उसके सामनेसे इस कौशलसे निकल गई कि कम-से-कम उसकी छायाका स्पर्श-सुख तो प्रियतमा अनुभव कर सके।

२. अपने प्रेमीको कहीं खड़ा हुआ देखकर प्रेयसी उसे बार-बार देखनेके लिए झपटकर कभी अटारीपर चढ़ती है, कभी अटारीपरसे उतरती है। उसकी देह थकनेका नाम नहीं लेती। वह अपने प्रेमीके स्नेहरूपी डोरीमें बँधी चकईके समान बनी हुई है। जैसे नट नचाता है, वैसे नाच रही है।

घरोंके बीचमें केवल दीवार मात्रका व्यवधान है। तो भी दोनोंका मिलन नहीं हो पाता। किसी दिन छतपर क्षणिक सुयोग मिला तो—

अँगुरिन उचि, भरु भीति दै,उलमि चितै चख लोल।
रुचि सौं दुहूँ दुहूँनुके चूमे चारु कपोल[1] ॥५०५॥
सुख सौं बीती सब निसा, मनु सोए मिलि साथ।
मूका मेलि गहे, सु छिनु हाथ न छोड़े हाथ[2] ॥५७१॥

नारी-सुलभ शील-संकोच एवं कौटुम्बिक मर्यादाओंके होते हुए भी शयन-कक्षके अतिरिक्त भी नई-नवेली पत्नी अपने प्रियतमको निहारने, उससे लुका-छिपी दो एक बातें कहने आदिका अवसर खोज लेती हैं तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। क्योंकि वैवाहिक-सम्बन्धके कारण वे समाजकी दृष्टिमें प्रणयके अधिकारी हैं; किन्तु प्रेम-ज्वालाकी आगको बुझानेके लिए कुमारी या परकीया भी अपनी बुद्धि, सामर्थ्य, साधनके अनुसार कोई-न-कोई तिकड़म भिड़ा ही लेती हैं।

प्रारम्भमें लज्जावश सकुचाती हैं, कुटुम्बके कोपसे भय खाती हैं और सामाजिक व्यंग्योंसे घबराती हैं, किन्तु जैसे-जैसे प्रेम-रंग चढ़ता जाता है, तैसे-तैसे शर्मो-हया एवं लोक-लाजके भय फीके पड़ते जाते हैं।

---

१. पाँवोंकी उँगलियों पर उचककर, मुड़ेरपर अपना-अपना भार देकर, आगेकी ओर झुककर तथा चंचल नेत्रोंसे चारों ओर देखकर कि कहीं कोई देखता न हो, दोनोंने परस्पर प्यार लिया-दिया।

२. प्रेमी-प्रेयसी पड़ौसी हैं। उनके घरोंके बीच केवल एक दीवार है। दीवारमें एक बड़ा छिद्र भी है। एक रोज़ अवसर पाकर दोनोंने उस छिद्रमें हाथ डालकर परस्पर हाथ पकड़ लिये। क्षणमात्रको भी न छोड़कर रातभर हाथ पकड़े हुए आनन्द-विभोर हुए खड़े रहे, मानो रात भर परस्पर सो रहे हों।

बाँधी दृग डोरानि सों घेरी बरुनि समाज।
गई तऊ नैनानि तें निकसि नटी-सी लाज ॥ मतिराम

और शनैः-शनैः वे प्रेम-नगरमें आँख-मिचौनी खेलने लगती हैं। कभी प्रेमीको पत्र लिखती हैं—

लाज छुटी, गेहौ छुट्यो, सबसे छुट्यो सनेह।
सखि कहियौ वा निटुर सों रही छूटिवें देह ॥ मतिराम

कागद पर लिखत न बनत कहत सँदेसु लजात।
कहि है सबु तेरौ हियौ मेरे हिय की बात ॥६०॥

तोहीं निरमोही, लग्यौ मो ही इहैं सुभाउ।
अनआएं आवै नहीं, आएं आवतु, आउ[1] ॥३६॥

प्रेम-विह्वल परकीया नारी परदेश गये हुए प्यारेको कभी पत्र लिखकर बुलाती है। कभी सम्मुख पाती है तो एकान्तमें वार्त्तालाप करती है—

सुन्यो माइके तें जबहिं आयो बाभन कंत।
कुशल पूछिबेके मिसिन लीनो बोल इकंत ॥ मतिराम

यहाँ तक कि वह स्वयं कोई-न-कोई बहाना बनाकर प्रेमीको निर्जन स्थानमें ले जाती है। कवि मतिरामने राधाको माध्यम बनाकर देखिए कैसा बहाना खोज निकाला है—

आई है निपट साँझ, गैयाँ गई घर माँझ,
हाँसो दौरि आई मेरो कह्यौ कान्ह कीजिए,
हौं तो हौं अकेली और दूसरो न देखियत,
बनकी अँधेरीमें अधिक भय भीजिए।

---

१. हे निर्मोही! मेरा चित्त तुझपर ऐसा अनुरक्त है कि तेरी अनुपस्थितिमें यह भी मेरे पास नहीं रहता। मालूम होता है वह भी तेरे पास ही रहता है। क्योंकि तेरे आने पर ही मेरा चित्त ठिकाने आता है। अतः जल्दी आ।

कवि 'मतिराम' मनमोहन सौं पुनि-पुनि,
राधिका कहत बात साँचो यै पतीजिए,
कबकी हौं हेरति न हेरे हरि! पावति हौं,
बछरा हिरानौ, सो हिराय नैक दीजिए ॥

प्यारेको एकान्तमें बुलाती ही नहीं, आवश्यकता होनेपर स्वयं भी उसके निर्दिष्ट स्थानपर जाती है।

दियै देह दीपति, गयौ, दीप बयारि बुझाइ।
अंचल ओट किये तऊ चली नवेली जाइ[1] ॥
चली अली नवलाहि लै पिय पै साजि सिंगार।
ज्यों मतंग अंडदारको[2] लिये जात गँड़दार[3] ॥
जोबन-मद गज मन्द गति चली बाल पिय गेह।
पगनि लाज-आँदू परी, चढ्यौ महावत नेह[4] ॥

---

१. प्रेयसी अपने प्रेमीसे मिलनेके लिए आँचलमें दीपक छिपाये चली है, ताकि अँधेरे मार्गमें जानेमें सुविधा हो, किन्तु वह हवाके झोंकेसे बुझ गया है। फिर भी नवेलीके शरीरकी कान्तिसे प्रकाश बना हुआ है। वह उस मर्मको न जानकर बुझे हुए दीपकको आँचलमें छिपाये जा रही है, मानों वह अब भी जल रहा है।

२. अड़ने वाला हाथी, ३. महावत, हाथीको अंकुश मार-मार कर ले जानेवाला।

४. तरुणीने जब अभिसार किया तो उसकी गति मन्द थी। लज्जाके मारे उसके पांव आगे न पड़ते थे। लेकिन प्रेम उसे किसी प्रकार चलानेपर विवश कर रहा था। उसकी दशा उस मन्दगति हाथीके समान थी, जिसके पैरोंमें जञ्जीर पड़ी रहनेसे आगे बढ़ना कठिन हो, किन्तु महावत ठेलकर जिसे आगे बढ़ा रहा हो।

एकाङ्गी प्रेम

यदि स्त्रीका मन आसक्त न हो तो, पुरुष लाख प्रयत्न करनेपर भी उसके मनको नहीं मोह सकता। पर-पुरुष तो किस खेतकी मूली है, इच्छा न होनेपर वह अपने जीवन-सर्वस्व प्राण-पतिको भी उँगली नहीं छूने देती। किसी-न-किसी ढंगसे बच निकलती है—

केलिकैं राति अघाने नहीं, दिन ही में लला पुनि घात लगाई,
प्यास लगी कोउ पानी दै जाइयौ, भीतर बैठिकैं बात सुनाई।
जेठी पठाई गई दुलही, हँसि हेरि हरे 'मतिराम' बुलाई,
कान्हके बोल मैं कान न दीनो सो गेहकी देहरी पै धरि आई॥

ऐसे उदाहरण आटेमें नमकके समान हैं, जब कि प्रेम-ज्वालामें केवल स्त्री झुलसती रही हो और उसमें गिरनेको परवानावार पुरुष न आया हो। क्योंकि वह अपने पुरुषत्व-वश स्त्री-प्रेमकी अवहेलना नहीं कर सकता। जब तक कि इस तरहका कोई विशेष व्यवधान न हो—

१—स्त्री प्रेमके योग्य न हो, २ पुरुष पहलेसे किसी अन्यपर आसक्त हो या विवाहित हो, ३ प्रेम या विवाहसे विरक्त हो, ४ लम्पट या दुराचारी हो।

स्त्रीके बजाय यदि प्रेम-फाँस पुरुषके चुभती है, तो उसे सही सलामत निकालनेमें बहुत ही कम भाग्यवान् सफलता पाते हैं। अधिकांश उसकी खटकसे जीवन-पर्यन्त व्यथित रहते हैं। इस इकतर्फ़ा मर्दाना इश्क़से आशिक़ तो ज़लीलो-ख्वार होते ही हैं, माशूक़ भी कम परेशान नहीं होते। वे ऐसे दिल फेंक आशिक़ोंसे बेहद घबराते हैं—

ग़ालिब— पीनसमें गुज़रते हैं जो कूचेसे वे मेरे।
कन्धा भी कहारोंको बदलने नहीं देते॥

मोमिन— कूदकर घरमें जो पहुँचा, मैं तेरे, पर क्या करूँ ?
दम निकल जाता था, खटकेसे बराबर रातको ॥

ज़ौक़— मर गये पर भी तग़ाफ़ुल ही रहा आनेमें ।
बेवफ़ा पूछे है—"क्या देर है ले जानेमें" ?

सोज़— जनाज़े वालो ! न चुपके क़दम बढ़ाये चलो ।
इसीका कूचा है, टुक करते हाय-हाय चलो ॥

दाग़— यह मेरे वास्ते ताक़ीद है, दरबानों पर ।
कि "उसे मैं भी बुलाऊँ तो न आने पाये" ॥

अमीर— जो लाश भेजी थी क़ासिदकी, भेजते ख़त भी ।
रसीद वह तो मेरे ख़तकी थी, जवाब न था ॥

आशिक़-माशूक़

इश्क़[1] करनेवालेको 'आशिक़[2]' और जिस व्यक्तिसे इश्क़ किया जाये उसे 'माशूक़[3]' कहते हैं। कोई स्त्री किसी पुरुषपर आसक्त है तो वह स्त्री आशिक़ और वह पुरुष उसका माशूक़ है। इसी प्रकार कोई पुरुष किसी स्त्रीपर अनुरक्त है तो वह पुरुष आशिक़ और वह स्त्री उसकी माशूक़ः है। आशिक़ी-माशूक़ीमें लैंगिक-प्रतिबन्ध नहीं है। चाहनेवाले स्त्री एवं पुरुष आशिक़ और चाहे जानेवाले स्त्री एवं पुरुष माशूक़ कहलाते हैं।

आशिक़ ग़रज़मन्द होता है। अपने माशूक़का प्यार प्राप्त करनेकी, उससे मिलनेकी, अपना बनानेकी उसे तीव्र लालसा रहती है। अतः वह अपने माशूक़को रिझानेकी, प्रफुल्ल करनेकी सम्भव-असम्भव युक्तियाँ सोचता है, यत्न करता है। माशूक़की मिन्नतें करता है, उसके नाज़ उठाता है, इशारोंपर नाचता है, उसके उपेक्षा भावको नज़रन्दाज़ करता है, आवश्यकता पड़नेपर लोक-लाज त्यागता है, कुटुम्बका मोह छोड़ता है, विरहमें रोता है, एँड़ियाँ रिगड़ता है, यहाँ तक कि अपना सर्वस्व न्योछावर कर देता है, प्राण तक दे देता है।

कुछ ही भाग्यवान् प्रेम-डगरपर चलते हुए अपने चरम लक्षपर पहुँच पाते हैं। अन्यथा अधिकांश मार्गमें फिसल जाते हैं या हिम्मत हारकर बैठ जाते हैं। ऐसे ही असफल आशिक़के लिए मीरने चेतावनी दी थी—

> वसीयत 'मीर' ने मुझको यही की।
> कि सब कुछ होना तू आशिक़ न होना॥

---

१. प्रेम, चाह, मोह, अनुराग, आसक्ति,

२. प्रेमी, आसक्त, अनुरक्त, अनुरागी,

३. प्रेम-पात्र, प्रिय, महबूब, हबीब,

मीरा अपने मोहनको रिझानेके लिए मेवाड़से नंगे पाँव वृन्दावन पहुँची। पार्वतीने शिवको वरण करनेके लिए दुर्द्धर-तपश्चर्य्या की। मान-अपमानकी चिन्ता किये बिना ही दुष्यन्तकी खोजमें शकुन्तला कहाँ-कहाँ न भटकी! अपने ही ज़र ख़रीद ग़ुलाम यूसुफ़की इक नज़रे-इनायत पानेको ज़ुलेख़ा दर-दरकी भिखारिन बन गई। मजनूँने लैलीके लिए जीवनभर रेगिस्तानकी ख़ाक छानी। शीरींको अपना बनानेके लिए फ़रहादने पहाड़ काटते-काटते जान दे दी। सोहनी अपने महिवालके प्रेममें नदीमें डूब गई। न जाने कितने असंख्य आशिक़ोंने अपने माशूक़ोंके लिए कष्ट सहे हैं, प्राण न्योछावर किये हैं और भविष्यमें न जाने कितने उक्त मार्गोंका अनुसरण करते रहेंगे।

हिन्दी-उर्दू-दृष्टिकोण

यूँ तो प्रत्येक आसक्त व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो, या पुरुष, आशिक़ कहला सकता है। लेकिन हिन्दी-कवियोंने मुख्यतः स्त्री-जातिको और उर्दू-शाइरोंने विशेषकर पुरुष वर्गको आशिक़-श्रेणीमें रखा है। इस भिन्न दृष्टिकोणके कारण एक ही देशमें जन्मीं और परवान चढ़ीं कविता और शाइरीमें व्यवधान पड़ गया है, किन्तु दोनों ही दृष्टिकोणोंसे लाभ उठाया और समन्वय किया जासकता है।

स्त्री-जाति स्वभावतः आसक्तिके गुणोंसे परिपूर्ण है। इसी कारण हिन्दी-कवि उसे 'आशिक़' पदपर अभिषिक्त करते आये हैं। स्त्री मन, वचन, कायसे पति-प्रेममें लीन रहती है। पतिका अनुराग पानेके लिए हर सम्भव उपाय करती है। उसे ईश्वर समझकर पूजती है। अपना शरीर ही नहीं, आत्मा भी समर्पित कर देती है। जिसे वरण कर लिया, उसका बड़े-से-बड़े संकटमें साथ नहीं छोड़ती। जीवन पर्यन्त उसकी माला जपती है। पर-पुरुषकी स्वप्नमें भी कामना नहीं करती। पति-विरहमें तारे गिन-गिनकर रात और तिनके चुन-चुनकर दिन गुज़ारती है। पतिके अत्याचारोंको, नैतिक अपराधोंको सहन करती रहती है। अकेलेमें रोती है, सबके सामने हँसती है। और पुरुष ? यदि वह संयमी एवं शीलवान है और उसे मनके अनुकूल पत्नी मिली है, तब तो वह भी अपनी पत्नीके प्यारका आदर करता है और स्वयं भी उससे अनुराग रखता है। अन्यथा उपेक्षा करना, विरह-ज्वालामें जलाना, परकीयासे प्रेम करके उसे सन्ताप देना, बाधा पड़नेपर पीड़ा पहुचांना पुरुषका साधारण-सा कार्य्य है।

स्त्रियाँ स्वभावतः लजालु, शीला, कोमल होती है। उनका हृदय पति या प्रेमीके लिए प्रेमसे ओत-प्रोत होता है। और पुरुषोंमें ये गुण उतनी अधिकता लिये हुए नहीं होते। इसीलिए हिन्दी-कवियोंने स्त्रीको 'आशिक़' और पुरुषको 'माशूक़' की कोटिमें रखकर अपनी अनोखी और परिष्कृत बुद्धिका

परिचय दिया है । इस कल्पनासे हिन्दी-कवितामें इतनी स्वाभाविकता एवं पवित्रता आ गई हैं कि उर्दूके प्रायः सभी अच्छे साहित्यिकों एवं आलोचकोंने मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है । अल्लामा 'नियाज़' फ़तहपुरी तो हिन्दी कवियोंकी इस कल्पनापर इतने मुग्ध हुए कि कुछ दोहे चुनकर 'जज़्बाते-भाषा' शीर्षकसे एक छोटी-सी पुस्तक भी प्रकाशित कर दी । उसीमें आपने लिखा है—

"इसमें कलाम (शक) नहीं कि भाषाकी शाइरी जज़्बाती-असरात (हृदयग्राही भावों और प्रभाव) से मालामाल (परिपूर्ण) है और जिस क़दर तरन्नुम (माधुर्य्य) और मूसीक़ी (संगीत) इस ज़बानमें है, किसी दूसरी ज़बानको मयस्सर (प्राप्त) नहीं, और इसकी वजह यह है कि जैसा आशिक़ इस ज़बानको मिला, वह किसी और ज़बानको नसीब नहीं हुआ । क्योंकि जिन्से-क़वीको हलाक करनेके लिए इससे ज़्यादा सरीहुल असर अम्र कोई नहीं कि जिन्से-लतीफ़की तरफ़से इज़हारे-तअश्शुक़ (शक्तिशाली पुरुषवर्गको मोहित करनेके लिए इससे अधिक शीघ्र प्रभावक कार्य्य कोई नहीं कि कोमल एवं मृदुल ललनाओंकी ओरसे आसक्तिका भाव प्रकट) हो ।"

हिन्दी-कवियोंके विपरीत प्राचीन उर्दू-शाइरोंने आशिक़ीका सेहरा तो पुरुष वर्गके सिर बाँध दिया, किन्तु माशूक़ीका ताज किस वर्गके सिरपर रखा जाय ? कुछ निश्चय न कर सके । १७८० ई० पूर्व शाइरीका माशूक़ स्त्री है या पुरुष यह स्पष्ट नहीं हो पाता था । क्योंकि आशिक़ और माशूक़ दोनोंके लिए——संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सम्बोधन आदि पुल्लिग व्यवहृत होते थे—

साक़िब लखनवी—

लूटने वाले हमारी नींदके ।
किस मज़ेसे रातभर सोया किये ॥

फ़ानी बदायूनी—

नहीं ज़रूर कि मर जायें जाँ निसार तेरे
यही है मौत कि जीना हराम हो जाये

इस तरहके अशआरसे स्पष्ट नहीं होता कि आशिक़ और माशूक़ किस वर्गके हैं। यह शैली उर्दूकी बहुत ख़ूब है। क्योंकि ऐसे अशआरका दोनों ही वर्ग उपयोग कर सकते हैं। लेकिन जब एकवचनमें पुरुष आशिक़की तरफ़से माशूक़के लिए पुल्लिग शब्द आते हैं, तो कानोंमें कुछ खटक-सी होती है—

मीर—

देख लेता है वह पहले चारसू अच्छी तरह।
चुपके-से फिर पूछता है "मीर तू अच्छी तरह" ॥

ग़ालिब—

शबको किसीके ख़्वाबमें आया न हो कहीं।
दुखते हैं आज उस बुते-नाज़ुकबदनके पाँव ॥

परम्परानुगत पुरुष तो आशिक़ और माशूक़के लिए पुल्लिग शब्दोंका प्रयोग करते ही थे, स्त्रियाँ भी शाइरीमें अपनेको पुल्लिग लिखनेको बाध्य थीं।

सुलताना बेगम—

थी वह निगाहे-नाज़ या नावकका तीर था।
मिलते ही आँख रह गया, मैं कहके "हाय दिल" ॥

हिजाब बेगम—

नहीं यह ख़ूब कि सुनते नहीं किसीकी तुम।
यह देखो तो कि मैं कहता हूँ क्या, सुनो तो सही ॥

शाइरीका यह ढंग तो बहुत अच्छा था कि माशूक़का स्पष्ट संकेत न हो, ताकि स्त्री-पुरुष दोनों वर्ग समान रूपसे अशआरका उपयोग कर सकें। मगर अच्छी चीज़में भी बुरे पहलू निकल आते हैं। जिस तरह गुलाबमें काँटे।

शाइरीका आशिक़ पुरुष होता और माशूक़ स्त्री तो भी एक मौलिकता रहती। लेकिन बाज़ पुरुष आशिक़मिज़ाजोंने—छोकरोंको भी 'माशूक़' तसव्वुर करना शुरू कर दिया। पुरुषकी तरफ़से समलिंगीसे इश्क़का इज़हार किया जाये, इस घिनावनी मनोवृत्ति एवं कुरुचिको क्या कहा जाय ?

पुरुषोंका इकतर्फ़ा इश्क़, भद्र महिलाओंपर कुदृष्टि, बदचलन औरतोंसे काम-वासना और छोकरोंसे अप्राकृतिक प्यारका उल्लेख उर्दू-शाइरीको पतनकी ओर लिये जा रहा था कि 'हाली' और 'आज़ाद' ने अपने आन्दोलनसे कायापलट कर दी। परिणाम-स्वरूप आज वह अपने विकसित रूपमें सुशोभित हो रही है।

ग़ज़लमें सबसे पहले 'हसरत' लखनवीने १७७२–१७९७ ई० में स्पष्टत: स्त्रीको माशूक़का दर्जा दिया। तबसे लखनवी शाइरीमें स्त्रियोचित-लिबास, ज़ेवर, पर्दा, कंघी, चोटी आदिका समावेश होने लगा। लेकिन परम्परानुसार क्रिया, विशेषण, सम्बोधन आदि पुल्लिग ही इस्तेमाल होते रहे, और यह रेख़्ती शाइरी उर्दूके लिए कलंक बनकर रह गई।[1]

---

१. विशेष जानकारीके लिए देखें 'शेरो-सुख़न' पांचवां भाग।

महिलाओंकी शाइरी

अताउल्लाह पालवी लिखते हैं—"हिन्दी-शाइरीको दुनियाकी तमाम ज़बानोंकी शाइरीमें महमूदो-मुमताज़ (श्रेष्ठ और उच्च) दर्जा मिलनेकी महज़ वजह यह थी कि वह अपने जज़्बो-असर (भाव और प्रभाव) में सारी दुनियाकी शाइरीसे यगाना और मुनफ़रद् (एकाकी और अद्वितीय) थी। और इसका सबब सिर्फ़ यह था कि इसमें जज़्बाते-मुहब्बत (प्रेमकी भावनाएँ, आसक्ति) औरतकी तरफ़से, औरतकी ज़बानसे अदा (प्रकट) होते थे; और इसमें मुख़ातिब (सम्बोधित) माशूक़ मर्द, बल्कि शौहर (पति) हुआ करता था। जिस वजहसे वह मुहब्बत एक तरफ़ तो फ़ितरी (स्वाभाविक) होती थी और दूसरी जानिब (तरफ़) इकतर्फ़ा होनेके इल्ज़ामसे भी बरी (मुक्त) थी[1]।"

हिन्दी-कवितामें नारी-जातिके भावोंका अत्यन्त सजीव एवं मधुर वर्णन मिलता है, किन्तु वह सब पुरुषों-द्वारा लिखा हुआ है। यदि स्वयं स्त्रियों-द्वारा स्वानुभव एवं हृदयोद्‌गार व्यक्त हुए होते तो वह और अधिक हृदय-स्पर्शी, मृदुल, मार्मिक होते और अस्वाभाविकता एवं कृत्रिमताके दोषसे भी मुक्त होते। लेकिन यह उस युगमें सम्भव न था।

यूँ तो बलवान एवं सामर्थ्यवान होनेके नाते पुरुष वर्ग प्रत्येक क्षेत्रमें आगे बढ़ता रहा, और कोमल, नम्र एवं अशक्त होनेके फलस्वरूप स्त्रियाँ पिछड़ती रहीं, फिर भी मुस्लिम-आक्रमण कालसे पूर्वका युग ग़नीमत था। पर्देके अभिशापसे और घरकी चारदीवारीके बन्दी-जीवनसे मुक्त थीं। हर अच्छे कार्य करनेमें स्वतंत्र थीं और उनका भी अपना निजी व्यक्तित्व था।

---

१. आजकल उर्दू १५ अप्रैल १९४६ पृ० ११।

भारतमें मुस्लिम-आक्रमण-कालके बाद नारीकी स्वतंत्रता समाप्त हो गई। मुसलमान अपने मज़हबी एतक़ादकी वजहसे ख़ुद तो पर्देके सख़्त पाबन्द थे ही, उनकी वजहसे हिन्दुओंको भी पर्देका क़ायल होना पड़ा। मुस्लिम-फौजोंके दिन-रातके आक्रमणों, आततायियों-द्वारा अपहरणों और बादशाहों-द्वारा बलात् लड़कियोंके छीने जानेके भयसे चारदीवारीमें उन्हें बन्द होना पड़ा। धीरे-धीरे नारीकी स्वतंत्रता समाप्त हो गई और वह केवल पिंजरेकी मैना बनकर रह गई।

ऐसी स्थितिमें जब कि उनके बालो-पर क़ैंच कर दिये गये थे, क्या उड़ान भरतीं? जब पढ़ना-लिखना ही निषिद्ध था, तब वे कविता तो क्या कर पातीं, उन्हें तो यह भी पता न था कि उनके सम्बन्धमें कविगण या शुअ़रा कितना सुरुचि एवं कुरुचिपूर्ण लिख रहे हैं। जिस नारी-समाजके रूप, सौन्दर्य, हाव-भाव, विरह-मिलनकी नित नयी अनोखी और विचित्र कल्पनाएँ करनेमें कवि एवं शाइर दिन-रात लीन रहते थे, दरबारोंसे पुरस्कृत होते थे, जनतासे वाह-वाही लूटते थे और ग्रन्थों-पर-ग्रन्थ रचे जा रहे थे। वही नारी-समाज उनके कौशलसे अनभिज्ञ था। शिकारियोंका समूह कस्तूरी-मृगपर लक्ष बाँध रहा था और मृगको अपनी नाभीमें कस्तूरी होनेका आभास तक न था।

प्रकृतिके करिश्मे भी अजीबो-ग़रीब होते हैं। बाज़ दफ़ा असम्भव बातें भी सम्भव हो जाती हैं। समुद्रमें डूबे हुए सोने-जवाहरातके सन्दूक़ लहरोंके थपेड़े खाते हुए किनारे लग जाते हैं। ज़मीन-दोज़ ख़ज़ाने भूकम्पके धक्कोंसे कई बार ऊपर आ गये हैं। यहाँ तक कि दफ़नाये गये मुर्दे क़ब्रोंसे जीवित निकल आये हैं।

किसी भी वर्ग या समाजको चिरकाल तक बन्धनमें नहीं रखा जा सकता। नारी-समाजके गुण भी पृथ्वीसे फूट निकलने वाली बहारकी तरह प्रस्फुटित होते रहे। अभिभावकोंका भय और पण्डित-मौलवियोंके फ़त्वे

विघ्न डालते रहे। फिर भी बादलोंमें घिरे सूर्य-चन्द्रकी तरह किरणें झलक दिखाती ही रहीं। स्त्रियाँ भी लुके-छिपे कविता या शाइरी करती रहीं। उन्हें प्रोत्साहन मिलना तो दर किनार, अनुत्साहित ही किया जाता रहा। उचित निर्देशन और प्रचार न मिलनेके कारण न वे ख्याति पा सकीं और न पुरुष-वर्ग जैसा शाइराना कमाल दिखा सकीं। क़ीमती जवाहर-पारे भी ख़राद-तराशके अभावमें मस्तक और गलेकी ज़ीनत बननेके बजाय मख़मली बक्सोंमें शोभायमान होते रहे।

ख़ुदाए-सुख़न 'मीर' ने शाइरोंका तज़किरा लिखा, लेकिन एक भी शाइराका उल्लेख करना उचित नहीं समझा। हालाँ कि स्वयं उनकी सुपुत्री 'बेगम' उपनामसे शेर कहती थीं और अच्छा कहती थीं। सौदा, यक़ीन, नसीर आदि उस्तादोंकी भी शिष्याएँ थीं। मलिकाओं, बेगमों, शहज़ादियों, शरीफ़ बहू-बेटियों, दाश्ताओं, लौण्डियों और वेश्याओंमें भी शाइराएँ हुई हैं, किन्तु तज़किरोंमें उनका उचित उल्लेख न होनेसे न तो उनको ख्याति ही मिल पाई और न सर्वसाधारणमें पुरुषोंके समान उनकी शाइरी आपाई।

लेकिन कस्तूरीकी गन्धको कबतक पोशीदा रखा जा सकता था, वह शनैः-शनैः फैलने लगी। नवाब शेफ़्ताने १८३० ई० के लगभग शाइरोंका तज़किरा लिखा तो उसमें शाइरातका भी ज़िक्र किया।

फिर तो उनके बाद होनेवाले तज़किरे नवीसोंने भी इस रिवाजको आगे बढ़ाया। इन तज़किरोंकी बदौलत सैकड़ों शाइरातके नाम तो सामने आगये, किन्तु दो-चार पंक्तियोंके परिचय और बतौर नमूना दो-चार अशआरके देखनेसे उनके व्यक्तित्व और शाइराना मर्त्तबेका सही अन्दाज़ नहीं होता। बल्कि ग़लतफ़हमी ज़्यादा बढ़ती है। शाइरीमें देग़के एक चावल परखनेवाला नियम नहीं चल सकता। इन महान् शाइरोंका केवल निम्नलिखित एक-एक शेर यदि प्रकाशमें आया होता तो कदापि उनके सम्बन्धमें ये धारणाएँ न बन पातीं जो उनके समूचे कलामको देखकर बनी हैं—

ग़ालिब—

धौल-धप्पा उस सरापा नाज़का शेवा नहीं।
हम ही कर बैठे थे 'ग़ालिब' पेश दस्ती एक दिन॥

मोमिन—

आये ग़ज़ाल-चश्म सदा मेरे दाममें।
सैय्याद ही रहा, मैं गिरफ़्तार कम हुआ॥

इक़बाल—

वह प्यारी-प्यारी सूरत, वोह कामनी-सी मूरत।
आबाद जिसके दमसे था मेरा आशियाना॥

हर्ष है कि अन्य क्षेत्रोंके समान साहित्यिक क्षेत्रमें भी महिला-समाज अग्रसर हो रहा है। हिन्दी भाषा-भाषी महिलाओंके समान उर्दू-दाँ मस्तूरात भी—मज़ामीन, तन्क़ीद, स्कैच, नॉविल, अफ़साने, ड्रामे, रिपोर्ताज़के अलावा शाइरीमें भी अच्छो-ख़ासी तरक़्क़ी कर रही हैं। ग़ज़ल, नज़्म, रुबाई, क़िते, मर्सिये वग़ैरह सभीमें तबाआज़माई कर रही हैं।

अब तो औरतोंके मुशाअ़रोंका भी बहुत धूम-धामसे एहतिमाम किया जाता है। रेडियो-स्टेशनोंसे ये मुशाअ़रे रिले भी होते हैं और ख़ुद रेडियो स्टेशनोंसे भी ऐसे मुशाअ़रोंके प्रोग्राम चलते रहते हैं। मर्दोंके मुशाअ़रोंमें भी शाइरातको पढ़नेके लिए बहुत ऐहतिरामके साथ मदऊ (निमंत्रित) किया जाता है। लेकिन एक वह वक़्त भी था, जब १८ फ़रवरी १९३९ ई० को लखनऊमें मुहतरिमा कनीज़ फ़ातमा 'हया' ने मस्तूरातका मुशाअ़रा किया तो उसकी अच्छी ख़ासी मुख़ालिफ़त हुई और उस मुख़ालिफ़तमें औरतें ही सबसे ज़्यादा बढ़-चढ़कर उसी तरह पेश-पेश थीं, जिस तरह अमरीकाके ग़ुलाम, ग़ुलाम-मुक्ति-आन्दोलनकी मुख़ालिफ़तमें थे।

प्रस्तुत पुस्तकमें १९४० से १९६० ई० तकका कलाम चयन किया गया है, ताकि शाइरातकी उन्नतिशील शाइरीकी प्रगतिका वास्तविक ज्ञान हो

सके। वर्त्तमानकालीन शाइरातने काफ़ी उन्नति की है। उनके भाव कहीं-कहीं उर्दूके नामवर शाइरोंके रंगमें डूबे नज़र आते हैं। वह दिन दूर नहीं जब आलोचकोंको लिखना पड़ेगा कि अमुक शाइरका कलाम अमुक शाइरासे प्रभावित है। यहाँ हम तुलनात्मक चन्द शेर बिना किसी टिप्पणीके दे रहे हैं—

ग़ालिब—

क़ैदे-हयातो-बन्दे-ग़म अस्लमें दोनों एक हैं
मौतसे पहले आदमी ग़मसे निजात पाये क्यों ?

ताहिरा शबनम—

क़ैदे-हयातमें तू करता है फ़िक्रे-राहत
दीवाने हँस पड़ेंगे सुनकर ख़याल तेरा

ग़ालिब—

देखना क़िस्मत कि आप अपने पै रश्क आ जाये है
मैं उसे देखूँ भला कब मुझसे देखा जाय है

बेगम अख़्तर—

आप अपने पै रश्क आता है
कि तमन्नाए-यार करते हैं

ग़ालिब—

क़तरा अपना भी हक़ीक़तमें है दरिया लेकिन
हमको तक़लीदे-तुनक - ज़र्फ़िए-मंसूर नहीं

ज़रीफ़ः—

मंज़ूर नहीं मुझको तुनक ज़र्फ़िए-मंसूर
दुनिया पै अयाँ हाले-दिले-ज़ार न करते

ग़ालिब—

मुद्दत हुई है यारको मेहमाँ किये हुए
जोशे-क़दहसे बज़्मे-चिराग़ाँ किये हुए

अदा बदायूँनी—

हर-एक हर्फ़े-आरज़ूको दास्ताँ किये हुए
ज़माना हो गया है, उनको मेहमाँ किये हुए

ग़ालिब—

या रब ! ज़माना मुझको मिटाता है किसलिए
लोहे-जहाँ पै हर्फ़े-मुक़र्रर नहीं हूँ मैं

ख़ालिद: जबलपुरी—

ज़िन्दगी मेरी कहीं हर्फ़े-मुक़र्रर तो नहीं ?
बर्क़ क्यों ढूँढ़ती फिरती है नशेमन मेरा ?

मीर—

पास नामूसे-इश्क़ था वर्ना
कितने आँसू पलकतक आये थे ?

अदा बदायूनी—

गौहरे-आबदार यह नौके-मिज़ह पै ख़ूब है
ख़ाकमें मिल गया तो फिर अश्ककी आबरू कहाँ ?

इक़बाल— हया नहीं है ज़मानेकी आँखमें बाक़ी
ख़ुदा करे कि जवानी तेरी रहे बेदाग़

अदा बदायूनी—

सबक़ ले, गौहरे-ताबाँसे तेरी मासूमी
जहाने-हिर्सो-हवामें भी पाकबाज़ रहे

इक़बाल—

एक बुलबुल है कि है महवे-तरन्नुम अबतक
इसके सीनेमें है नग़मोंका तलातुम अबतक

जहाँ 'बानो'—

एक फ़क़त बुलबुल नवासंजे-फ़ुग़ाँ महफ़िलमें है
और इक है जान बरपा इस दिले-बिस्मिलमें है

इक़बाल—

जिनको आता नहीं, दुनियामें कोई फ़न, तुम हो
नहीं जिस क़ौमको परवाए-नशेमन तुम हो

तैमूरजहाँ हिजाब—

अहदे-तैमूरका इक ख़्वाबे-जवानी तुम हो
सफ़ए-दहरकी गुमगश्ता कहानी तुम हो
जौरे-सैयादकी इक ज़िन्दा निशानी तुम हो
सारी दुनियाके लिए सोज़े-निहानी तुम हो

इक़बाल—

फ़र्द क़ायम रब्ते-मिल्लतसे है, तनहा कुछ नहीं
मौज है दरियामें और बेरूने-दरिया कुछ नहीं

तैमूरजहाँ हिजाब—

क़तरे मिल जाएँ जो आपसमें तो दरिया होगा
क़ौमके दर्दका इस तरह मदावा होगा

ग़ालिब—

हुस्न और उसपै हुस्ने-ज़न रह गई बुलहविसकी शर्म
अपने एतमाद हैं, ग़ैरको आज़माएँ क्यों ?

हया मेरठी—

मुझे जब आप है अपनेसे एतबारे-वफ़ा
तू ही बता कि तेरा एतबार क्यों न करूँ ?

इक़बाल—

उठ कि ज़ुल्मत हुई पैदा उफ़क़े-ख़ावर पर
बज़्ममें शुअ्‌ला-नवाईसे उजाला कर दें

हया लखनवी—

उठें फिर फ़स्ले-गुलमें आर्ज़ूओंको जवाँ कर दें
चलें फिर बुलबुलोंको आश्नाए-गुल-सिताँ कर दें

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़—

आह ! मैं और तेरी चाह नहीं !!
इस तसन्नोहसे थक गया हूँ मैं

हया लखनवी—

तुझे चाहता है दिले-हज़ीं
करूँ लाख मुँहसे नहीं-नहीं

अमीर मीनाई—

वोह, और वादा वस्लका क़ासिद ! नहीं-नहीं
सच-सच बता यह लफ़्ज़ उन्हीं की ज़बाँ के हैं

ख़ालिद: जबलपुरी—

वोह और वादा वस्लका क़ासिद ग़लत-ग़लत
क्या बात कह रहा है कि जिसका गुमाँ नहीं

शाद अज़ीमाबादी—

लहदमें क्यों न जाऊँ मुँह छुपाये
भरी महफ़िलसे उठवाया गया हूँ

ख़ालिद: जबलपुरी—

भरी बज़्मसे मैं उठाया गया हूँ
कहाँ फिर कहाँसे मैं लाया गया हूँ

इक़बाल—

नक़्श तौहीदका हर दिल पै बिठाया हमने
ज़ेरे-ख़ंजर भी यह पैग़ाम सुनाया हमने

राज़ मुज़फ़्फ़रनगरी—

हम तो वे थे कि दो आलमको हिला देते थे
नामपर तेरे रगे-जाँको कटा देते थे

जोश मलीहाबादी—

ले रहा है करवटें, आरिज़में यूँ रंगे-शबाब
जैसे तूफ़ानी समन्दरमें ज़ियाए-माहताब

ज़हरा बलियावी—

आँख शरमीली, नज़र नीची, फ़िदा जिसपर हिजाब
ले रहा है करवटें सोया हुआ दिलमें शबाब

हाली—

जो दीं कि बड़ी शानसे निकला था वतनसे
परदेसमें अब आके ग़रीबुल ग़ुरबा है

ज़ेब उस्मानिया—

इस दीनके मानी हैं, अब ख़ारो-ख़ज़फ़से कम
महरो-महो-अंजुम थीं जिस दीनकी तफ़्सीरें

इक़बाल—

नाला है बुलबुले-शोरीदः तेरा ख़ाम अभी
अपने सीनेमें उसे और ज़रा थाम अभी

ज़ेब उस्मानिया—

गर तेरा नाला मुहताजे-नै है
दिल ही में अपने उसको अभी थाम

इक़बाल—

तेरे शीशेमें मै बाक़ी नहीं है ?
बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है ?
समन्दरसे मिले प्यासेको शबनम !
बख़ीली है यह रज़्ज़ाक़ी नहीं है !!

ज़ेब उस्मानिया—

क़तरे-क़तरेको फिरें तेरे सुबूकश लाचार !
है यह किसलिए ग़ैरतका मुक़ाम ऐ साक़ी !
मक्रुमतसे तेरी हो जाँय न मैकश बद्दिल,
संगदिल है तेरी महफ़िलका निज़ाम ऐ साक़ी !

इक़बाल—

ग़ुबारे-रहगुज़र हैं कीमिया पर नाज़ था जिनको
जबीनें ख़ाकपर रखते थे, जो अक्सीर-गर निकले

ज़ेब उस्मानिया—

ख़िरदके मसरफ़े-आलासे कितने बेख़बर निकले
कि बाज़ारे-जहाँसे अहले-मग़रिब ख़्वारतर निकले

इक़बाल—

उक़ाबी शानसे झपटे थे जो वे बालो-पर निकले
सितारे शामके ख़ूने-शफ़क़में डूबकर निकले

ज़ेब उस्मानिया—

फ़लककी तुर्फ़ाकारी है कि आज ऐ 'ज़ेब' दुनियामें
जो थे सैयाद वोह ख़ुद, ताइरे-बे बालो-पर निकले

इक़बाल—

तेरा इमाम बे हज़ूर, तेरी नमाज़ बेसुरूर
ऐसी नमाज़से गुज़र, ऐसे इमामसे गुज़र

ज़ेब उस्मानिया—

ज़ाहिदे-कमनिहादने रस्म समझ लिया तो क्या ?
क़स्दे-क़याम और है, रस्मे-क़यामसे गुज़र

मोमिन—

क्या मरते दमके लुत्फ़में पिन्हाँ सितम न था ?
वे देखते थे साँसको और मुझमें दम न था

सार: हैदराबादी—

की दमे-नज़अ, उसने पुरसिशे-हाल
लब पै जुम्बिश हुई, बता न सके

फ़ानी—

तू कहाँ थी ऐ अजल ! ऐ नामुरादोंकी मुराद
मरने वाले राह तेरी उम्रभर देखा किये

शमीम—

तेरी ही आस पै जीती है, अब 'शमीमे'-हज़ीं
करेगी रहम तू ऐ मर्गे-नागहाँ कब तक ?

जोश मलीहाबादी—

ग़ल्ताँ है सुबूमें अक्से-अंजुम साक़ी !
दरियामें है चाँदसे तलातुम साक़ी !
इस वक़्त नज़र मिलाके दमभरके लिए
मैं तेरे निसार, एक तबस्सुम साक़ी !

शमीम मलीहाबादी—

कोयलकी सदाएँ आती हों, जब रह-रहके गुलज़ारोंसे
इक नग़मए-शीरीं फूट पड़े, जब दिलके नाज़ुक तारोंसे
उस वक़्त हटाके पर्दोंको तू काश चमनमें दर आये
हस्तीका मिरी ज़र्रा-ज़र्रा तसवीरे-मसर्रत बन जाये

इक़बाल—

नग़मए-नौ बहार अगर मेरे नसीबमें न हो
इस दिले-नीम सोज़को, तारिके-बहार कर

शमीम मलीहाबादी—

मेरे चमनके नसीबोंमें गर बहार नहीं
तो उसको हद्‌यए-बर्क़ो-शरार ही करदे

असग़र गोण्डवी—

चमनमें छेड़ती है किस मज़ेसे ग़ुंच-ओ-गुलको
मगर मौजे-सबाकी पाकदामानी नहीं जाती

शमीम मलीहाबादी—

बहारें आईं भी और हो गईं रुख़सत मगर कबतक
गुलिस्ताँमें गुलोंकी चाक़दामानी नहीं जाती

ग़ालिब—

इशरते-क़तरा है दरियामें फ़ना हो जाना
दर्दका हदसे गुज़रना है दवा हो जाना

लैली बेगम—

मुहब्बतका एजाज़ मैं क्या कहूँ ?
बढ़ा दर्द बढ़कर दवा हो गया

अन्दलीब शादानी—

कुछ ऐसी ही फ़ज़ा, ऐसी ही शब, ऐसा ही मंज़र था
न जाने क्या मुझे भा गया तारोंकी झिलमिलमें

नज्मः तसद्दुक़—

तारोंकी मस्त छाँवमें अब भी कभी-कभी
करती हूँ याद भूली हुई दास्ताँको मैं

असग़र गोण्डवी—

क्या मेरे हाल पै सचमुच उन्हें ग़म था क़ासिद !
तूने देखा था सितारा सरे-मिज़गाँ कोई ?

नज्मः तसद्दुक़—

उनकी आँखें देरतक, रहती हैं रश्के-कहकशाँ
जब कभी रातोंको 'नज्मः' याद आ जाती हूँ मैं

अन्दलीब शादानी—

चाँदनी, मौसमे-गुल, सहने-चमन, ख़िलवते-नाज़
ख़्वाब देखा था कि कुछ याद है, कुछ याद नहीं

नज्मः तसद्दुक़—

वोह शबे-ताब जल्वे, वह तारोंकी छाँव
कभी मैंने ऐसा भी देखा है, ख़्वाब

इक़बाल—
खुदा अगर दिले-फ़ितरत-शनास दे तुझको
सकूते-लालाओ-गुलसे कलाम पैदा कर

नज्म: तसद्दुक़—
तेरी नज़रसे चमन-ज़ार सरमदी बन जाय
कली-कलीकी ज़बाँसे पयाम पैदा कर

सौदा—
कैफ़ियते-चश्म उसकी मुझे याद है 'सौदा'
साग़रको मेरे हाथसे लेना कि चला मैं

नज्म: तसद्दुक़—
जाम गिर पड़ता है साक़ी ! थरथरा जाते हैं हाथ
तेरी आँखें देखकर नश्शामें आ जाता हूँ मैं,

मोमिन—
तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता

नज्म: तसद्दुक़—
जब मेरे पास वे नहीं होते
उनसे होती हैं राज़की बातें

मोमिन—
उस ग़ैरते-नाहीदकी हर तान पै दीपक
शोला-सा चमक जाये है, आवाज़ तो देखो

नज्म: तसद्दुक़—
जिनपै मूसीक़ियोंको वज्द आये
हाय ! उस मस्ते-नाज़की बातें

अन्दलीब शादानी—

मैं आह करके अपने ख़यालोंमें खो गया
कुछ ज़िक्र था बहारो-शबे-माहताबका

नज्मः तसद्दुक—

शबे-हिज्रमें तुम बहुत याद आये
भरी चाँदनी-थी सुहाना समाँ था

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़—

मचल रहा है, रगे-ज़िन्दगीमें ख़ूने-बहार
उलझ रहे हैं, पुराने ग़मोंसे रूहके तार

नज्मः तसद्दुक़—

फिर फ़ित्ने जवानीके, मचलते हैं रगोंमें
फिर दिलका हर-इक गोशः है सदहश्र बदामाँ

ग़ालिब—

फिर वजहे-एहतियातसे रुकने लगा है दम
मुद्दत हुई है चाके-गरीबाँ किये हुए

नज़्मः तसद्दुक़—

जी खोलकर कुछ आज तो रोने दे हमनशीं !
मुद्दत हुई है दर्दका दरमाँ किये हुए

फ़िराक़ गोरखपुरी—

यह तीरगी, यह अबतरी, यह निकहतें, यह मस्तियाँ
कि खुल पड़ी हो जिस तरह वोह ज़ुल्फ़े-अम्बरीं कहीं

नज्म दसद्दुक़—

मिलते हैं दोनों वक्त कि आता है कोई याद
आरिज़ पै काकुलोंको परीशाँ किये हुए

ग़ालिब—

जी ढूँढ़ता है फिर वही फ़ुर्सतके रात-दिन
बैठे रहें तसव्वुरे-जानाँ किये हुए

नज्म तसद्दुक़—

ज़ुल्मत नसीब, गोशए-ख़िल्वतमें शामे-ग़म
बैठे हैं दाग़े-दिलको फ़रोज़ाँ किये हुए

फ़ानी—

दुश्मने-जाँ थे तो जाने-मुद्दआ क्यों हो गये ?
तुम किसीकी ज़िन्दगीका आसरा क्यों हो गये ?

नज्मः तसद्दुक़—

ख़ून बनकर मेरी आँखोंसे टपकने वाले !
नूर बनकर मेरी आँखोंमें समाया क्यों था ?

मजाज़—

सबका तो मदावा कर डाला, अपना ही मदावा कर न सके
सबके तो गरेबाँ सी डाले, अपना ही गरेबाँ भूल गये

नूर—

औरोंके चाके-क़िस्मत हमने रफ़ू किये हैं
और सी सके न अपना, अफ़सोस चाके-गरेबाँ

ग़ालिब—

बार-हा देखी हैं उनकी रंजिशें
पर कुछ अबके सरगरानी और है

वफ़ा—

यूँ वफ़ासे हुए नाराज़ तुम अक्सर लेकिन
जैसी अब है तुम्हें नफ़रत कभी ऐसी तो न थी

[८ मार्च १९६१ ई०]

सहायक-ग्रन्थ-सूची

१. ख़वातीने-दकनकी उर्दू ख़िदमात [१९४० ई०] नसीरुद्दीन हाशमी

२. मैं साज ढूँढती रही [११४७ ई०] अदा जाफ़िरी बदायूनी

३. शाइराते-उर्दू [१९४४ ई०] मुहम्मद जमील बरेलवी

४. बहतरीन अदब [१९४८-१९५४ ई०]

५. आजकल उर्दू दिल्ली [१९४४ से १९६० ई० तक]

६. निगार लखनऊ [१९५१ से १९५३ ई० तक]

७. नक़ूश लाहोर [१९५४ ई०]

८. शमा दिल्ली [१९५५ से १९६० ई० तक]

९. शाइर बम्बई [१९५७ से १९५८ ई० तक]

१०. बीसवीं सदी दिल्ली [१९५९ से १९६० ई० तक]

११. तहरीक दिल्ली [१९५४, १९६० ई०]

१२. आईना दिल्ली [१९५५ ई०]

१३. एशिया बम्बई [१९४९ ई०]

१४. शाने-हिन्द दिल्ली [१९६० ई०]

१५. बिहारी-रत्नाकर [१९२६ ई०] जगन्नाथदास रत्नाकर

१६. मतिराम-ग्रन्थावलि [१९२५ ई०] कृष्णबिहारी मिश्र

१७. रहिमन-विलास [१९१५ ई०] ब्रजरत्नदास

१८. शेरो-शाइरी [१९५० ई०] गोयलीय

१९. शेरो-सुख़न [पाँच भाग] गोयलीय

भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशित

लेखककी अन्य रचनाएँ

१.	शेर-ओ-शाइरी	८)
२.	शेर-ओ-सुख़न [भाग १]	८)
३.	शेर-ओ-सुख़न [भाग २]	३)
४.	शेर-ओ-सुख़न [भाग ३]	३)
५.	शेर-ओ-सुख़न [भाग ४]	३)
६.	शेर-ओ-सुख़न [भाग ५]	३)
७.	शाइरीके नये दौर [भाग १]	३)
८.	शाइरीके नये दौर [भाग २]	३)
९.	शाइरीके नये दौर [भाग ३]	३)
१०.	शाइरीके नये दौर [भाग ४]	३)
११.	शाइरीके नये मोड़ [भाग १]	३)
१२.	शाइरीके नये मोड़ [भाग २]	३)